वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT
1994-95

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
NEW DELHI

विषय-सूची

संकल्पना 3
न्यास का निर्माण 4
संगठन 4
संक्षिप्त विवरण तथा झलकियाँ 6

कला निधि

कार्यक्रम क : संदर्भ पुस्तकालय 11
कार्यक्रम ख : राष्ट्रीय सूचना प्रणाली तथा डेटा बैंक 16
कार्यक्रम ग : सांस्कृतिक अभिलेखागार 19
कार्यक्रम घ : क्षेत्र अध्ययन 23

कला कोश

कार्यक्रम क : कलातत्त्वकोश 26
कार्यक्रम ख : कलामूलशास्त्र 27
कार्यक्रम ग : कलासमालोचन 31
कार्यक्रम घ : कलाविश्वकोश और कलाओं का इतिहास 33

जनपद सम्पदा

कार्यक्रम क : मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह 36
कार्यक्रम ख : बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां तथा गतिविधियां 36
कार्यक्रम ग : जीवन शैली अध्ययन 39
कार्यक्रम घ : बाल जगत 42

कला दर्शन

कार्यक्रम क : संग्रह 43
कार्यक्रम ख : संगोष्ठियां और प्रदर्शनियां 43
कार्यक्रम ग : स्मारक व्याख्यान 44
कार्यक्रम घ : वार्ताएं एवं व्याख्यान 44

सूत्रधार

क	:	कार्मिक	45
ख	:	आपूर्ति एवं सेवाएं	45
ग	:	शाखा कार्यालय	46
घ	:	वित्त एवं लेखे	46
ङ	:	आवास	46
च	:	शोधवृत्ति योजना	47
छ	:	राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ संबंध स्थापन	47
ज	:	अंतराष्ट्रीय संवाद	49

भवन परियोजना

52

अनुबन्ध

1.	:	इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य	54
2.	:	इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्य	56
3.	:	अधिकारियों की सूची	57
4.	:	इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में पारमर्थ दाताओं की सूची	59
5.	:	वरिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं/कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं की सूची	60
6.	:	वर्ष 1994-95 के दौरान हुई प्रदर्शनियां	61
7.	:	वर्ष 1994-95 के दौरान हुई संगोष्ठियां/कार्यशालाएं	62
8.	:	मार्च, 1995 तक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशनों की सूची.	63
9.	:	फिल्म/वीडियो प्रलेखनों की सूची	88
10.	:	अप्रैल, 1994 से 31 मार्च 1995 तक हुई घटनाओं की तालिका	90

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

संकल्पना

श्रीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति में स्थापित इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कल्पना एक ऐसे संस्थान के रूप में की गई है जिसमें सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक अलग अस्तित्व रखते हुए भी पारस्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति में, प्रकृति, सामाजिक संरचना और ब्रह्माण्ड व्यवस्था के साथ पारस्परिक रूप से सम्बद्ध हो।

कलाओं के विषय में यह दृष्टिकोण जो मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखंड रूप से जुड़ा है, और उसके लिए आवश्यक भी है, श्रीमती गांधी की इस मान्यता पर आधारित है कि कलाओं की भूमिका मनुष्य के लिए व्यक्तिगत रूप में तथा एक सामाजिक प्राणी के रूप में उसके अंतरंग गुणों को विकसित करने के लिए आवश्यक है। यह दृष्टिकोण सम्पूर्ण विश्व को एक समझने की (विश्वबन्धुत्व) एवं विश्व की अखंडता की भावना (वसुधैव कुटुम्बकम्) में समाविष्ट है जो भारतीय परम्परा में सर्वत्र मुखरित है और जिस पर महात्मा गांधी तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे आधुनिक भारतीय मनीषियों ने भी बल दिया है।

यहां कलाओं के क्षेत्र को बहुत व्यापक रूप में देखा गया है, जिसमें शामिल हैं : लिखित तथा मौखिक रूप में उपलब्ध सर्जनात्मक एवं समीक्षात्मक साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और लेखाचित्रकला से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म जैसी दृश्य कलाएं, अपने अधिक से अधिक व्यापक अर्थों में संगीत, नृत्य, नाट्य जैसी प्रदर्शनात्मक कलाएं और मेलों, उत्सवों तथा जीवन शैली में उपलब्ध वह सब कुछ जो किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो। प्रारम्भ में केन्द्र अपना ध्यान भारत पर ही केन्द्रित करेगा, लेकिन आगे चलकर वह अपना क्षेत्र अन्य सभ्यताओं तथा संस्कृतियों तक बढ़ा लेगा। अनुसंधान, प्रकाशन, प्रशिक्षण, सर्जनात्मक कार्यकलाप तथा प्रदर्शन के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से केन्द्र कलाओं को प्राकृतिक तथा मानवीय परिवेश के संदर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेगा। अपने समस्त कार्य में केन्द्र का आधारभूत दृष्टिकोण बहुविषयक तथा अन्तर्विषयक दोनों प्रकार का होगा। केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

1. कलाओं, विशेषकर लिखित, मौखिक और दृश्य स्रोत सामग्री के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना।
2. कला, मानविकी और सामान्य सांस्कृतिक धरोहर से सम्बन्धित संदर्भ ग्रंथों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों के अनुसंधान और प्रकाशन के कार्यक्रम हाथ में लेना।
3. सुव्यवस्थित रूप से वैज्ञानिक अध्ययनों और सजीव प्रदर्शनों का आयोजन करने के लिए क्रोड संग्रह के साथ-साथ जनजातीय और लोक कला प्रभाग स्थापित करना।
4. प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के माध्यम से विविध परम्परागत तथा समकालीन कलाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सर्जनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद, विचार-विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराना।
5. दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना, ताकि बौद्धिक समझबूझ के उस अंतर को दूर किया जा सके जो अक्सर एक तरफ आधुनिक विज्ञानों और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति, जिसमें परम्परागत कला-कौशल तथा ज्ञान शामिल हैं, के बीच उत्पन्न हो जाता है।

6. भारतीय प्रकृति के अनुरूप अनुसंधान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन के लिए मॉडल तैयार करना।
7. विविध सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल ताने-बाने के रचनात्मक तथा गतिशील तत्वों को स्पष्ट करना।
8. भारत और विश्व के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता को बढ़ावा देना।
9. कला और संस्कृति के अन्य राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ संचार साधनों का विकास करना और कला, मानविकी और सांस्कृतिक धरोहर के संबंध में अनुसंधान कार्य करने और उनको मान्यता प्रदान करने के लिए भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों और अन्य शिक्षा संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करना।

विशेष कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं के माध्यम से कलाओं में अन्योन्याश्रय संबंध, विभिन्न क्षेत्रों के बीच परस्पर प्रभाव तथा जनजातीय, ग्रामीण और शहरी तथा लिखित एवं मौखिक परम्पराओं के बीच पारस्परिक संबंधों का पता लगाया जाएगा और उनको अभिलिखित तथा प्रस्तुत किया जाएगा।

न्यास का निर्माण

भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, कला विभाग के संकल्प संख्या एफ.16-7/86-कला, दिनांक 19 मार्च, 1987 के अनुसरण में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास को नई दिल्ली में दिनांक 24 मार्च, 1987 को विधिवत् रूप से गठित व पंजीकृत किया गया था।

प्रारम्भ में एक 7-सदस्यीय न्यास स्थापित किया गया था। बाद में भारत सरकार की अधिसूचनाओं के द्वारा न्यासी मंडल में नए सदस्य जोड़े गए।

वर्ष 1994-95 के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के न्यासियों की सूची अनुबन्ध-1 पर दी गई है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की जो कार्यकारिणी समिति भारत सरकार द्वारा गठित की गई थी उसके सदस्यों की सूची अनुबंध-2 पर दी गई है।

संगठन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संकल्पनात्मक योजना में वर्णित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए और अपने प्रमुख लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए केन्द्र अपने पांच प्रभागों के माध्यम से कार्य करता है, जो संरचनात्मक दृष्टि से स्वायत्त होते हुए भी कार्यक्रमों के आयोजनों के मामले में परस्पर जुड़े हुए हैं।

इन्दिरा गांधी कलानिधि : इसमें (क) मानविकी विषयों तथा कलाओं में अनुसंधान के लिए प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करने के लिए बहुविध संग्रहों से सुसज्जित सांस्कृतिक संदर्भ पुस्तकालय है, जिसे सम्बल प्रदान करने के लिए (ख) कलाओं, मानविकी विषयों तथा सांस्कृतिक परम्पराओं (धरोहर) पर एक कम्प्यूटरीकृत राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डेटा बैंक और (ग) सांस्कृतिक अभिलेखागार तथा कलाकारों/विद्वानों के बहुविध व्यक्तिगत संग्रह और क्षेत्र अध्ययन की व्यवस्था है।

इन्दिरा गांधी कलाकोश : यह प्रभाग आधारभूत अनुसंधान कार्य करता है। यह ऐसे दीर्घकालिक कार्यक्रम आरम्भ करता है, जिनमें (क) कला और शिल्प की आधारभूत संकल्पनाओं का एक कोश तथा बुनियादी तकनीकी शब्दों का संग्रह और अन्तर्विषयक शब्दावलियां, (ख) भारतीय कलाओं के आधारभूत ग्रंथों की श्रृंखला (कलामूलशास्त्र), (ग) भारतीय कलाओं के विषय में समीक्षात्मक कृतियों के पुनर्मुद्रण की श्रृंखला (कलासमालोचन) और (घ) भारतीय कलाओं का एक बहुखंडीय विश्वकोश सम्मिलित हैं।

इन्दिरा गांधी जनपद सम्पदा : यह प्रभाग (क) लोक तथा जनजातीय कलाओं और शिल्पों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सामग्री का संग्रह तथा प्रलेखन करता है, (ख) बहुविध संचार माध्यमों के जरिए प्रस्तुतियां करता है, (ग) जनजातीय समुदायों की बहुविषयक जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए व्यवस्था करता है जिससे कि समग्र भारतीय सांस्कृतिक दृश्य प्रपंच और पर्यावरणात्मक, पारिस्थितिक, कृषि विषयक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक आयामों के ताने-बाने के वैकल्पिक मॉडल तैयार किए जा सकें। इनके अलावा, (घ) उसने एक बाल रंगशाला स्थापित की है और (ङ) एक संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित करेगा।

इन्दिरा गांधी कलादर्शन : यह प्रभाग कला एवं संस्कृति के एकीकृत विषयों तथा संकल्पनाओं पर अन्तर्विषयात्मक संगोष्ठियों एवं प्रदर्शनियों के लिए एक मंच की व्यवस्था करता है। इसके भवनों में तीन रंगशालाएं (थियेटर) और बड़ी दीर्घाएं होंगी।

इन्दिरा गांधी सूत्रधार : यह अन्य सभी प्रभागों को प्रशासनिक, प्रबंधकीय और संगठनात्मक सहायता तथा सेवाएं प्रदान करता है।

संस्था के अकादमिक प्रभाग अर्थात् कलानिधि तथा कलाकोश अपना ध्यान प्रमुख रूप से बहुविध प्राथमिक एवं गौण सामग्री के संग्रह पर लगाते हैं, आधारभूत संकल्पनाओं की खोज करते हैं, रूप के सिद्धांतों का पता लगाते हैं और पारिभाषिक शब्दावलियों को स्पष्ट करते हैं। वे यह कार्य सिद्धांत और पाठ (शास्त्र) और बौद्धिक चर्चा (विमर्श) और निर्वचन (मार्ग) के स्तर पर करते हैं। जनपद सम्पदा और कलादर्शन प्रभाग लोक, देश तथा जन के स्तर पर अभिव्यक्ति, प्रक्रिया, जीवन-कार्य तथा जीवन-शैली और मौखिक परम्पराओं पर ध्यान देते हैं। चारों प्रभागों के कार्यक्रम सम्मिलित रूप से कलाओं को उनके जीवन तथा अन्य विषय संबंधी मूल संदर्भों में प्रस्तुत करते हैं।

प्रत्येक प्रभाग में अनुसंधान करने, कार्यक्रम बनाने और अंतिम निष्कर्ष निकालने की रीतियां एक जैसी हैं। हर प्रभाग का कार्य दूसरे प्रभागों के कार्यक्रमों का पूरक होता है।

वार्षिक रिपोर्ट

अप्रैल, 1994 से मार्च, 1995 तक

संक्षिप्त विवरण तथा झलकियां

प्रस्तावना : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र वर्ष 1994-95 के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला न्यास की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी तथा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति के प्रधान श्री पी.वी. नरसिम्हा राव के मार्गदर्शन में और केन्द्र की अकादमिक निदेशक/प्राचार्या डॉ. कपिला वात्स्यायन के पर्यवेक्षण में, अपने सुपरिभाषित उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में बहुत तेजी से प्रगति करता रहा। इस लिए वह कलाओं के एक प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में सेवाएं प्रदान करता रहा। कला तथा संस्कृति के क्षेत्र में अध्ययन तथा अनुसंधान, जैसे पारिभाषिक शब्दावलियों के निर्माण, रिपोर्टों तथा ग्रंथों, संगोष्ठी पत्रों आदि के प्रकाशन के समेकित कार्यक्रम सम्पन्न करता रहा और मंचीय प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहु-माध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं (स्थापत्य, संगीत, मूर्तिकला, चित्रकला, साहित्य, पुरालेख और पांडुलिपि विज्ञान, लोक परम्पराएं, छायांकन, फिल्में, कुम्हारी/मिट्टी के बर्तन बनाने की कला, पुत्तलिकता, बुनाई तथा कशीदाकारी आदि विषयों पर) और भिन्न-भिन्न विषयों/शास्त्रों पर व्याख्यान मालाओं के जरिए सर्जनात्मक तथा समालोचनात्मक संवाद के लिए मंच की व्यवस्था करता रहा।

एक अग्रणी संसाधन केन्द्र के रूप में, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने तरह-तरह के व्याख्यानों, प्रदर्शनियों तथा संगोष्ठियों के माध्यम से जन-साधारण तथा विद्वद्वर्गीय स्तरों पर ज्ञान के प्रसार में योगदान दिया। केन्द्र ने भारत में तथा विदेशों में अनेक संस्थाओं तथा विद्वानों से सम्पर्क स्थापित किए और बराबर बनाए रखे तथा विभिन्न प्रकार के अध्ययनों के क्षेत्र में सहयोगात्मक अनुसंधान पारस्परिक अन्योन्याश्रय तथा उनके साथ रचनात्मक सहयोग के अनेक कार्यकलाप प्रवृत्त किए।

संग्रह

केन्द्र पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्मों, स्लाइडों तथा फोटोग्राफों, कला वस्तुओं, विभिन्न विषयों के प्रकाशनों के अपने संग्रहों को बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील रहा। पुस्तकालय को, सामान्य प्रतियों के अलावा, अनेक देशों से प्राप्त योगदानों के माध्यम से समृद्ध किया गया। केन्द्र ने एक बड़ा अभिलेखागारीय संग्रह भी स्थापित किया है जिसका उद्देश्य विविध कलारूपों तथा तत्संबंधी साहित्य की मौलिक तथा अनुलिपिक सामग्री का एक महत्वपूर्ण भण्डार स्थापित करना है। महत्वपूर्ण व्यक्तिगत संग्रहों से अनेक फोटोग्राफ तथा कला वस्तुएं प्राप्त करने के अलावा, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने भारत की बहुमूल्य सांस्कृतिक सम्पत्ति और साहित्यिक तथा कलात्मक परम्पराओं के मौलिक प्रलेखन के द्वारा अपने अभिलेखागारीय संसाधनों में भी वृद्धि की।

कार्यक्रम

दक्षिण-पूर्व एशियाई, पूर्व एशियाई तथा स्लाविक एवं मध्य एशियाई अध्ययन कार्यक्रमों के अन्तर्गत, सुसंगत अध्ययन क्षेत्रों से संबंधित रोचक संदर्भ सामग्री चुनी और जोड़ी गई। भारत सरकार तथा संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू.एन.डी.पी.) के बीच हुए एक समझौते के फलस्वरूप, सांस्कृतिक संसाधनों के परस्पर सक्रिय बहु-माध्यमिक प्रलेखन के लिए एक राष्ट्रीय सुविधा स्थापित करने की परियोजना प्रारम्भ करने के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने उपाय किए हैं। आधुनिक प्रौद्योगिकी के प्रयोग द्वारा विभिन्न माध्यमों में बिखरे हुए सांस्कृतिक संसाधनों के खंडों को जोड़कर पुनर्निर्माण के लिए भारत में सम्भवतः यह अपनी तरह का पहला प्रयास है। इस योजना के अन्तर्गत, जीरॉक्स कारपोरेशन, पाल्टो आल्टो अनुसंधान केन्द्र, कैलिफोर्निया की सहायता से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में "गीतगोविन्द" नामक एक महत्वाकांक्षी परियोजना प्रारम्भ की गई है, जिसका उद्देश्य इस ग्रंथ के मूल पाठ उसके मुख्य विषयों तथा

संबंधित परम्परा का बहु-आयामी अध्ययन प्रारम्भ करना और उसकी कला, कर्मकांड, संगीत तथा नृत्य से संबंधित विषयवस्तु को प्रस्तुत करना है। भारतीय साहित्य, धर्म, दर्शन तथा कला से संबद्ध, मध्ययुगीन कवि जयदेव के ''गीतगोविन्द'' जैसे आधारभूत ग्रंथ के विश्लेषण के लिए आधुनिक इलेक्ट्रानिक विधियों को काम में लेने का मुख्य उद्देश्य एक समालोचनात्मक तथा रचनात्मक संवाद प्रारम्भ करना है, जिससे एक व्यापक संदर्भ में भाषा शास्त्र, दर्शन, मानव विज्ञान, संस्कृति तथा कलाओं के बीच सेतुबंधन हो। इस योजना के फलस्वरूप विकसित किए गए उपकरण अंततः ''गीतगोविन्द'' संदर्भ से बाहर भी कलाओं तथा विज्ञानों के क्षेत्र में उपयोग की दृष्टि से अति मूल्यवान होंगे, ऐसी आशा है।

शब्दकोशों के निर्माण और कला, स्थापत्य तथा संस्कृति के क्षेत्र में अनुसंधान तथा प्रकाशन संबंधी केन्द्र के लम्बी अवधि तक चलने वाले कार्यक्रम जारी रहे। इसके साथ ही कला विषयक बुनियादी ग्रंथों के अनुवाद तथा सम्पादन, स्थापत्य तथा तत्संबंधी विषयों पर प्रबंध ग्रंथ के प्रकाशन और कला इतिहासकारों की समालोचनात्मक कृतियों के, यथासम्भव आवश्यक संशोधन के साथ, पुनर्मुद्रण का कार्य चलता रहा। वर्ष 1994-95 के महत्वपूर्ण प्रकाशनों में कुछ हैं : *मयमतम्* खंड 2 (2. ग. 7), सम्पादक एवं अनुवादक ब्रूनो दाजां; *स्वायम्भुवसूत्रसंग्रह* (3.9), सम्पादक एवं अनुवादक : पी.एस. फिलियोजा; *शिल्परत्नकोश* (2. ग.12), सम्पादक एवं अनुवादक : वेट्टिना बॉमर; *नर्तननिर्णय* खंड I (2 क.1-2) सम्पादक एवं अनुवादक : आर. सत्यनारायण; *काण्वशतपथब्राह्मणम्* (1. ख. 4), अनुवादक एवं सम्पादक : सी.आर. स्वामिनाथन; *मतङ्गरचित* बृहद्देशी खंड 2, सम्पादक : प्रेमलता शर्मा; *दि टेम्पल ऑफ मुक्तेश्वर एट कौदण्डपुर*, लेखक : वसुंधरा फिलियोजा तथा पी.एस. फिलियोजा ; *प्रकृति -दि इंटिग्रल विजन*-5 खंड, सम्पादक : कपिला वात्स्यायन; और *दुनहुआंग आर्ट फ्रॉम दि आइज ऑफ दुआन वेनजी*, मूल चीनी भाषा से अंग्रेजी में अनूदित।

संबंधन

वर्ष 1994-95 के दौरान विदेशी संस्थाओं के पांच अध्येताओं को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा संबद्ध किया गया। ये अध्येता (1) कौलरैडो विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमरीका; (2) नॉर्थ शार्लोट विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमरीका; (3) कोलम्बिया कॉलेज, शिकागो, संयुक्त राज्य अमरीका; (4) विसकोन्सिन विश्वविद्यालय, मैडीसन, संयुक्त राज्य अमरीका; और (5) रूमानियन अकादमी, बुखारेस्ट, रूमानिया के थे।

संगोष्ठियां

इस वर्ष केन्द्र द्वारा निम्नलिखित अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय संगोष्ठियां आयोजित की गई :

1. नगर एवं नक्षत्र : भारत की ब्रह्माण्ड नगरीय ज्यामितियां

''नगर एवं नक्षत्र : भारत की ब्रह्माण्ड नगरीय ज्यामितियां'' शीर्षक से एक संगोष्ठी 14 अप्रैल, 1994 को हुई। इसमें जिस मुख्य विषय पर चर्चा की गई वह था-भारत के प्राचीन एवं मध्यकालीन नगरों के नियोजन में ज्यामितीय ज्ञान का उपयोग। इसमें कुल मिलाकर सात तकनीकी शोध-पत्र प्रस्तुत किए गए। विषय के जाने-माने विद्वानों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया, जिनमें संयुक्त राज्य अमरीका के कोलरैडो विश्वविद्यालय के खगोल-भौतिकी विभाग के एक प्रोफेसर तथा कुछ भारतीय विशेषज्ञ शामिल थे।

2. ध्वनि

''ध्वनि'' शीर्षक एक दो-दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी 24 व 25 अक्तूबर, 1994 को आयोजित की गई। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रो. यशपाल ने किया और इसमें भारत तथा विदेशों के वैज्ञानिकों, संगीतज्ञों, ध्वनि विशेषज्ञों, मानव वैज्ञानिकों,

जाति-संगीत शास्त्रियों आदि ने भाग लिया। इस संगोष्ठी में ध्वनि के विभिन्न पक्षों, जैसे सृष्टि के स्रोत के रूप में ध्वनि तथा ज्ञानेन्द्रियां, ध्वनि तथा काल, ध्वनि तथा आकाश (अंतरिक्ष), ध्वनि डिजाइनों के प्रतीक चिह्न और ध्वनि के वैज्ञानिक पक्ष जैसे प्रतिध्वनि तथा अनुनाद पर चर्चा की गई।

3. भारत तथा चीन : परस्पर दृष्टि

16 फरवरी, 1995 को ''भारत तथा चीन : परस्पर दृष्टि'' विषय पर एक आंतरिक संगोष्ठी इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के पूर्व एशिया एकक द्वारा आयोजित की गई जिसमें भारत में रहने वाले चीनी विद्वानों तथा चीनी अध्ययन में विशेषज्ञता प्राप्त भारतीय विद्वानों ने भाग लिया।

कार्यशालाएं

केन्द्र ने वर्ष के दौरान कई कार्यशालाएं भी आयोजित कीं :

1. माइक्रोग्राफिक तकनीकें

अप्रैल, 1994 में, ''माइक्रोग्राफिक तकनीकें'' विषय पर एक तीन-दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें यूता (संयुक्त राज्य अमरीका) की संरक्षणवैज्ञानिक सोसाइटी के प्रतिनिधियों सहित देश-विदेश के विशेषज्ञों ने भाग लिया। कार्यशाला में नवीनतम प्रौद्योगिकियों के बारे में जानकारी दी गई और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विशेषज्ञों को इस विषय में विशेषज्ञों तथा विद्वानों से सम्पर्क करने का अवसर मिला।

2. पांडुलिपिशास्त्र और पुरालिपिशास्त्र

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने ''पांडुलिपिशास्त्र और पुरालिपिशास्त्र'' विषय पर श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के सहयोग से नई दिल्ली में 14 से 30 मई, 1994 तक एक कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला का उद्देश्य युवा संस्कृत अध्येताओं को अनछुई पांडुलिपीय सामग्री का समालोचनात्मक संस्करण तैयार करने में उपयोग करने की विधि सिखाना था। देश के भिन्न-भिन्न भागों से आए सताइस युवा संस्कृत अध्येताओं/विद्वानों ने इस कार्यशाला में भाग लिया और सात विशेषज्ञों ने अपने भाषणों में विषय के विभिन्न पक्षों पर चर्चा की, और नेवारी, ग्रंथ, शारदा तथा टाकरी लिपियों का ज्ञान कराया।

पांडुलिपिशास्त्र तथा पुरालिपिशास्त्र विषय पर ही एक और कार्यशाला पूना विश्वविद्यालय के संस्कृत तथा प्राकृत भाषा विभाग के सहयोग से पुणे में 3 से 24 जनवरी, 1995 तक आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 29 विद्यार्थियों तथा अनुसंधान अध्येताओं ने भाग लिया और उन्हें शारदा, ग्रंथ, नेवारी तथा मोड़ी लिपियों को पहचानने तथा पढ़ने का अभ्यास कराया गया और विभिन्न पाठों की समालोचना, मिलान, पुनर्निर्माण, काल निर्धारण विधि, तिथिवंश समझना तथा वर्ण-विचार आदि का प्रशिक्षण दिया गया।

3. पुत्तलिकला

पुत्तलिकला विषय पर एक कार्यशाला 15 से 20 दिसम्बर, 1994 तक बाल कला मंडप, गांधी दर्शन, राजघाट में आयोजित की गई। गंदी/कच्ची बस्तियों के बहुत से बच्चों ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

4. विदुर पैकेज

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के लिए मुम्बई के राष्ट्रीय सॉफ्टवेयर औद्योगिकी केन्द्र (एन.सी.एस.टी.) द्वारा विकसित ''विदुर पैकेज'' पर प्रशिक्षण देने के लिए, दिसम्बर, 1994 में एक दो-दिवसीय अल्पकालीन कार्यशाला का आयोजन किया

गया। ''विदुर पैकेज'' एक परस्पर-सक्रिय बहु-भाषायी पाठ प्रसंस्करण प्रणाली है जो रोमन लिपि सहित अधिकांश भारतीय लिपियों के लिए उपयुक्त है, क्योंकि इसमें लिखे गए संस्कृत ग्रंथों तथा अन्य पाठों को भारतीय लिपियों में व्यक्त करने के लिए उपयोगी ध्वनि चिह्नों की व्यवस्था की गई है।

5. भारतीय पुरालेखशास्त्र

युवा अध्येताओं को प्राचीन भारतीय लिपियों तथा उनके परवर्ती रूपों के बारे में जानकारी देने तथा सार्थक अनुसंधान कार्य के लिए दीक्षित करने के उद्देश्य से, ''भारतीय पुरालेखशास्त्र'' विषय पर 24 से 28 फरवरी, 1995 तक एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

प्रदर्शनियां

आलोच्य वर्ष में केन्द्र में निम्नलिखित प्रदर्शनियां लगाई गईं :

''हवाई : रूपान्तरण का भूदृश्य'' विषय पर डेविड ए. उलरिच के छायाचित्रों की एक प्रदर्शनी इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में 9 से 13 अगस्त, 1994 तक आयोजित की गई।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने छायाचित्रों की एक और प्रदर्शनी लगाई जिसका शीर्षक था ''राजा दीन दयाल की धरोहर''। यह प्रदर्शनी 8 अक्तूबर से 30 अक्तूबर, 1994 तक राष्ट्रीय प्रदर्शनीय कला केन्द्र, मुम्बई की दीर्घा में लगाई गई। जनता ने इस प्रदर्शनी का बहुत अच्छा स्वागत किया।

गुजरात की 80 वर्षीया वयोवृद्ध कलाकार श्रीमती संतोकबा दुधत द्वारा श्रीमती इन्दिरा गांधी के जीवन पर तैयार की गई स्क्रॉल पेंटिंग (फड़) की तीसरी प्रदर्शनी ''प्रियदर्शिनी'' शीर्षक से 19 नवम्बर, 1994 को बाल भवन के साथ मिलकर लगाई गई; उसी दिन दिवंगत श्रीमती इन्दिरा गांधी का जन्मदिन पड़ता था।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने मार्च, 1995 में केन्द्र के परिसर में स्थित माटीघर में रावारी कशीदाकारी की एक प्रदर्शनी लगाई। इसका उद्देश्य था रावारी संस्कृति की झलक प्रस्तुत करना। रावारी समुदाय गुजरात की एक जनजाति है जो अपने कला कौशल के लिए विख्यात है। रावारी कशीदाकारी एक भाषा की तरह है जिसका उपयोग रावारी स्त्रियां अपने आपको, अपने मनोभावों को अभिव्यक्त करने के लिए करती हैं। रावारी स्त्रियां सूई तथा धागे की सहायता से अपनी कशीदाकारी के जो भी नमूने बनाती हैं, उनमें से प्रत्येक का एक नाम तथा अर्थ होता है। इनमें से बहुत से प्रतीक तो रावारी लोगों के दैनंदिन जीवन के आंतरिक या मूलभूत तत्वों के द्योतक हैं और इस ग्रामीण समुदाय की अपनी दुनिया में झांकने के लिए हमारे लिए एक झरोखे का काम करते हैं। यह प्रदर्शनी उन अनुसंधान तथा प्रलेखन कार्यों के परिणाम है जिनका उद्देश्य नारी समुदाय की उनके दैनिक जीवन तथा जीवन शैली में रचनाधर्मिता का अभिलेख प्रस्तुत करना है। इस तरह के अध्ययनों की शृंखला में यह पहली कड़ी थी।

पुत्तलि प्रदर्शन

महात्मा गांधी के जन्मदिन पर 2 अक्तूबर को केन्द्र ने महात्मा गांधी के जीवन पर कई पुत्तलि प्रदर्शन दिल्ली में अलग-अलग स्थानों पर आयोजित किए। ये कार्यक्रम तमिलनाडु के पुत्तलि कलाविदों की एक मंडली ने प्रस्तुत किए थे।

दुनहुआंग संगोष्ठी में भाग लेना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के एक शिष्टमंडल ने मोगाओ ग्रोटोज में हुई एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने के लिए चीन का दौरा किया। यह संगोष्ठी 9 से 15 अगस्त, 1994 तक दुनहुआंग अकादमी के स्वर्ण जयंती समारोहों के अन्तर्गत आयोजित की गई थी। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा प्रकाशित एक सचित्र प्रबंध ग्रंथ ''दुनहुआंग आर्ट थ्रू दि आइज ऑफ दुआन वेनजी'' इस अवसर पर दुनहुआंग अकादमी को भेंट किया गया। भारत तथा चीन की गुफा कला विषय पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा दुनहुआंग अकादमी द्वारा संयुक्त रूप से प्रायोजित एक विशेष सत्र मोगाओ गुफा स्थल पर 15 अगस्त, 1994 को आयोजित किया गया।

स्मारक भाषण

हर वर्ष होने वाला आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारक भाषण इस वर्ष भी 19 अगस्त, 1994 को आयोजित किया गया। भारतीय ज्ञानपीठ के कार्यकारी निदेशक डा. पांडुरंग राव ने "भाषा प्रसंग और भारतीयता" विषय पर भाषण दिया, जिसमें उन्होंने भारतीय तथा अन्य भाषाओं की आधारभूत एकता पर प्रकाश डाला। डॉ. केदारनाथ सिंह ने इस आयोजन की अध्यक्षता की।

वार्षिक कार्य योजना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कार्यकारिणी समिति ने वर्ष 1994-95 की वार्षिक योजना का अनुमोदन किया और फिर अनुमोदित कार्यक्रमों की परिधि में विस्तृत लक्ष्य निर्धारित किए गए। यह संतोष का विषय है कि भिन्न-भिन्न प्रभागों को, कुल मिलाकर, इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफलता मिली। केन्द्र की कार्यकारिणी समिति तथा न्यास द्वारा अनुमोदित 10 वर्षीय योजना की रूपरेखा के अन्तर्गत केन्द्र के कार्यकलापों का विस्तार किया गया।

प्रत्येक प्रभाग की प्रमुख उपलब्धियों का ब्यौरा आगे के पृष्ठों में दिया गया है :

कलानिधि

(पुस्तकालय, सूचना प्रणालियों, सांस्कृतिक अभिलेखागार तथा क्षेत्र अध्ययन का प्रभाग)

मानविकी विषयों और कलाओं से सम्बन्धित संदर्भ सामग्री के विशाल भंडार के रूप में कार्य करने वाले कलानिधि प्रभाग के मुख्य घटक हैं : एक संदर्भ पुस्तकालय तथा सांस्कृतिक अभिलेखागार जिनमें बहुमाध्यमिक डेटाबेस तथा सूचना प्रणालियों की सुविधाएं उपलब्ध हैं।

वर्ष 1994 में संदर्भ पुस्तकालय ने कला रूपों, लोक साहित्य, इतिहास, पुरातत्व, धर्म, दर्शन, भाषा, मानव विज्ञान, मानवजाति विज्ञान आदि सभी विषयों से सम्बन्धित पुस्तकों, प्रबंध ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं, माइक्रोफिल्म व माइक्रोफिश, फोटोग्राफ, स्लाइडों, फिल्मों, श्रव्य-दृश्य सामग्रियों आदि के संग्रह का काम जारी रखा। पुस्तकालय में विश्वकोशों, ग्रंथसूचियों, प्राथमिक ग्रंथों, दुर्लभ पुस्तकों और डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, ठाकुर जयदेव सिंह, कृष्णा कृपलानी, नसली एलिस हीरामानेक, लांस डेन, पं. श्री नारायण चतुर्वेदी और चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा प्रभृति विख्यात विद्वानों के व्यक्तिगत संग्रह जैसी मूल्यवान सामग्री संगृहीत हैं।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संदर्भ पुस्तकालय की एक अनुपम विशेषता है उसका माइक्रोफिल्म और माइक्रोफिश संग्रह। पुस्तकालय ने संस्कृत, अरबी और फारसी की पांडुलिपियों के प्रमुख संकलनों की माइक्रोफिल्म और माइक्रोफिश प्रतियां प्राप्त करने के लिए विशेष प्रयत्न किया। साथ ही उसने भारत के मुख्य पुस्तकालयों में उपलब्ध पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्में तैयार करने का व्यापक एवं दीर्घकालीन कार्यक्रम हाथ में लिया है इसका ब्यौरा इसी अध्याय में आगे दिया गया है।

पुस्तकालय शोध छात्रों को भारत भर में और विदेशी पुस्तकालयों में यत्रतत्र उपलब्ध भारतीय सांस्कृतिक धरोहर विषयक प्राथमिक सामग्री तक पहुंचने का अवसर प्रदान करता है।

यहां भारतीय तथा विदेशी संग्रहों में उपलब्ध कला वस्तुओं और सचित्र पांडुलिपियों के फोटोग्राफ और स्लाइडें भी विशाल मात्रा में संगृहीत हैं।

पुस्तकालय में संगृहीत इन सामग्रियों तक एक कम्प्यूटरीकृत/हस्तचालित कैटलॉग (ग्रंथसूची) के माध्यम से आसानी से पहुंचा जा सकता है।

कार्यक्रम क : संदर्भ पुस्तकालय

नई प्राप्तियां

मुद्रित सामग्री

इस वर्ष संदर्भ पुस्तकालय में मुद्रित पुस्तकों के 4,250 नए खंड जोड़े गए। इनमें वे 892 पुस्तकें भी शामिल हैं जो विभिन्न विद्वानों तथा संस्थाओं द्वारा उपहारस्वरूप प्रदान की गई हैं। महत्वपूर्ण पुस्तकदाताओं में से कुछ उल्लेखनीय हैं : जापान फाउंडेशन, टोकियो; कांग्रेस कार्यालय पुस्तकालय जकार्ता तथा नई दिल्ली, भारतीय राजदूतावास, टोकियो; चेक गणराज्य का राजदूतावास तथा चीन का राजदूतावास, नई दिल्ली; उप्पसाला विश्वविद्यालय पुस्तकालय, उप्पसाला (स्वीडन); ईरान का राष्ट्रीय पुस्तकालय (तेहरान); ढाका विश्वविद्यालय का प्राच्य पुस्तकालय (बंगलादेश); चेक गणराज्य का राष्ट्रीय पुस्तकालय, प्राग; संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू.एन.डी.पी.), नई दिल्ली; फ्रांस हॉप संग्रहालय, बुडापेस्ट (हंगरी) और गाथा स्टडी ग्रुप, पुणे, इसके अलावा कुछ महानुभाव जैसे डॉ. आइरीन विंटर (संयुक्त राज्य अमरीका), कु. रेनी रिनूफ (संयुक्त राज्य अमरीका), प्रो. हुआन वेनजो (चीन), एलीलियो पेटुसीओली (संयुक्त राज्य अमरीका), श्री मारियन डी. मारियन (रुमानिया) और डॉ. लोकेशचन्द्र, श्रीमती शोलाज कामा, डॉ. वाई. सहाय तथा श्री एम.सी. जोशी (भारत)। अब पुस्तकालय में खंडों की संख्या कुल मिलाकर 93,447 है।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

वर्ष के दौरान, भारत सरकार के विभिन्न द्विपक्षीय आदान-प्रदान कार्यक्रमों में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के भाग लेने के माध्यम से भी पुस्तकालय को सामग्री प्राप्त होती रही। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के माध्यम से निम्नलिखित महत्वपूर्ण सामग्रियां प्राप्त हुईं :

बंगलादेश

वारेन्द्र रिसर्च म्यूजियम, राजशाही (बंगलादेश) से संस्कृत पांडुलिपियों का एक कैटलॉग और एक विवरण पत्र (बॉरयोर) प्राप्त हुआ। बंगलादेश राष्ट्रीय संग्रहालय, ढाका से "क्राफ्ट" (शिल्प) विषय पर एक पुस्तक प्राप्त हुई।

फिनलैंड

फिनिश ओरिएंटल सोसाइटी, हेलसिंकी से प्रो. ऐस्को परपोला लिखित एक प्रकाशन *स्टडिया ओरिएंटल्स : दि कमिंग आफ दि आर्यन्स टु ईरान एण्ड इंडिया* प्राप्त हुआ।

स्पेन

नेशनल एन्थ्रोपोलॉजिकल एण्ड ईथ्नोलॉजिकल म्यूजियम, ऐलफंसो (स्पेन) से दो विवरणिकाएं और एक प्रकाशन सूची प्राप्त हुईं।

उपर्युक्त के अतिरिक्त, ढाका विश्वविद्यालय पुस्तकालय,ढाका; मिस्र के राष्ट्रीय संग्रहालय पुस्तकालय, कैरो; और इन्स्टीट्यूट जोग्राफिया नेशनल, बेल्जियम; राष्ट्रीय पुस्तकालय, ईरान (तेहरान), और प्रोविन्सिया आटोनामा डि ट्रेंटो म्यूजियो प्रोविन्सिएल डि आर्टे, ट्रेंटो, इटली से भी कैटलॉग प्राप्त हुए।

पत्र-पत्रिकाएं

पुस्तकालय इस वर्ष भी उन अकादमिक पत्र-पत्रिकाओं का ग्राहक बना रहा जिनका उल्लेख पिछले वर्ष की रिपोर्ट में किया गया था। ऐसी पत्र-पत्रिकाओं की संख्या अब 421 है। ये पत्र-पत्रिकाएँ इन विषयों से सम्बन्धित हैं : मानव विज्ञान, पुरातत्व, स्थापत्य, कलाएं, पुस्तक समीक्षा, कम्प्यूटर एवं सूचना विज्ञान, सामग्री संरक्षण, नृत्य, लोक साहित्य, इतिहास, मानचित्रकी विषय, पुस्तकालय विज्ञान, साहित्य,संगीत, मुद्रा टंकण शास्त्र, प्राच्य अध्ययन, दर्शन, धर्म, सामान्य विज्ञान एवं उसका इतिहास, सामाजिक विज्ञान, रंगमंच और क्षेत्र अध्ययन।

माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश

क. आंतरिक उत्पादन

आलोच्य वर्ष के दौरान पुस्तकालय में आंतरिक उत्पादन से माइक्रोफिल्मों की 690 कुंडलियां (रोल्स) प्राप्त हुईं जो मणिपुर राज्य कला अकादमी, इम्फाल; दिनेश चन्द्र सिंह मेमोरियल लाइब्रेरी, इम्फाल; मणिपुर राज्य अभिलेखागार, इम्फाल; गुरु अतोम बापू शर्मा अनुसंधान केन्द्र, मणिपुर अकादमी, इम्फाल; मुतुआ म्यूजियम, इम्फाल; एन. खेलचन्द्र सिंह संग्रह, इम्फाल; और श्री चैतन्य शोध संस्थान, कलकत्ता से सम्बन्धित थीं।

अनुलिपि एकक (रिप्रोग्राफी यूनिट) ने भी जैन विद्या संस्थान, जयपुर में फोटो-प्रलेखन तथा गवर्नमैंट ओरिएंटल लाइब्रेरी, मद्रास में रिटेक फिल्मों की माइक्रोफिल्म निर्माण का काम हाथ में लिया। इसके अतिरिक्त, माइक्रोफिल्मों की दूसरी प्रतियां बनाने का काम भी चलता रहा और करार की शर्तों के अनुसार, हर पांडुलिपि की तैयार की गई माइक्रोफिल्म की एक प्रति उसके मालिक को दी गई तथा दूसरी प्रति संदर्भ पुस्तकालय में प्राप्त हुई।

नीचे दी गई सारणी में वर्ष 1994-95 में किए गए आंतरिक उत्पादन का विवरण दिया गया है जिसमें माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश की प्रतियों का ब्यौरा शामिल है।

	माइक्रोफिल्म निर्माण	कुंडलियों/फिशों की संख्या	फ्रेमों की संख्या
i.	संदर्भ पुस्तकालय का विशेष दुर्लभ संग्रह	9 कुंडलियां	5136 फ्रेम
ii.	गीतगोविन्द	1 स्ट्रिप	94 फ्रेम

माइक्रोफिल्म/फिश की प्रतियां बनाना

i	माइक्रोफिल्म कुंडलियां	968 मूल कुंडलियों की 1936 कुंडलियां
ii.	माइक्रोफिश	
	क. आई.डी.सी. संग्रह लीडन (नीदरलैंड)	13,528 फिश
	ख विश्वधर्म उच्च अध्ययन संस्थान, पेनसिलवेनिया विश्वविद्यालय, फिलाडेल्फिया (सं.रा.अ.)	7,968 फिश

ख. माइक्रोफिल्म निर्माण की परियोजनाएं

वर्ष के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का माइक्रोफिल्म बनाने का काम भिन्न-भिन्न केन्द्रों पर अबाध गति से चलता रहा और प्रगति लगभग लक्ष्यों के अनुसार ही होती रही। पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्में बनाने की कुछ नई परियोजनाएं भारत कला भवन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी; अरबी तथा फारसी शोध संस्थान, टोंक, राजस्थान; और श्रीशंकर मठ काञ्चीपुरम, तमिलनाडु में प्रारम्भ की गई। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में भारत कला भवन की परियोजना पूरी हो चुकी है और अन्य दो परियोजनाएं प्रगति पर हैं।

वर्ष 1994-95 के लिए माइक्रोफिल्म उत्पादन की प्रगति का ब्यौरा इस प्रकार है :

क्र. सं.	परियोजनाएं	कुल पांडुलिपियां उपलब्ध	प्रारम्भ करने की तारीख	तैयार की गई कुण्डलियां	कुल पांडुलिपियां	कुल पत्रे
1.	सरस्वती भवन लाइब्रेरी वाराणसी	1,20,000	7.9.89	1050	31,901	7,06,518
2.	वैदिक संशोधन मंडल, पुणें	14,099	22.6.90	229	5,489	1,35,385
3.	भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणें	18,000	19.9.89	291	1,709	1,62,210
4.	गवर्नमेंट ओरिएंटल मैनुस्क्रिप्ट्स् लाइब्रेरी मद्रास	45,000	10.9.89	242	2,194	1,67,751

5. तंजावुर महाराजा सरफोजी सरस्वती महल लाइब्रेरी, तंजावुर	54,000	16.8.90	94	963	54,728
6. श्रीशंकर मठ कांचीपुरम्	4,070	नवम्बर, 94	39	167	29,521
7. श्री रणवीर संस्कृत अनुसंधान संस्थान, जम्मू		2.11.92	305	(918 रोल्स में पूरी की गई)	
8. भारत कला भवन, बनारस हिन्दू विश्व-विद्यालय, वाराणसी	72	जून, 1994	5	72	3,400
9. अरबी तथा फारसी शोध संस्थान, टोंक (राजस्थान)	250	13.7.94	22	108	14,322

पूरी की गई परियोजनाएं

श्री रणवीर संस्कृत अनुसंधान संस्थान, जम्मू तथा श्री रामवर्मा गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, त्रिपुनीथुर, केरल की परियोजनाएं इस वर्ष सम्पन्न हो गई हैं। दोनों केन्द्रों का कुल उत्पादन 918 कुंडलियां हैं जिनमें से 5,430 पांडुलिपियों के 5,07,278 पत्रों का काम जम्मू संस्थान में पूरा किया गया और 3,661 पांडुलिपियों के 2,96,300 पत्रों का काम त्रिपुनीथुर में।

नई परियोजनाएं

निम्नलिखित नई परियोजनाओं को अगले वर्ष 1995-96 में प्रारम्भ करने के लिए उनके संबंध में प्रारम्भिक कार्रवाई शुरु की गई :

i. रामपुर रजा लाइब्रेरी, रामपुर

ii. सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान, उज्जैन

iii. भारत विद्या का एल.डी. संस्थान, अहमदाबाद।

प्राप्त माइक्रोफिशें

स्तास विब्लियोथिक प्रॉशिशर कुलतुरविस (एस.बी.पी.के.) बर्लिन; सामाजिक विज्ञान वैज्ञानिक सूचना संस्थान (इनियन), रूसी विज्ञान अकादमी, मास्को (रूस); वियाना यूनिवर्सिटी, आस्ट्रिया; प्राच्य तथा इंडिया आफिस संग्रह, ब्रिटिश लाइब्रेरी, लंदन; और इंटर डॉक्यूमेंटेशन कम्पनी, लीडन, नीदरलैंड से कुल मिलाकर 7,100 माइक्रोफिशें प्राप्त हुई।

स्लाइडें

आलोच्य वर्ष में, स्लाइडों के संग्रह में 2,374 रंगीन स्लाइडें जोड़ी गईं। इनमें से 1,802 स्लाइडें दक्षिण एशियाई कला संबंधी अंबरीकी समिति से प्राप्त की गई और "गीतगोविन्द" विषयक 572 स्लाइडें देश के विभिन्न संग्रहों से। ब्रिटिश लाइब्रेरी, लंदन; विक्टोरिया एण्ड एलबर्ट म्यूजियम, लंदन; यूनेस्को के एशियाई सांस्कृतिक केन्द्र, टोकियो से प्राप्त अभिलेखागारीय स्लाइडों में से कुल मिलाकर 15,238 स्लाइडों की दूसरी प्रतियां अध्येताओं तथा अनुसंधान-कर्ताओं के उपयोग के लिए तैयार की गई।

भारतीय संग्रहालय कलकत्ता की दीर्घाओं में जो भरहुत तथा पाल प्रतिमाएं प्रदर्शित की हुई हैं उनके फोटो प्रलेखन का कार्य प्रारम्भ किया जा चुका है।

इसके अतिरिक्त, रामपुर रजा लाइब्रेरी की पांडुलिपियों तथा आलबमों में उपलब्ध लघु चित्रों के बहुमूल्य संग्रह के फोटो प्रलेखन का कार्य प्रारम्भ किया गया और इसके लिए संयुक्त राज्य अमरीका के इस्लामिक कला तथा संस्कृति के प्रख्यात विद्वान् डा. बारबरा शिमल्ज की सेवाएं प्राप्त की गईं।

फोटोग्राफ

ग्रेट वेस्टर्न आर्ट की 13 चित्रकारियों (पेंटिंग्स) के फोटोग्राफ और डॉ. ए.के. कुमारस्वामी के फोटोग्राफों के 2 आलबम जो उनके पुत्र डॉ. राम पी. कुमारस्वामी द्वारा अमरीका से उपहारस्वरूप भेजे गए थे, संदर्भ पुस्तकालय के संग्रह में जोड़े गए।

श्रव्य-दृश्य सामग्री

आलोच्य वर्ष में 8 वीडियो कैसेट और 140 आडियो कैसेट पुस्तकालय संग्रह में जोड़े गए। इनमें से 140 आडियो कैसेट 4 वीडियो कैसेट रामकृष्ण विवेकानंद सर्विस फाउंडेशन, हैदराबाद के थे।

कैटलॉग कार्य

इस वर्ष, पुस्तकों के 5,029 खंडों का वर्गीकरण किया गया और कैटलॉग बनाया गया। 1,235 अभिलेख कम्प्यूटरबद्ध कैटलॉग में दर्ज किए गए। विभिन्न केन्द्रों में माइक्रोफिल्मित 40,000 पांडुलिपियों के लिए हाथ से कार्ड बनाए गए। इसी प्रकार विभिन्न संग्रहों की स्लाइडों के 14,389 कैटलॉग कार्ड हाथ से बनाए गए।

जिल्दबंदी

वर्ष के दौरान 6,604 खंडों की जिल्दबंदी करवाई गई। अब जिल्दबंद खंडों की संख्या कुल मिलाकर 31,072 हो गई है।

अनुदान

संदर्भ पुस्तकालय को जापान फाउंडेशन (टोकियो) के पुस्तकालय सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत 3,05,548,00 येन मूल्य की पुस्तकें अनुदान के रूप में प्राप्त हुई हैं।

सम्मेलन/संगोष्ठियाँ/कार्यशालाएं आदि

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपने कार्मिकों को पुस्तकालय तथा सूचना विज्ञान, अनुलिपि कला, तथा अन्य क्षेत्रों में नवीनतम प्रवृत्तियों से अवगत कराने के लिए प्रयत्नशील रहा और इसके लिए केन्द्र ने संगोष्ठियां तथा कार्यशालाएं आयोजित कीं और अन्य संस्थाओं द्वारा संचालित ऐसी गतिविधियों में भाग लेने के लिए अपने तकनीकी कर्मचारियों को भेजा।

माइक्रोग्राफिक तकनीकों पर कार्यशाला

माइक्रोग्राफी के उपयोग पर बड़ी सूझबूझ के साथ सुविचारित तथा नियोजित एक कार्यशाला नई दिल्ली में राजेन्द्र प्रसाद रोड स्थित बंगला नं. 3 में 25-27 अप्रैल, 1994 को संचालित की गई यह उत्साह (सं.रा.अ.) की वंशवैज्ञानिक (जीनियोलॉजिकल) सोसाइटी के सहयोग से आयोजित की गई थी। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य माइक्रोग्राफिक कार्यकलापों में संलग्न विद्वानों, अध्येताओं, उपयोगकर्ताओं, विक्रेताओं और तकनीकी कर्मचारियों में इस विषय के प्रति जागरूकता उत्पन्न कराना और अनुप्रयोग की दृष्टि से इस क्षेत्र में हुए नवीनतम प्रौद्योगिकीय विकास के बारे में चर्चा करना था।

वृत्तिक गतिविधियों में सहभागिता

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपने कार्मिकों को पुस्तकालय तथा सूचना विज्ञान, अनुलिपि कला, संरक्षण तथा क्षेत्रगत अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों में नवीनतम प्रवृत्तियों से अवगत कराने के लिए सदा प्रयत्नशील रहता है। इसी उद्देश्य से कार्मिकों को विभिन्न संगोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं आदि में उपस्थित होने और विभिन्न स्तरों को अन्य वृत्तिक/पेशेवर गतिविधियों में भाग लेने के लिए भेजा जाता है।

डेलनेट

दिल्ली लाइब्रेरी नेटवर्क, दिल्ली में स्थित महत्वपूर्ण पुस्तकालयों तथा सूचना केन्द्रों में संसाधनों के पारस्परिक आदान-प्रदान के लिए कार्यरत हैं। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले विभिन्न पुस्तकालयों में पत्र-पत्रिकाओं के आदान-प्रदान को युक्तिसंगत बनाने के लिए डेलनेट पहले ही प्रयास कर चुका है। इस गतिविधि से एक एक्सेशन कैटलॉग बनाने में सुविधा होती है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने डेलनेट के मानविकी तथा कला स्कन्ध की देखभाल में अग्रणी भूमिका अदा की है।

कार्यक्रम ख : राष्ट्रीय सूचना प्रणाली तथा डेटा बैंक

कलानिधि (ख) प्रभाग की जिम्मेदारी है : अन्य सभी प्रभागों की कम्प्यूटरीकरण संबंधी आवश्यकताओं का पता लगाना; सूचना प्रणाली का डिजाइन व विकास करना, कम्प्यूटर प्रणाली का रखरखाव करना व उसे चालू रखना और सभी उपयोगकर्ताओं को प्रशिक्षण देना। इसके कार्यकलापों में शामिल हैं :-

1. हार्डवेयर तथा साफ्टवेयर को प्राप्त करना और उसे चालू करना,
2. अनुप्रयोग पैकेजों का विकास,
3. कला और मानविकी के राष्ट्रीय डेटा बैंक के लिए नोडल एजेंसी,
4. सांस्कृतिक स्रोतों के परस्पर सक्रिय बहु-माध्यमिक प्रलेखन के लिए राष्ट्रीय सुविधा की स्थापना करना,
5. अनुसंधान तथा विकास परियोजनाएं,
6. जनशक्ति प्रशिक्षण, और
7. कम्प्यूटर प्रदर्शन।

हार्डवेयर और साफ्टवेयर का अधिग्रहण और प्रचालन

क एक ऐपल मैकिनटोश कम्प्यूटर प्रणाली प्राप्त की गई और 'गीतागोविन्द' विषयक एक प्रयोगिक बहु-माध्यमिक परियोजना विकसित की गई और परस्पर सक्रिय की गई।

ख सात पी.सी. ए.टी./486 कम्प्यूटर निम्नलिखित प्रभागों में प्रयोग के लिए खरीदे गए :

i. आचार्या का सचिवालय,
ii. विदुर पैकेज के लिए,
iii. कलादर्शन प्रभाग,
iv. जनपद सम्पदा प्रभाग,
v. स्लाविक तथा मध्य एशियाई अध्ययन कार्यक्रम;

vi. जनपद सम्पदा प्रभाग के वृंदावन कार्यालय में क्षेत्र परियोजना कार्य; और

vii. कलाकोश प्रभाग का वाराणसी शाखा कार्यालय।

ग. अभिलेखागारीय तथा संदर्भ प्रयोजन के लिए डिजिटल के रूप में महत्वपूर्ण प्रलेखों के भंडारण के लिए एक एकीकृत प्रलेख छविअंकन प्रणाली प्राप्त करके स्थापित की गई।

अनुप्रयोग पैकेजों का विकास

डेटाबेसों में और अधिक सूचना इकट्ठी करने का काम वर्ष 1994-95 में चलता रहा, जिसका ब्यौरा नीचे दिया गया है:-

सूचियों की संग सूची (कैटकैट)

इस डेटाबेस से प्रकाशित/अप्रकाशित हजारों सूचियों (कैटलॉग) के बारे में जानकारी मिलती है। पचास से अधिक सूचियों के बारे में जानकारी कम्प्यूटर में भरी गई। इनमें मुख्यत: वे सूचियां शामिल हैं जो धीरेन्द्र अनुसंधान संग्रहालय, यूनिटी ऑफ राजस्थानी, ढाका नगर (बंगलादेश); रघुनाथ मंदिर, जम्मू; विश्वभारती, शांतिनिकेतन मे प्राप्त हुई हैं। इस प्रकार डेटाबेस में भरी गई प्रविष्टियों की संख्या कुल मिलाकर 2,170 हो गई है। विषय, भाषा, सूचीकर्ता का नाम आदि के अनुसार सूचना पुन: प्राप्त करने के लिए प्राप्ति बिन्दुओं की और व्यवस्था की गई। कलानिधि प्रभाग द्वारा सूचियों को आगे और जांच करने के लिए अद्यतन बनाई गई मुद्रित सूचना का उपयोग किया जा रहा है।

पांडुलिपियां (मैनुस)

तालपत्रों पर लिखित तमिल पांडुलिपियों से सम्बन्धित विभिन्न विषयों की वर्णनात्मक सूचना डेटाबेस में भरी गई; ये तमिल पांडुलिपियां भारतीय अध्ययन के एशियाई संस्थान से प्राप्त हुई थीं और इनमें 9,000 डेटाशीटें थीं। समालोचनात्मक संस्करण तैयार करने में डेटाबेस सुविधा प्रदान करता है; इसकी योजना कलामूलशास्त्र ग्रंथमाला के अन्तर्गत शामिल की गई थी।

कलाकोश पारिभाषिक शब्द (केकेटर्म)

कलातत्वकोश की परियोजना के लिए यह डेटाबेस विकसित कर लिया गया है। वर्ष के दौरान 12,000 से भी अधिक पारिभाषिक शब्दों के बारे में विवर्णनात्मक सूचना रोमन तथा देवनागरी लिपियों में कम्प्यूटर में भरी गई है। इससे अध्येताओं को भिन्न-भिन्न ग्रंथों में मिली पारिभाषिक शब्दावली मे सम्बन्धित संकल्पनाओं को समझने और पाठ/ग्रंथ संबंधी व्यापक संदर्भ तैयार करने में सहायता मिलेगी।

ग्रंथसूची (बिब्ल)

पुत्तलिकला के विषय में हिन्दी, फ्रेंच, जर्मन, भाषा-इंडोनेशिया तथा अंग्रेजी और विभिन्न भाषाओं के ग्रंथों, पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, शोधपत्रों से 400 से अधिक प्रविष्टियों को चुना गया और उन सबको कम्प्यूटर के डेटाबेस में भरा गया। देशों तथा श्रेणियों के अनुसार (जैसे चमड़े की पुत्तलियां, डोरी वाली पुत्तलियां, छाया पुत्तलियां, जल पुत्तलियां आदि) इन पुत्तलियों के अलग-अलग सूचक (इंडेक्स) बनाए गए। डेटाबेस में शामिल की गई सभी प्रविष्टियां रोमन लिपि में थीं।

कोश निर्माण (थिस)

यह डेटाबेस जनपद सम्पदा प्रभाग के कार्यक्रमों के लिए विकसित किया गया है। कुछ जनजातीय भाषाओं तथा बोलियों में प्रचलित महत्वपूर्ण शब्दों को इस उद्देश्य से भरा जाता है ताकि छह महाभूतों-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु , आकाश तथा दिक् सम्बन्धित सबगीय शब्दों का पता लगाया जा सके। अधिक सूचना शामिल करने और ग्रंथ सूची डेटाबेस के साथ संबद्ध करने के उद्देश्य से सॉफ्टवेयर में परिवर्तन किया गया।

माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश (एम.एफ.एम.)

इस डेटाबेस में पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्मों/माइक्रोफिशों के बारे में संदर्भ जानकारी रखी जाती है। 1,500 से भी अधिक प्रविष्टियों को कम्प्यूटर में भरा गया है। विभिन्न पहुंच बिन्दुओं पर आधारित सूचना को पुनः प्राप्त करने तथा मुद्रित करने के लिए 'यूजर इंटरफेस' प्रणाली विकसित की गई है।

श्रव्य-दृश्य सूचना प्रबंध प्रणाली (एविम्स)

2,000 स्लाइडों के 'वालन नम्बियार' संग्रह संबंधी सूचना डेटाबेस में भरी गई। राजा लाला दीनदयाल के फोटोग्राफों के संग्रह के डेटाबेस से आवश्यक मुद्रित सामग्री निकाली गई।

प्रशासनिक और वित्तीय संवीक्षा

(क) पुरस्कार/पारितोषिक/भाषण/व्याख्यान/निबंधों और निमंत्रणों से सम्बन्धित सूचना के प्रलेखन के लिए तीन डेटाबेस विकसित किए गए।

(ख) वेतन पर्चियां और अन्य वित्तीय रिपोर्टें तैयार करने में कम्प्यूटर का प्रयोग किया जाने लगा।

आलोच्य वर्ष में कम्प्यूटर के अनुप्रयोग के संबंध में निम्नलिखित पैकेज विकसित तथा स्थापित किए गए :

क. कला दर्शन प्रभाग के लिए डाक प्रणाली।
ख. कलानिधि (ग) के लिए श्रव्य तथा दृश्य सूचना प्रणाली।
ग. कलादर्शन प्रभाग के लिए घटनाओं के वार्षिक कैलेंडर संबंधी डेटाबेस।
घ. कलानिधि-क की पांडुलिपि स्थिति प्रणाली को माइक्रोफिल्म बनाना।
ङ. भारत में अमरीकी विद्वानों/अध्येताओं संबंधी डेटाबेस।
च. प्रकाशन की स्थिति।
छ. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र संबंधी यात्रा सूचना प्रणाली
ज. फाइल की आवाजाही संबंधी प्रणाली, और
झ. नियुक्ति प्रणाली।

अनुसंधान और विकास परियोजना

1. भारतीय भाषा प्रसंस्करण (प्रॉसेसिंग)

कम्प्यूटर संचार के लिए प्राथमिक विधि के रूप में स्वाभाविक भाषा यूजर इंटरफेस विकसित करने के अंतिम उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए, भारतीय भाषा प्रसंस्करण के लिए साधन विकसित करने के उद्देश्य से एक चरणबद्ध अग्रदर्शी योजना बनाई गई।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र और मुम्बई के राष्ट्रीय साफ्टवेयर प्रौद्योगिकी केन्द्र के बीच हुए एक समझौते के अन्तर्गत, राष्ट्रीय साफ्टवेयर प्रौद्योगिकी केन्द्र द्वारा देवनागरी, बंगला, उड़िया, तमिल तथा रोमन लिपियों के लिए, एक 'विदुर' नामक साफ्टवेयर विकसित किया गया था और इस कार्य के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विशेषज्ञों के तकनीकी निदेशों के अनुसार इन लिपियों में स्वरभेद चिह्न लगाए गए थे।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विशेषज्ञों द्वारा इस प्रणाली की जांच की गई और कुछ सुधार सुझाए गए। राष्ट्रीय साफ्टवेयर प्रौद्योगिकी केन्द्र, मुम्बई के विशेषज्ञों ने तदनुसार पैकेज में परिवर्तन किया और उसका एक संशोधित संस्करण 30 दिसम्बर, 1994 में स्थापित कर दिया गया।

विदुर विषयक कार्यशाला

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्येताओं को 'विदुर' की कार्य प्रणाली से परिचित कराने के उद्देश्य से, केन्द्र (नई दिल्ली) में, दिसम्बर, 1994 में एक दो-दिवसीय आंतरिक कार्यशाला आयोजित की गई। राष्ट्रीय साफ्टवेयर प्रौद्योगिकी केन्द्र के विशेषज्ञों ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के 15 अनुसंधान कर्मचारियों को पैकेज के प्रयोग का प्रशिक्षण दिया।

2. 'गीतगोविन्द' पर बहु-माध्यमिक परियोजना

बहु-माध्यमिक प्रस्तुतिकरण संबंधी विकास कार्य के लिए एक ऐपल मैकिन्टोश कम्प्यूटर प्रणाली प्राप्त की गई। 'गीतगोविन्द' पर एक प्रोटो-टाइप बहु-माध्यमिक प्रस्तुति विकसित की गई। इस प्रणाली में, शाब्दिक पाठ, चित्रात्मक बिम्बों, नृत्य तथा संगीत को समेकित करने का प्रयास किया गया है। सम्बन्धित सूचना प्राप्त करने के लिए नमूने के तौर पर एक यूजर इंटरफेस विकसित किया गया है। इसे विकसित करने में देवनागरी लिपि के संबंध में पाठ-पुनर्गठन की भिन्न-भिन्न सुविधाओं, विम्ब समायोजन (चमक/विपरीत रंग, वर्ण परिवर्तन, अचानक घटाना/बढ़ाना आदि) और विशेष प्रभावों के साथ ध्वनि सम्पादन की सुविधाओं का उपयोग किया गया।

उपर्युक्त अनुभव के साथ, 'गीतगोविन्द' पर एक पूर्ण बहुमाध्यमिक प्रस्तुति विकसित करने के लिए एक सांगोपांग परियोजना की रूपरेखा तैयार की गई है। कार्य प्रगति पर है।

कार्यक्रम ग : सांस्कृतिक अभिलेखागार

भारत के विभिन्न पारम्परागत तथा लोक कलारूपों की रक्षा करना यहां की सांस्कृतिक धरोहर को समझने और उसे समृद्ध बनाने के लिए आवश्यक है। इस कार्य में सामग्री का पता लगाना, उसका संग्रह तथा उत्पादन करना और वर्गीकरण करना शामिल है ताकि वह अनुसंधान तथा संदर्भ के लिए तुरन्त उपलब्ध हो सके। यह दुर्वह दायित्व कलानिधि प्रभाग के सांस्कृतिक अभिलेखागार की गतिविधियों के अन्तर्गत आता है। देश के अनेक विद्वानों तथा कला मर्मज्ञों के आजीवन प्रयास के फलस्वरूप अस्तित्व में आए उनके व्यक्तिगत संग्रह आज इन अभिलेखागारों में उपलब्ध हैं। गहन अनुसंधान पर आधारित श्रव्य-दृश्य सामग्री प्राप्त करना भी इस अनुभाग का काम है।

आलोच्य वर्ष में, सांस्कृतिक अभिलेखागार ने अनुसंधान तथा प्रलेखन परियोजनाओं पर विशेष बल दिया। वर्ष 1994-95 में सम्पन्न किया गया। उल्लेखनीय कार्य था शिक्षण विधियों तथा कला परम्पराओं के प्रलेखन के अलावा, कुछ मृतप्राय कलाओं तथा वयोवृद्ध कलाकारों के विषय में प्रलेखन।

समीक्षाधीन वर्ष में इस अनुभाग द्वारा हाथ में लिए गए कुछ प्रमुख कार्यकलापों का ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है:-

व्यक्तिगत संग्रह

सांस्कृतिक अभिलेखागार ने नई प्राप्तियों से अपने संग्रहों को समृद्ध बनाने का काम जारी रखा। इन प्रलेखनों को आसानी से हस्तगत करने और उनका उपयोग करने के लिए सामग्री को साहित्य, वास्तु, शिल्प, छाया-पट, संगीत, नृत्य, और नाट्य जैसे विभिन्न शीर्षों के अन्तर्गत वर्गीकृत किया गया। वर्ष 1994-95 तक प्राप्त किए गए महत्त्वपूर्ण संग्रहों का ब्यौरा नीचे दिया गया है:—

1. शम्भुनाथ मित्र संग्रह

पश्चिम बंगाल के हुगली, हावड़ा, वीरभूम, बांकुड़ा और बुर्दवान जिलों में मृण्मूर्ति वाले मंदिरों के आलंकारिक पक्षों के फोटो-प्रलेखन का कार्य पूरा हो गया है। इस विषय क्षेत्र के 72 वर्षीय विशेषज्ञ श्री शम्भुनाथ मित्र को प्रथम दो जिलों का काम पूरा करने के लिए केन्द्र द्वारा विशेष रूप से अनुरोध किया गया था। अन्य जिलों से संबंधित संग्रह श्री मित्र से पहले प्राप्त कर लिया गया था। इस प्रकार अब इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में पश्चिम बंगाल के मध्ययुगीन ईंट निर्मित मंदिरों के स्थापत्य फलकों सहित मृण्मूर्ति अलंकरण के व्यापक तथा प्रामाणिक फोटो-प्रलेख उपलब्ध हैं।

परियोजना अनुसंधान एवं क्षेत्र अध्ययन

1. टैगोर की आवाज (श्रव्य)

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर द्वारा कुछ चुनी हुई कविताओं के पाठ की आडियो रेकार्डिंग पहले प्राप्त की थी। लेकिन यह रेकार्डिंग पुराने तथा अविकसित ऑडियो फॉरमैट में की हुई थी इसलिए वह आमतौर पर बजाने व सुनने लायक नहीं थी। केन्द्र ने अब इस सामग्री को डिजिटल फॉरमैट तथा कैसेटों में भर लिया है, जो संगीत प्रेमियों तथा शोधकर्ताओं को सुनने में सुविधाजनक है।

2. भ्रमर गीत

यह भगवान कृष्ण के जीवन के एक सुप्रसिद्ध प्रसंग की प्रस्तुति थी जिसमें श्रीकृष्ण के गोकुल से मथुरा को प्रस्थान के बाद प्रेम-दीवानी गोपियों से उनके वियोग का मार्मिक चित्रण है और बाद में उन गोपियों को समझाने के लिए भेजे गए उनके दूत उद्धव के प्रयासों का वर्णन है। डॉ० प्रेमलता शर्मा ने डॉ० रंजना श्रीवास्तव की नृत्य प्रस्तुति के साथ इसका निरूपण किया था। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा इसकी दो घण्टे की वीडियो रेकार्डिंग की गई है। इसका लगभग 45-45 मिनट के दो भागों में एक छोटा संस्करण भी तैयार किया गया है। वीडियो संस्करण का निर्देशन इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के श्री गोपाल सक्सेना ने किया है।

3. थांग-ता पर प्रलेखन

मणिपुर की युगों पुरानी युद्धकला के इस रूप के प्रलेखन का काम ऑडियो तथा वीडियो दोनों फॉरमैट में हाथ में लिया गया। यह रेकार्डिंग इस कला से संबद्ध कुछ अग्रगण्य गुरुओं के साथ गहन साक्षात्कार और प्रदर्शित कार्यक्रमों पर आधारित है। इसकी अवधि यू-मैटिक हाई-बैंड फॉरमैट में लगभग 6 घण्टे की है।

4. रिडिफाइनिंग दि आर्ट्स (इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पर फिल्म)

भारत के एक जाने-माने फिल्म निर्माता पंडित अरुण कौल के निर्देशन में एक वृत्तचित्र तैयार किया गया है जिसमें इस केन्द्र के उद्देश्यों, कार्यकलापों और भावी योजनाओं को उजागर किया गया है। यह फिल्म यू-मैटिक हाई-बैंड फॉरमैट में उपलब्ध है और इसकी अवधि 60 मिनट है। 20 मिनट की अवधि वाला एक छोटा संस्करण भी तैयार किया गया है।

5. त्यागेसर कुरुवानजी: श्रीमती पी.आर. तिलकम द्वारा

परम्परागत कला-रूप-त्यागेसर कुरुवानजी तिरूवरूर के भगवान त्यागराज को समर्पित है, इस कला रूप पर श्रीमती पी.आर. तिलकम के संगीत के साथ एक रेकार्डिंग तैयार की गई है। इस विशिष्ट कला-रूप की जानी-मानी व्याख्याता श्रीमती तिलकम् अब 65 वर्ष की हो रही हैं। वह तिरूवरूर मंदिर के संगीतकारों के परिवार से हैं और श्रीमती कमलंबाल की पौत्री हैं, जो तिरूवरूर मंदिर में त्यागेसर कुरुवानजी प्रस्तुत करने वाली अंतिम कलाकार थीं। यह रेकार्ड यू-मैटिक हाई-बैंड में एक घण्टा 40 मिनट की अवधि का है।

6. बौद्ध अभिषेकोत्सव

एक प्रमुख आंतरिक कार्यक्रम के रूप में, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कुछ समय पहले दिल्ली में आयोजित बौद्ध अभिषेकोत्सवों के प्रलेखन का कार्य हाथ में लिया। उनके कुछ प्रमुख सत्रों में परमपावन दलाई लामा स्वयं प्रार्थनाओं में अग्रणी रहे। परमपावन के साथ एक अनन्य भेंटवार्ता भी रेकार्ड की गई, जिसके उद्धरण अभिषेकोत्सव संबंधी विशद प्रलेखन में समाविष्ट किए गए।

7. गीतगोविन्द : एक गम्भीर अध्ययन

एक सुप्रसिद्ध विद्वान् तथा साहित्यकार प्रो० विद्यानिवास मिश्र के साथ हुई भेंटवार्ता पर आधारित एक वीडियो रेकार्डिंग में, वैष्णव सम्प्रदाय की एक महान् कृति जयदेव के *गीतगोविन्द* के विभिन्न पक्षों पर चर्चा की गई। इस विषय की विशेषज्ञा डॉ० कपिला वात्स्यायन द्वारा यह बातचीत की थी।

8. संतोकबा विषयक प्रलेखन

गुजरात की श्रीमती संतोकबा दूधत ने अपनी चित्रकारियों (पेंटिंग्स) के माध्यम से अपनी कला-प्रतिभा को अभिव्यक्ति दी। इनकी ये चित्रकारियां कपड़े के बड़े सिमटने वाले थानों (फड़) पर की गई हैं और *रामायण* तथा *महाभारत* महाकाव्यों के कथा प्रसंग इनके विषय हैं। उन्होंने स्कूल में जाकर कभी कोई औपचारिक शिक्षा या प्रशिक्षण नहीं लिया था, फिर भी वह चित्रकला के क्षेत्र में अपने समय की एक दुर्लभ विभूति बन गईं। उनके कार्य तथा व्यक्तित्व का वीडियो प्रलेखन इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की उल्लेखनीय उपलब्धि है।

9. डूंगरी भीलों (गुजरात) के गीत तथा नृत्य

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा वर्ष की भिन्न-भिन्न ऋतुओं में गुजरात के डूंगरी भीलों के तीज-त्यौहारों से जुड़े लोक गीतों तथा नृत्यों के प्रलेखन का कार्य लोक साहित्यविद् डॉ० भगवानदास पटेल को सौंपा गया।

कार्यक्रम को स्थानीयता की रंगत व झलक प्रदान करने के लिए इनकी रेकार्डिंग दूरस्थ क्षेत्रों में की गई। ये वी.एच.एस. तथा ऑडियो फॉरमैटों में उपलब्ध हैं जिनमें से पहला डेढ़ घण्टे का तथा दूसरा ढाई घण्टे का कार्यक्रम है।

10. मुंशी प्रेमचन्द-कुछ संस्मरण

हिन्दी के महान् उपन्यासकार तथा कहानी लेखक मुंशी प्रेमचन्द के पुत्र अमृतराय जो स्वयं एक अच्छेद साहित्यकार हैं, ने डॉ० कपिला वात्स्यायन के साथ अपनी भेंटवार्ता में अपने यशस्वी पिता के विषय में अपने संस्मरण व्यक्त किए। उन्होंने अपने पिता के लेखक, पिता तथा मानव स्वरूपों पर चर्चा की।

नई तकनीकी सुविधाएं

(1) ऑडियो स्टूडियो

रेकार्डिंग की सामान्य सुविधाओं के साथ एक ऑडियो स्टूडियो चालू किया गया। इसका उपयोग थोड़े से व्यक्तियों/कलाकारों के साथ भेंटवार्ता, विचार-विमर्श जैसे साधारण वीडियो कार्यक्रमों के लिए किया जा सकता है। इसकी स्थापना से केन्द्र के अल्पसूचना कार्यक्रम की रेकार्डिंग, विशेष रूप से देशविदेश से कुछ समय के लिए आने वाले कलाकारों के कार्यक्रमों की रेकार्डिंग संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति हो गई है।

(2) सम्पादन उपस्कर की स्थापना

प्रो-बीटाकाम फॉरमैट में वीडियो सम्पादन का सम्पूर्ण उपस्कर केन्द्र को फोर्ड फाउण्डेशन के अनुदान के अन्तर्गत प्राप्त

हो गया है। इसके संचालन से, केन्द्र अब निर्माणकालीन तथा निर्माणोत्तर सम्पादन की अपनी आवश्यकताएं आंतरिक रूप से पूरी करने में सक्षम हो गया है।

फिल्मों/वीडियो कार्यक्रमों की प्राप्ति

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने विभिन्न राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्रोतों से अनेक प्रसिद्ध फिल्में तथा वीडियो कार्यक्रम प्राप्त किए। इनमें 'पावर ऑफ मिथ' नामक विश्वविख्यात फिल्में शामिल हैं। इस श्रृंखला की जॉसेफ कैम्पबेल की निम्नलिखित फिल्में उल्लेखनीय हैं:

1. i. **दि हीरोज एडवेंचर (58 मिनट):** इस फिल्म में कैम्पबेल और मॉयर्स ऐसे अनेक शूरवीरों के अवदानों/शौर्यकर्मों के बारे में बातचीत करते हैं जिनकी शौर्य गाथाएं इतिहास के पन्नों में अंकित हैं।

   ii. **दि मैसेज ऑफ दि मिथ (58 मिनट):** इसमें कैम्पबेल दुनिया भर के सृष्टि के उत्पत्ति संबंधी मिथकों की परस्पर तुलना करता है। वह प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वयं के जीवन में एक शौर्य-यात्रा की उपस्थिति देखने के लिए उद्बोधन देता है।

   iii. **दि फास्ट स्टोरीटेलर्स (58 मिनट):** इस फिल्म में कैम्बेल और मॉयर्स बताते हैं कि प्राचीन मिथक इस तरह के बनाए गए हैं ताकि हमारे मन और शरीर में सामंजस्य स्थापित हो।

   iv. **मास्क्स ऑफ ईटर्निटी (58 मिनट):** ईश्वर की छवियां अनन्त हैं, कैम्पबेल ने उन्हें "अनन्त के मुखौटे" कहा है और महसूस किया है कि ये मुखौटे ईश्वरीय महिमा को छिपाते भी हैं और प्रकट भी करते हैं।

   v. **सैक्रिफाइस एण्ड ब्लिस (58 मिनट):** जैसे-जैसे हमारे पूर्वज शिकारी जीवन से कृषि की ओर मुड़ते गए, वैसे-वैसे ही कहानियां जीवन के रहस्यों की व्याख्या करती गईं, उदाहरणार्थ, मृत्यु से जीवन आता है और त्याग/बलिदान से परमानन्द।

   vi. **लव एण्ड दि गोडेस (58 मिनट):** इस फिल्म में कैम्पबेल ने प्रेम मिथकशास्त्र यानी पौराणिक कथाओं और उनकी व्याख्याओं पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। कैम्पबेल ने ईसामसीह, रामकृष्ण, विलियम ब्लेक, थॉमस मान आदि के जीवन से निष्कर्ष निकाले हैं।

2. **कलरिप्पयत (35 मिनट)**

   अडूर अशोक कुमार निर्मित यह वृत्तचित्र केरल के युद्धकला रूप पर है। यह फिल्म केरल के कलरियों यानी वास्तविक प्रशिक्षण स्थलों पर शूट की गई है।

3. **कला ऑफ एब्सेंस (30 मिनट)**

   अरुण खोपकर की यह फिल्म प्रसिद्ध कलाकार जहांगीर साबवाला के जीवन तथा कार्यों पर आधारित है।

4. **अर्थ ऐज विटनेस : ए डायलॉग विद बुद्धिस्त (45 मिनट)**

   (भूमि साक्षी है: एक बौद्ध के साथ संवाद)

   इस वृत्तचित्र में बौद्ध-धर्म तथा पर्यावरण के बीच निकट का संबंध दर्शाया गया है।

आन्तरिक प्रलेखन कार्य

वर्ष के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा आयोजित विभिन्न संगोष्ठियों/कार्यशालाओं/समारोहों का दृश्य-श्रव्य प्रलेखन आंतरिक रूप से किया गया। इनमें उल्लेखनीय हैं:

(i) **डेविड उलरिच के फोटोग्राफों की प्रदर्शनी:** इस प्रदर्शन में प्रकृति की सुन्दरता तथा उदारता को अभिव्यक्त करने वाले और शैलकला के अपरिष्कृत एवं अनघड़ वैभव को चित्रित करने वाले कुछ चुने हुए छाया चित्र प्रदर्शित किए गए।

(ii) **राबारी कशीदाकारी के छायाचित्रों की प्रदर्शनी:** यह राबारी जनजाति की जीवन शैली पर किए गए अध्ययन एवं अनुसंधान पर आधारित है।

(iii) **राजा दीनदयाल के कुछ चुने हुए ऐतिहासिक छायाचित्रों की एक प्रदर्शनी** मुंबई में लगाई गई.

फिल्म प्रदर्शन

सांस्कृतिक अभिलेखागार में संगृहीत फिल्मों और वीडियो कार्यक्रमों में से निम्नलिखित फिल्मों का सार्वजनिक प्रदर्शन इंडिया इंटरनैशनल सैंटर में किया गया :

(i) लाई हरौबा: डॉ० अरिथाम श्याम शर्मा द्वारा निर्देशित।

(ii) दुवाईस जॉय एण्ड फ्रीडम: हैमन्ती बेनर्जी द्वारा निर्मित।

कार्यक्रम घ: क्षेत्र अध्ययन

कलानिधि प्रभाग इस कार्यक्रम के अन्तर्गत कुछ ऐसे विशिष्ट क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करता है जिनके साथ भारत के घनिष्ठ संबंध रहे हैं।

क. दक्षिणपूर्व एशियाई अध्ययन

दक्षिण-पूर्व एशियाई अध्ययनों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से, इंडोनेशिया की परम्परागत औषधियों, तंत्रों, मंत्रों और प्राचीन इंडोनेशिया के निवासियों के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन विषयक 200 से अधिक पाण्डुलिपियां वहां विभिन्न पुस्तकालयों से प्राप्त करने के लिए चुनी गई। इसके अलावा, दक्षिण-पूर्व एशिया से संबंधित सामाजिक विज्ञानों के विभिन्न विषयों की 200 से अधिक पुस्तकों तथा माइक्रोफॉर्म में उपलब्ध छह दुर्लभ ग्रंथों का पता लगाया गया।

डोंगसन संस्कृति का ग्रंथसूचीय अध्ययन

वियतनाम की डोंगसन संस्कृति (ताम्रयुगीन संस्कृति), जिसका काल ई०पू० 7वीं शताब्दी से ईसा की पहली शताब्दी तक था, विषयक ग्रंथसूची तैयार करने के लिए स्रोत सामग्री इकट्ठी की गई और 70 शीर्षकों का सूचक तैयार किया गया।

इस वर्ष, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में दक्षिण-पूर्व एशिया विषयक दो विशेष व्याख्यान दिए गए; उनमें से एक का विषय था—'वियतनाम के चम मंदिर' जो श्री जे.सी. शर्मा द्वारा दिया गया था और दूसरा डॉ० नीरु मिश्र द्वारा 'गरुड थाई कला में' विषय पर दिया गया।

ख. पूर्व एशियाई अध्ययन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने 'भारत तथा चीन की गुफा कला' विषय पर एक संगोष्ठी सत्र का सह-प्रायोजन किया और अपने तीन विद्वानों/अध्येताओं को 9 से 15 अगस्त, 1994 तक चीन में आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने के लिए उच्च कोटि के शोध पत्रों के साथ भेजा। संगोष्ठी दुनहुआंग अकादमी के स्वर्ण जयन्ती समारोहों के अन्तर्गत आयोजित की गई थी। इस अवसर पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने *दुनहुआंग आर्ट फ्रॉम दि आइज ऑफ दुआन वेनजी* नामक पुस्तक की पांच प्रतियां प्रो० दुआन वेनजी को दुनहुआंग (चीन) में भेंट की।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्येताओं ने इस पुस्तक का अनुवाद किया है। यह पुस्तक अंग्रेजी भाषा में अब तक दुनहुआंग कला की सर्वाधिक विशद प्रस्तावना है और विश्व भर में दुनहुआंग अध्ययन, जिसे दुनहुआंगशास्त्र कहा जाता है, के प्रति भारत की ओर से महत्त्वपूर्ण योगदान है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रधान मंत्री श्री पी.वी. नरसिंहराव की 1993 में चीन यात्रा की अनुवर्ती कार्रवाई के रूप में वहां के लौंगमैन गुफा संस्थान के साथ सहयोग करने के लिए भी कदम उठाए हैं। इसी क्रम में आशा की जाती है कि वर्ष 1995-96 में नई दिल्ली में लौंगमैन गुफाओं पर एक प्रदर्शनी तथा भारत और चीन की शिलातक्षित प्रतिमाओं पर एक लघु संगोष्ठी आयोजित की जाएगी।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र "भारत-चीन" पुस्तकालयों की एक प्रकाशन परियोजना प्रारंभ करने का प्रस्ताव कर रहा है जिसका उद्देश्य दोनों देशों के इतिहास, दर्शन, धर्म, संस्कृति तथा कला के विषय में तुलनात्मक तथा अन्तर सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में सहयोग के प्रयास करते हुए उत्तम कोटि के शोध ग्रंथों को प्रकाशित करना है।

16 फरवरी, 1995 को केन्द्र में एक संगोष्ठी की गई, विषय था "भारत और चीन : परस्पर दृष्टि"। इस संगोष्ठी में चीन विषय पर भारत के विशेषज्ञों तथा केन्द्र के अध्येताओं के अलावा भारत में रह रहे चीनी विद्वानों ने भाग लिया। भारतीय विद्वानों ने चीन की सभ्यता के विषय में अपनी जानकारी व्यक्त की और चीन के विशेषज्ञों ने भारत के विषय में अपने विचार प्रस्तुत किए। इसके साथ ही इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में एक दीर्घकाल तक चलने वाली परियोजना का श्रीगणेश हुआ।

ग. स्लाविक तथा मध्य एशियाई अध्ययन

इनियन

सितम्बर, 1994 में अपनी रूस यात्रा के दौरान प्रो० एम.के. पालत के अनुसंधान सामग्री के प्रतिलिपि कार्य विषयक समझौते में हुई प्रगति को जानने के लिए मास्को (रूस) स्थित 'इनियन' (सामाजिक विज्ञान का वैज्ञानिक सूचना संस्थान, रूसी विज्ञान अकादमी) का दौरा किया। छह अनुसंधान सामग्री को चुन लिया गया और उसकी माइक्रोफिश प्रतियां तैयार करने के लिए इनियन को आर्डर दिए गए।

वर्ष 1994-95 के दौरान कुल मिलाकर 1,595 माइक्रोफिशें यानी प्रतिमाह औसतन 133 माइक्रोफिशें प्राप्त हुईं।

ओल्डनबर्ग की रचनाएं

ओल्डनबर्ग की कृतियों की संपूर्ण सूची का अनुवाद केन्द्र के कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता थॉमस मैथ्यू द्वारा तैयार किया गया। इस सूची में से कुछ रचनाएं छाँटकर उनकी सूची मास्को भेजी गई। मास्को में शिक्षाविद् योनगार्ड लेपिन इन रचनाओं की जांच करेंगे और उन्हें अनुवाद के लिए यहां भेजेंगे। ये रचनाएं चयन संबंधी अन्य सुझावों के साथ उस समय प्राप्त होंगी जब मास्को विश्वविद्यालय के डॉ० विगैसिन 1995 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र आएंगे।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र 19वीं तथा 20वीं शताब्दियों के "संक्रमणकाल में रूस में बहु-विध सारूप्यताएं" विषय पर भारत वर्ष 1995-96 में भारत में एक संगोष्ठी का प्रबन्ध करना चाहता है। इस संगोष्ठी में योगदान देने वाले विभिन्न व्यक्तियों से पत्र-व्यवहार चल रहा है। कम से कम सात व्यक्तियों ने इस बात की पुष्टि कर दी है कि वे इस संगोष्ठी के विषय पर लिखेंगे और इसमें भाग लेंगे।

प्राच्य संस्थान, सेंट पीटर्सबर्ग

श्रेष्येतर भारतीय भाषाओं की पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्में बनाने के विषय में पत्र-व्यवहार प्रारंभ हो गया है।

मध्य एशियाई पुरातत्त्वों का प्रलेखन कार्य

1. विश्व के विभिन्न संग्रहों में उपलब्ध मध्य एशियाई पुरातात्त्विक वस्तुओं के प्रलेखन कार्य के लिए, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा पहले ही कार्रवाई प्रारंभ की जा चुकी है। इस परियोजना की रूपरेखा यूनेस्को के विचारार्थ प्रस्तुत की गई है ताकि यह परियोजना उनकी सहायता से सम्पन्न की जा सके। रूस तथा यूरोप की संबंधित संस्थाओं से इस विषय में संपर्क बनाना प्रारंभ कर दिया गया है।

पुस्तकालय : खरीदारी तथा कैटलॉग बनाने का कार्य

1. पुस्तकों की खरीद बराबर चलती रहती है।

2. इण्डेक्स सिरीज के लिए आई.डी.सी. से माइक्रोफिल्म पर प्राप्त 8 रूसी भाषा धारावाहिकों की विषय-वस्तु की सारणियाँ पूरी की जा चुकी हैं।

इस्लामिक तथा जरतुश्ती सांस्कृतिक धरोहर का प्रलेखन

इस्लामिक सांस्कृतिक धरोहर

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने इस्लामिक शिक्षा पर प्राथमिक स्रोत सामग्री तथा सुसंगत सूचना प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत तथा भारत से बाहर स्थित इस्लामिक शिक्षा केन्द्रों से सम्पर्क स्थापित किए हैं।

इस्लामिक संस्कृति से संबंधित पाण्डुलिपियों के महत्त्वपूर्ण संग्रहों का प्रारंभिक सर्वेक्षण जामिया हमदर्द (जो पहले भारतीय इस्लामिक अध्ययन संस्थान कहलाता था); गवर्नमेंट ऑरिएंटल मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, मद्रास, और जामी मस्जिद, मुंबई तथा टोंक स्थित अरबी व फ़ारसी के प्राच्य शोध संस्थान में अनेक विशेषज्ञों की सहायता से किया गया है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने भारत में दरगाहों तथा अन्य महत्त्वपूर्ण संग्रहालयों में उपलब्ध पाण्डुलिपियों के सर्वेक्षण का काम हाथ में लिया है और इस संबंध में (1) डॉ० जेड.ए. देसाई, 14 खुर्शीद पार्क, संखेज रोड, अहमदाबाद; (2) प्रो० निसार अहमद फारूक्वी, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली; (3) प्रो० मोहम्मद सुलेमान सिद्दीकी, निदेशक, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद; और श्री मोहम्मद लाइकिद्दीन, अध्यक्ष, कर्नाटक वक्फ बोर्ड, बंगलोर से अनुरोध किया है कि वे सांस्कृतिक धरोहर, विशेष रूप से अहमदाबाद तथा गुलबर्गा में उपलब्ध इस्लामिया परम्परा, धर्म, दर्शन, साहित्य, सूफीवाद तथा कला के संबंधित पाण्डुलिपियों के प्रलेखन कार्य में केन्द्र की मदद करें।

धार्मिक इबादत की एक बहुत पुरानी विधि "करखा" जो अजमेर में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर गाया जाता है, पर एक पूरी लम्बाई की फिल्म तैयार करने की योजना है। "करखा" एक तरह का लोक-गीत ही है जिसका भारत के युद्ध-गीतों में महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह आमतौर पर किसी युद्ध का वीररसपूर्ण वर्णन होता है या लोक प्रिय शूरवीरों की प्रशंसा में गाया जाता है। पुराने जमाने में यह रणभूमि में लड़ रहे सैनिक का उत्साह बढ़ाने के लिए गाया जाता था। कालान्तर में यह राजदरबारों तथा गांव देहात की चौपालों तक पहुंच गया ऐसा समझा जाता है। "करखा" का एक रोचक पहलू है कि यह प्रारंभ में राग सारंग में गाया जाता था। कव्वालियों तथा अन्य धार्मिक गीतों के साथ मिलकर "करखा" अब भी उन धार्मिक क्रियाओं का हिस्सा है जो अजमेर की दरगाह शरीफ के मुख्य द्वार को बंद करते समय हर रात पूरी की जाती हैं।

प्रो० जेड. ए. वाजिद ने "करखा" का गहराई से अध्ययन किया है; इस प्रलेखन कार्य से संबंधित अनुसंधान तथा आलेखन कार्य के लिए उनकी सेवाएं ली गई हैं। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का निर्माण दल जिसमें प्रो० वाजिद भी शामिल थे, प्रारंभिक सर्वेक्षण के लिए जुलाई, 1994 में अजमेर गया।

जरतुश्ती सांस्कृतिक धरोहर

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने जरतुश्त-धर्म की पुस्तकों तथा पाण्डुलिपियों की सूची बनाने के लिए श्रीमती पीलू एन. जंगलवाला से संपर्क स्थापित किया।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने नई दिल्ली के सुश्री नोरनाज कामा की मदद से जरतुश्ती अध्यन विषयक पुस्तकों के संग्रह के लिए कदम उठाए हैं। सुश्री कामा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को सूरत के श्री नोशिर जंगलवाला से एक पुस्तक संग्रह दान में दिलवाने के लिए भी प्रयत्नशील हैं।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने इस विषय पर महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों को प्राप्त करने के लिए मुंबई के कामा प्राच्य संस्थान (ओरिएंटल इन्स्टीट्यूट) से सम्पर्क किया है।

कलाकोश

(अनुसंधान एवं प्रकाशन प्रभाग)

कलाकोश प्रभाग कलाओं से जुड़ी बौद्धिक परम्पराओं का उनके बहुस्तरीय एवं बहुविषयक संदर्भों में अनुसंधान करता है। केन्द्र के मुख्य अनुसंधान तथा प्रकाशन प्रभाग के रूप में, यह पाठ्य को मौखिक के साथ, दृश्य को श्राव्य के साथ और सिद्धान्त पक्ष को व्यवहार पक्ष के साथ जोड़ते हुए, कलाओं को एक सांस्कृतिक प्रणाली के समग्र ढांचे के भीतर स्थापित करने का प्रयास करता है।

इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इस प्रभाग ने (क) उन प्राथमिक संकल्पनाओं का पता लगाया है जो भारतीय विश्व दृष्टिकोण की मूलाधार हैं और जो सभी विषयों/शास्त्रों तथा जीवन के आयामों में व्याप्त हैं; (ख) प्राथमिक ग्रंथों की स्रोत सामग्री को जो अब तक अज्ञात, अप्रकाशित और अप्राप्य थी, अनुवाद के साथ मूल भाषा में प्रकाशित करने के लिए निर्धारित किया है; (ग) उन विद्वानों तथा विशेषज्ञों की कृतियों के प्रकाशन की योजना बनाई है जो अपने ही समग्रवादी दृष्टिकोण के माध्यम से अन्तर-सांस्कृतिक पद्धति तथा बहुविषयक रीति से कलात्मक परम्पराओं को समझने में अग्रणी रहे हैं; और (घ) एक 21-खण्डीय विश्वकोश के निर्माण का कार्यक्रम प्रारम्भ करने के लिए योजना का प्रारूप तैयार किया है।

प्रभाग का कार्य मुख्य रूप से चार बड़ी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:—

क.	**कलातत्त्वकोश**	: आधारभूत संकल्पनाओं का कोश और पारिभाषिक शब्दावलियां।
ख.	**कलामूलशास्त्र**	: उन आधारभूत ग्रंथों की माला जो भारतीय कलात्मक परम्पराओं की बुनियाद है और प्राथमिक ग्रंथ जो किसी कला विशेष से संबंधित हैं।
ग.	**कलासमालोचन**	: समीक्षात्मक पांडित्य तथा अनुसंधान की ग्रंथमाला, और
घ.	**कलाविश्वकोश**	: कलाओं का एक बहुखंडीय विश्वकोश; भारत की मुद्राशास्त्रीय कलाओं पर एक खण्ड।

कार्यक्रम क: कलातत्त्वकोश

कलाकोश प्रभाग का पहला कार्यक्रम है भारतीय कलाओं की आधारभूत संकल्पनाओं का कोश। विभिन्न विद्वानों के परामर्श से, दिवंगत तर्कतीर्थ लक्ष्मण शास्त्री जोशी के सर्वोपरि मार्गदर्शन में, ऐसे लगभग 250 पारिभाषिक शब्दों की सूची तैयार की गई जो अनेक शास्त्रों के मूल/प्राथमिक ग्रंथों में व्यवहृत हुए हैं और जिनका बीज कलाओं में दृष्टिगोचर होता है। प्रत्येक संकल्पना का अनुसंधान अनेक शास्त्रों/विषयों के प्राथमिक ग्रंथों के माध्यम से किया जाता है जिससे एक पारिभाषिक शब्द को चुना जा सके जिसका एक मुख्य अर्थ और व्यापक स्वरूप हो, लेकिन कालांतर में उसी शब्द के अनेक अर्थ विकसित हो गए हों। ऐसे संकलन, विश्लेषण तथा पुनः एकत्रीकरण के द्वारा भारतीय परंपरा की मूलभूत एकता और उसके अनिवार्य अन्तरशास्त्रीय स्वरूप का पुनर्निर्माण किया जा सकेगा। जैसा कि इससे पहले की रिपोर्टों में बताया गया है, कलातत्त्वकोश का प्रथम खण्ड 1988 में प्रकाशित किया गया। इसमें आठ पारिभाषिक शब्दों का विवेचन किया गया है। इसका द्वितीय खंड जो दिक् तथा काल से संबंधित 16 पारिभाषिक शब्दों के बारे में है, मार्च, 1992 में विमोचित किया गया।

कलातत्त्वकोश का तीसरा खण्ड जिसमें महाभूतों के विषय में आठ लेख है, निर्माणाधीन है और 1995 में प्रकाशित कर दिया जाएगा। 480 से अधिक पृष्ठों के इस खण्ड में निम्नलिखित शब्दों पर चर्चा की गई है:—

1. *प्रकृति*
2. *भूत/महाभूत*
3. *आकाश*
4. *वायु*
5. *अग्नि*
6. *ज्योतिष्/तेजस्/प्रकाश*
7. *अप्*
8. *पृथिवी/भू/भूमि/भूमिका*

इन निबन्धों के सम्पादन तथा प्रूफ पढ़ने का काम चल रहा है और इस भाग के लिए चित्रों के चयन का काम लगभग पूरा हो चुका है।

वर्ष (1994-95) के दौरान, 2,100 डेटा रिकार्डिंग कार्ड तैयार किए गए, जिनमें से लगभग 800 कार्ड "आकार" शब्द पर हैं और शेष अन्य शब्दों पर। चौथे खण्ड के लिए कार्ड बनाने का काम लगभग पूरा हो चुका है।

कार्यक्रम ख: कलामूलशास्त्र

कलाकोश प्रभाग का दूसरा दीर्घकालिक कार्यक्रम है—

वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला से लेकर संगीत, नृत्य, नाट्य तक की भारतीय कलाओं से संबंधित आधारभूत ग्रंथों का पता लगाना और उनका समालोचनात्मक सम्पादन करके टीका-टिप्पणियों तथा अनुवाद के साथ उन्हें ग्रंथमाला के रूप में प्रकाशित करना।

वर्ष 1988-89 में कुछ प्रकाशनों के विमोचन के साथ इस कार्यक्रम का प्रारंभ करते हुए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने कलामूलशास्त्र की ग्रंथमाला के अन्तर्गत मार्च, 1994 तक ये ग्रंथ प्रकाशित किए थे:

(1) **मात्रालक्षणम्** : यह सामवेद के सस्वर पाठ की शैली को दर्शाने वाला एक मौलिक रूप से महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है जिसमें समय की मात्रा की संकल्पना पर विचार किया गया है।

(2) **दत्तिलम्** : यह वैदिक संगीत के प्रतिरूप या प्रतिपक्ष का सार-संग्रह है और अवैदिक संगीत का मूलाधार है।

(3) **श्रीहस्तमुक्तावली** : इसमें भारत के पूर्वी प्रदेशों में ज्ञात हस्तो (हस्त संकेतों) की भाषा का विवेचन किया गया है।

(4) **कविकर्णोर पाला,** (4 खण्डों में) : यह एक 17वीं शताब्दी की रचना है जिसमें कविकर्ण के 'सोलो पाला' यानी भगवान सत्यनारायण के गुणानुवाद के 16 संगीतात्मक पदों का संकलन है।

(5) **बृहद्देशी** (मतङ्ग रचित) खण्ड 1 : यह संगीत विषयक एक प्राचीन ग्रंथ है जिसमें रागों का वर्णन किया गया है; 'श्रुति', 'स्वर', 'ग्राम', 'मूर्च्छना' आदि के बारे में नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है, और 'देशी' तथा उसके प्रतिरूप 'मार्ग'' की संकल्पना को प्रतिष्ठापित किया गया है।

(6) **कालिकापुराणे मूर्तिविनिर्देश** : यह कालिका पुराण में से लिए गए लगभग 550 श्लोकों का संग्रह है जिसमें अनेक देवी-देवताओं तथा अंशावतारों आदि का शारीरिक वर्णन किया गया है; इसके सम्पादक तथा अनुवादक विश्वनारायण शास्त्री हैं।

आलोच्य वर्ष 1994-95 के दौरान कलामूलशास्त्र ग्रंथमाला के अन्तर्गत निम्नलिखित ग्रंथ प्रकाशित किए गए हैं:—

(1) **बृहद्देशी** (मतङ्ग रचित) खण्ड-2 : भारतीय संगीत का आधारभूत ग्रंथ; सम्पादक तथा अनुवादक : प्रेमलता शर्मा।

(2) **नर्तननिर्णय,** खण्ड 1 (2-क. 1-2) : एक मुगलकालीन कृति जिसमें दक्षिण तथा उत्तर भारतीय दोनों ही परम्पराओं के नृत्य तथा संगीत का विवेचन किया गया है (मूल लेखक : कर्नाटक निवासी पण्डारिक विट्ठल) सम्पादक तथा अनुवादक: आर० सत्यनारायण।

(3) **स्वायम्भुवसूत्रसंग्रह** (3.9) : दक्षिण भारत के शैव-सैद्धान्तिक सम्प्रदाय से संबंधित एक क्षेत्रीय आगमिक ग्रंथ; सम्पादक तथा अनुवादक: पी.एस. फिलियोजा।

(4) **मयमतम्,** खण्ड 2 (2 ग. 7) : दक्षिण भारतीय स्थापत्य परम्पराओं पर एक सुप्रसिद्ध मध्ययुगीन कृति; सम्पादक तथा अनुवादक : ब्रूनो दाजां।

(5) **काण्वशतपथब्राह्मणम्,** खण्ड 1 (1. ख. 4) : काण्व शाखा का एक कर्मकाण्डीय ग्रंथ; सम्पादक तथा अनुवादक: सी.आर. स्वामिनाथन।

(6) **शिल्परत्नकोश** : स्थापत्य कला की ओडीशी परम्परा पर एक 17वीं शताब्दी की रचना; सम्पादक तथा अनुवादक: बेट्टिना बॉमर तथा राजेन्द्र प्रसाद दास।

चार और खण्ड जो मुद्रण की अंतिम अवस्था में हैं, ये हैं:

(1) **रिसाल-ए-रागदर्पण** (2 क.ii.6): हिन्दुस्तानी संगीत पर एक मध्ययुगीन फारसी ग्रंथ; सम्पादक तथा अनुवादक: शहाब सामदी।

(2) **नर्तननिर्णय,** खण्ड 2 तथा 3 (2.क.i.2): एक 16वीं शताब्दी की रचना जिसमें भारतीय शास्त्रीय संगीत की उत्तरी तथा दक्षिणी परम्पराओं का एक साथ विवेचन किया गया है; सम्पादक तथा अनुवादक: आर. सत्यनारायण।

(3) **कृष्णगीति** (8.1): केरल की "कृष्णाट्टम्" नामक नृत्य नाटिका शैली पर 17वीं शताब्दी की एक गीति-नाट्य स्रोत कृति; सम्पादक तथा अनुवादक: सी.आर. स्वामिनाथन तथा एस.गोपालकृष्णन, और

(4) **काण्वशतपथब्राह्मणम्,** खण्ड 2 (1 ख. 4): काण्व शाखा का एक कर्मकाण्डीय ग्रंथ; सम्पादक तथा अनुवादक: सी.आर. स्वामिनाथन।

निम्नलिखित 9 कृतियों के प्रतिलिपि सम्पादन का कार्य प्रगति पर है:

1. **बौधायन-श्रौत-सूत्र** (1. ग. 3)
   कर्मकाण्ड विषयक वैदिक ग्रंथ;
   सम्पादक तथा अनुवादक: टी.एन. धर्माधिकारी
2. **लाट्यायन-श्रौत-सूत्र** (1. ग. 7)
   कर्मकाण्ड विषयक एक वैदिक सूत्र ग्रंथ,
   सम्पादक तथा अनुवादक: एच.जी. रानाडे
3. **पुष्पसूत्र** (1. घ. 5)
   सामगायन से संबंधित एक ग्रंथ,
   सम्पादक तथा अनुवादक : जी.एच. तारलेकर

4. **कलाधार** (1.ङ.1)
कला संबंधी प्राचीन मूलपाठों का संकलन;
सम्पादक तथा अनुवादक : बी.एन. मिश्र

5. **चतुर्दण्डी-प्रकाशिका** (2.क.ii.2)
मुख्यत: कर्नाटक शैली के संगीत के विषय में एक 17वीं शताब्दी का निबन्ध ग्रंथ, जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ 72 **मेलों** की विकसित योजना पर विचार किया गया है;
सम्पादक तथा अनुवादक : आर० सत्यनारायण

6. **संगीत-मकरन्द** (2.क.iv.4)
भारतीय शास्त्रीय संगीत पर एक प्राचीन निबन्ध ग्रंथ;
सम्पादक तथा अनुवादक : विजयलक्ष्मी

7. **संगीत-नारायण** (2.क.iv.5)
ओडीशी परम्परा के अनुसार, संगीत तथा नृत्य पर एक मध्ययुगीन निबन्ध ग्रंथ;
सम्पादक तथा अनुवादक : मन्दाक्रान्ता बोस

8. **चित्रसूत्र : विष्णुधर्मोत्तर पुराण का** (2.ङ.2)
विष्णुधर्मोत्तर पुराण का एक भाग जिसमें चित्रकला की तकनीक का ब्यौरा दिया गया है;
सम्पादक तथा अनुवादक : पारुल दवे मुखर्जी

9. **ईश्वरसंहिता** (3.8)
एक पञ्चरात्र आगमिक ग्रंथ;
सम्पादक तथा अनुवादक : लक्ष्मी ताताचार

कुछ अन्य ग्रंथों पर कार्य प्रगति की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में है। उनकी सूची नीचे दी जा रही है:

1. **आपस्तम्ब-श्रौत-सूत्र** (1.ग.1)
कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा के अनुसार वैदिक (श्रौत कर्मकाण्ड) यज्ञ पद्धति की दीपिका;
सम्पादक तथा अनुवादक : ए. सम्पत नारायण

2. **जैमिनीय-गृह्य-सूत्र** (1.ग.4)
सामवेद की जैमिनीय शाखा के अनुसार वैदिक गृह्य कर्मकाण्ड की दीपिका,
सम्पादक तथा अनुवादक : आसको पारपोला

3. **रागविबोध** (2. क. ii.5)
भारतीय शास्त्रीय संगीत के रागों पर 17वीं शताब्दी का ग्रंथ;
सम्पादक तथा अनुवादक : रंगनायकी

4. **संगीतोपनिषत् सारोद्धार** (2.क.ii.7)
ईसा की 14वीं शताब्दी का ग्रन्थ जो भारतीय संगीत एवं नृत्य पर आधारित है
सम्पादक तथा अनुवादक : एलिन माइनर

5. **संगीत-समयसार** (2.क.iv.8)
भारतीय शास्त्रीय संगीत पर 12वीं शताब्दी का ग्रंथ;
सम्पादक तथा अनुवादक : आर. सत्यनारायण

6. **संगीत-सुधाकर** (सिंह भूपाल रचित) (2.क.iv.8)
भारतीय शास्त्रीय संगीत पर 12वीं शताब्दी का ग्रंथ;
सम्पादक तथा अनुवादक : आर. सत्यनारायण

7. **भाव-प्रकाशन** (शारदातनय रचित) (2.ख.4)
भारतीय नाट्य शास्त्र एवं अभिनय कला पर एक शास्त्रीय ग्रंथ;
सम्पादक तथा अनुवादक : जे.पी. सिंहा

8. **मानसोल्लास** (2.ग.1)
भारतीय कला तथा स्थापत्य विषयक ग्रंथ;
सम्पादक तथा अनुवादक : लक्ष्मी ताताचार

9. **प्रतिष्ठालक्षण सार-समुच्चय** (2.ग.8)
नेपाल परम्परा के अनुसार शिलान्यास संबंधी कर्मकाण्ड तथा देवस्थान स्थापत्य विषयक मध्ययुगीन ग्रंथ;
सम्पादक तथा अनुवादक : वेट्टिना बॉमर

10. **सौधिकागम** (2.ग.14)
ओडीशी परम्परा के अनुसार धर्म निरपेक्ष स्थापत्य विषयक ग्रंथ;
सम्पादक तथा अनुवादक : वेट्टिना बॉमर

11. **तंत्र-समुच्चय** (2.ग.14)
केरल परम्परा के अनुसार देवस्थान स्थापत्य विषयक ग्रंथ;
सम्पादक तथा अनुवादक : के.के. राजा

12. **साधनमाला** (2.घ.3)
वज्रयानी बौद्ध कर्मकाण्ड की पुस्तक;
सम्पादक तथा अनुवादक : सातकड़ि मुखोपाध्याय

13. **रसगंगाधर** (II.च.1)
संस्कृत काव्यशास्त्र तथा सौन्दर्यशास्त्र विषय पर उत्तर मध्ययुगीन कृति;
सम्पादक तथा अनुवादक : आर.आर. मुखर्जी

14. **सरस्वती-कण्ठाभरण** (2.च.2)
संस्कृत अलंकार शास्त्र, काव्यशास्त्र तथा सौन्दर्यशास्त्र पर 11वीं शताब्दी की रचना;
सम्पादक तथा अनुवादक : सुन्दरी सिद्धार्थ

15. **अघोरशिवाचार्य पद्धति अथवा क्रियाक्रमद्योतिका** (3.2)
शैव सिद्धान्त के अनुसार, देवालय क्रियाकर्म दीपिका (सटीक),
सम्पादक तथा अनुवादक : एस.एस. जानकी तथा रिचार्ड डेविस

16. **हयशीर्ष-पंचरात्र** (3.6)
वैष्णव धर्म के पंचरात्र सम्प्रदाय के देवालय स्थापत्य, मूर्तिकला तथा कर्मकाण्ड पर शास्त्रीय ग्रंथ;
सम्पादक तथा अनुवादक : जी.सी. त्रिपाठी

17. **मरीचि-संहिता** (3.17)
वैष्णव धर्म के वैखानस सम्प्रदाय के देवालय स्थापत्य, मूर्तिकला तथा कर्मकाण्ड पर शास्त्रीय ग्रंथ,
सम्पादक तथा अनुवादक : एस.एन. मूर्ति

18. **मंथान-भैरव तंत्र** (3.19)
नेपाल परम्परा का एक शाक्ततान्त्रिक ग्रंथ;
सम्पादक तथा अनुवादक : मार्क डिक्जकोवस्की

19. **निःश्वासतत्व-संहिता** (3.20)
नेपाल परम्परा का एक तांत्रिक ग्रंथ;
सम्पादक तथा अनुवादक : एन.आर भट्ट

20. **शारदातिलक** (3.25)
कश्मीर परम्परा का एक शाक्ततांत्रिक ग्रंथ (सटीक);
सम्पादक तथा अनुवादक : ए.बी. खन्ना

21. **तंत्रसार-संग्रह** (3.27)
माध्वमत के कर्मकाण्ड पर मध्ययुगीन ग्रंथ;
सम्पादक तथा अनुवादक : के.टी. पाण्डुरंगी

22. **शतसाहस्त्रिका-प्रज्ञा-पारमिता** (6.3)
महायान बौद्ध-धर्म तथा दर्शन पर एक प्राचीन शास्त्रीय ग्रंथ;
सम्पादक तथा अनुवादक : रत्ना बसु।

कार्यक्रम ग: कलासमालोचन

(कलाओं के समालोचनात्मक मूल्यांकन पर आधुनिक आलेख/रचनाएं)

कलासमालोचन ग्रंथमाला कलाकोश प्रभाग का तीसरा निरन्तर चलने वाला कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य 19वीं शताब्दी के अंतिम दशकों और 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों के उन पथप्रदर्शक भारत विद्या विशेषज्ञों तथा इतिहासविदों की मार्ग प्रशस्त करने वाली अग्रणी कृतियों का निर्वचन तथा विश्लेषण करना है जिन्होंने भारतीय तथा एशियाई कलाओं के संबंध में एक नए दृष्टिकोण की नींव डाली, जिसकी विशेषता दृष्टि की गहराई और विस्तार है। इस दिशा में आगे अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए कलाकोश प्रभाग ने कुछ चुने हुए लेखकों की कतिपय कृतियों के पुनर्मुद्रण/अनुवाद का कार्य प्रारम्भ किया है। चयन का आधार उनका अंतरसांस्कृतिक बोध, बहु-विषयक दृष्टिकोण तथा भाषा की कठिनाई के कारण अथवा मुद्रित न होने के कारण उनकी दुर्लभता है। इस विषय में जो प्रारंभिक प्रकाशस्तम्भ चुने गए उनमें शामिल हैं पॉल पूस, एस. ओल्डनबर्ग, विलियम स्टटरहाइम, आनन्द के० कुमारस्वामी आदि।

इस योजना के अन्तर्गत प्रकाशन का कार्य 1988 में कुछ पुस्तकों के विमोचन के साथ प्रारम्भ हुआ और मार्च, 1994 तक निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं:—

1.	*राम लेजंड एण्ड राम रितीफ्स इन इण्डोनेशिया*	लेखक: विलियम स्टटरहाइम
2.	*दि थाउजंड आर्म्ड अवलोकितेश्वर*	सम्पादक: लोकेश चन्द्र
3.	*प्रिंसिपल्स आफ कॉम्पोजिशन इन हिन्दू स्कल्पचर*	लेखक: एलिस बॉनर
4.	*इस्लामिक आर्ट एण्ड स्पिरिच्युअलिटी*	लेखक: हुसैन नस्त्र
5.	*सिलेक्टेड लेटर्स आफ रोमां रोलां*	सम्पादक: फ्रांसिस डोर एवं मैरी सौरे प्रेवोस्ट
6.	*टाइम एण्ड ईटरनल चेंज*	लेखक: जे.एम. मेलविले
7.	*इन सर्च आफ ऐस्थटिक्स फॉर पपेट थियेटर*	लेखक: माइकल मेश्के

8. *एलोरा : कॉन्सेप्ट एण्ड स्टाइल* — लेखक: कार्मेल बर्कसन
9. *अंडरस्टैंडिंग कुचिपुड़ी* — लेखक: सी.आर. आचार्य तथा मल्लिका साराभाई
10. *रिलीजन एण्ड दि एनवायरनमेंटल क्राइसिस* — लेखक: सैय्यद हुसैन नस्र

वर्ष 1994-95 के दौरान निम्नलिखित तीन और खण्ड प्रकाशित किए गए हैं:

1. *एक्सप्लोरिंग इण्डियाज सैक्रेड आर्ट— सिलेक्टेड राइटिंग्स आफ स्टेला क्रैमरिश,* सम्पादक : बारबरा स्टोलर मिलर;
2. *डिक्शनरी ऑफ इण्डो-पर्शियन लिटरेचर,* कोशकार : नवी हादी;
3. *दि टेम्पल ऑफ मुक्तेश्वर एंट चौदण्डपुर,* लेखक: वसुंधरा फिलियोजा।

इनके अतिरिक्त, जो अन्य खण्ड मुद्रण की उन्नत अवस्थाओं में हैं उनमें शामिल हैं: (i) *दि इंडियन टेम्पल आर्किटेक्चर: फॉर्म एण्ड ट्रान्सफॉर्मेशन,* लेखक : आदम हार्डी; (ii) *कॉन्सेप्ट ऑफ टाइम : एन्शंट एण्ड मॉडर्न,* सम्पादक : कपिला वात्स्यायन; (iii) *स्तूप एण्ड इट्स टेक्नॉलॉजी: ए टिबेटोबुद्धिस्त पर्सपेक्टिव,* लेखक : प्रेमा दोरजी; (iv) *इंडियन आर्ट एण्ड कॉनिसरशिप,* सम्पादक : जॉन गुइ; (v) *ऐस्थेटिक्स एण्ड मोटिवेशन्स इन आर्टस एण्ड साइन्स,* सम्पादक : के.सी. गुप्त; (vi) *बाराबुदुर,* लेखक : पॉल मूस, अनुवादक : ए.डब्लू. मैकडोनाल्ड।

बहुत से अन्य खण्ड, जैसे *सिलेक्टेड लेटर्स एण्ड पेपर्स आफ एस. ओल्डनबर्ग,* और *दि सिटी एण्ड दि स्टार्स: कॉस्मिक अर्बन ज्योमिट्रीज ऑफ इंडिया,* तैयारी की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में हैं।

आनन्द के० कुमारस्वामी की कृतियों का संग्रह

इस लम्बे चलने वाले कार्यक्रम के अन्तर्गत आनन्द केंटिश कुमारस्वामी की सभी कृतियों को विषयानुसार सुव्यवस्थित रूप में लेखक के प्रामाणिक संशोधनों के साथ लगभग 30 खण्डों में प्रकाशित किया जाना है। इस ग्रंथमाला के निम्नलिखित आठ खण्ड मार्च, 1994 तक प्रकाशित हो चुके थे:

1. *सिलेक्टेड लेटर्स आफ आनन्द कुमारस्वामी,* सम्पादक : एल्विन मूर कनिष्ठ, तथा राम पी. कुमारस्वामी;
2. *वॉट इज सिविलाइजेशन;*
3. *टाइम एण्ड ईटर्निटी;*
4. *एसेज ऑन अरली इंडियन आर्किटेक्चर,* सम्पादक : मिकाइल माइस्तर;
5. *स्पिरिच्युअल अथॉरिटी एण्ड टेम्पोरल पावर इन दि इंडियन थ्योरी ऑफ गवर्नमेंट,* सम्पादक : के.एन. अय्यंगर तथा राम.पी. कुमारस्वामी;
6. *यक्षस : एसेज इन दि वाटर कॉस्मोलॉजी,* सम्पादक : पॉल श्रोडर;
7. *थर्टी सांग्स फ्रॉम दि पंजाब एण्ड कश्मीर,* सम्पादक : प्रेमलता शर्मा; और
8. *विद्यापति पदावली*

वर्ष 1994-95 के दौरान, कुमारस्वामी के खंडों के पुनर्मुद्रण का कार्य उनमें यथावश्यक सुसंगत संशोधनों के साथ, प्रगति पर रहा। उनकी दो कृतियां, अर्थात् *'ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ नेचर इन आर्ट',* सम्पादक : कपिला वात्स्यायन; और *'एसेज इन आर्किटेक्चरल थ्योरी',* सम्पादक : मिकाइल डब्लू. माइस्तर, मुद्रण की उन्नत अवस्थाओं में हैं और शीघ्र ही प्रकाशित कर दी जाएंगी।

निम्नलिखित सूची में दिए गए अन्य कई खंडों से संबंधित कार्य तैयारी की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में चल रहा है: (i) *एसेज ऑन ज्योलॉजी,* सम्पादक : ए. रंगनाथन; (ii) *बिबिलियोग्राफी ऑफ आनन्द के. कुमारस्वामी,* संकलनकर्ता : जेम्स काउच; (iii) *एसेज ऑन हिन्दूइज्म एण्ड बुद्धिज्म,* सम्पादक : के.एन. अय्यंगर; (iv) *जैन पेंटिंग्स,* सम्पादक :

आर. कोहेन; (v) *एसेज ऑन स्वदेशी,* सम्पादक : कपिला वात्स्यायन तथा ललित एम. गुजराल; (vi) *एसेज ऑन वेदान्त,* सम्पादक : विद्यानिवास मिश्र; (vii) *म्यूजिक एण्ड डान्स: मिरर ऑफ जेश्चर,* सम्पादक : कपिला वात्स्यायन; (viii) *दि आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स ऑफ इंडिया एण्ड सीलोन,* सम्पादक : मुल्कराज आनन्द; (ix) *एसेज ऑन एजुकेशन,* सम्पादक : कपिला वात्स्यायन, तथा ललित एम. गुजराल; (x) *एसेज ऑन वीमन,* सम्पादक : कपिला वात्स्यायन तथा ललित एम. गुजराल; (xi) *एसेज ऑन म्यूजिक,* सम्पादक : प्रेमलता शर्मा; (xii) *बुद्धिस्ट एसेज,* सम्पादक : जी.सी. पाण्डे; (xiii) *एसेज ऑन पेंटिंग,* सम्पादक : बी.एन. गोस्वामी; (xiv) *कोक्विड ट्रान्सलेशन ऑफ ह्यूम्स थर्टीन उपनिषद्स;* आदि।

भावी कार्यक्रम

कलासमालोचन के प्रकाशन की ग्रंथमाला के दूसरे चरण में आधुनिक भारतीय भाषाओं के भारतीय साहित्यकारों, जैसे शिवराम कारन्थ, वासुदेवशरण अग्रवाल और बनारसीदास चतुर्वेदी की कृतियों को शामिल करने का प्रस्ताव है।

कार्यक्रम घ: कला विश्वकोश और कलाओं का इतिहास

(i) कला विश्वकोश

कलाओं के विश्वकोश की परियोजना पर काफी समय से विचार-विमर्श होता रहा है। इस बहु-खंडीय विश्वकोश की रूपरेखा तैयार करने के लिए पिछले दो वर्षों में कई कार्यशालाएं, विशेषज्ञ बैठकें तथा संगोष्ठियां आयोजित की गई। कला विश्वकोश को वर्णमाला क्रम से रखने के औचित्य पर विद्वानों में मतभेद था, विशेष रूप से उस स्थिति में जब कि उस विश्वकोश तथा उसकी प्रविष्टियों को बहुशास्त्रीय तथा अन्तरसांस्कृतिक आधार प्रदान करने पर बल दिया जाना हो। इसके अतिरिक्त, भारतीय तथा विदेशी सभी विद्वानों का मत था कि वास्तव में इस समय उन आधारभूत तथा बीजात्मक संकल्पनाओं के स्पष्टीकरण की आवश्यकता है जिन्होंने इतिहास के 2,000 वर्षों के दौरान भारतीय ही नहीं, एशियाई कलाओं के विकास को भी नियंत्रित किया है।

इस बात पर सभी सहमत थे कि परम्परागत शैली का विश्वकोश तैयार करने की बजाए, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को एक ऐसा विश्वकोश निकालने के लिए सलाह दी जाए जो भारतीय कला की आधारभूत संकल्पनाओं, सिद्धान्तों तथा रूपकों पर एक बहु-खंडीय स्रोत ग्रंथ हो। सभी का मत था कि भारतीय कला सम्पूर्ण जीव संस्करणों, ज्योमितीय कल्पना, गणितीय तथा बीजगणितीय संगणना, खगोलीय सहसंबंध तथा चेतना के स्तरों पर साथ-साथ अग्रसर होती है। किसी भी कला क्षेत्र में संगमन के इन पक्षों को उन कलाओं द्वारा प्रयुक्त रूपकों को जानकर तथा उनका विशद विवेचन करके ही स्पष्ट किया जा सकता है। ये चर्चाएं एक दीर्घकालिक परियोजना तैयार करने में उपयोगी रही हैं।

अंतरिम रूप से यह निश्चय किया गया कि भारतीय कलाओं के रूपकों तथा मूल भावों पर सात खंड निकालने की योजना बनाई जाए। इनमें बीजात्म रूपक तथा मूलभाव शामिल किए जाएंगे। जैसे **बीज, वृक्ष, स्तम्भ, पुरुष, बिन्दु, शून्य, सूर्य** आदि। इस विषय पर पहले से लिखे गए लेखों का पता लगाने, उन्हें चुनने और उनकी सूची बनाने के लिए एक शोध अध्येता नियुक्त किया गया है। इस अध्येता ने पहली सूची बना ली है और उसकी जांच की जा रही है।

कला विश्वकोश के प्रथम खंड को 1998 तक प्रकाशित करने का प्रस्ताव है।

(ii) कलाओं का इतिहास

जैसा कि वर्ष 1993-94 की रिपोर्ट में कहा गया था, भारत की मुद्रा टंकण कलाओं पर एक परियोजना कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रो० बी.एन. मुखर्जी को सौंपी गई है। उन्होंने लगभग 90,000 सिक्कों का अध्ययन व प्रलेखन किया है और अन्ततः उनमें से 1,800 सिक्कों को कला नमूनों के रूप में चुना है। आलोच्य अवधि में उनके सहयोगी दल ने ब्यौरावार सूचक कार्ड बना लिए थे और युग-युग से भारत की मुद्रा-टंकण कला विषयक खंड का संकलन कार्य प्रगति पर है।

संगोष्ठियां तथा कार्यशालाएं

संगोष्ठी

'नगर एवं नक्षत्र: भारत की ब्रह्माण्ड नगरीय ज्यामितियां' विषय पर एक एक-दिवसीय संगोष्ठी नं० 3, राजेन्द्र प्रसाद रोड, नई दिल्ली में 14 अप्रैल, 1994 को आयोजित की गई।

संगोष्ठी का विषय, जो बिल्कुल नया विचार था, संयुक्त राज्य अमेरिका के कोलोरैडो विश्वविद्यालय के खगोल-भौतिकी विभाग के प्रो० जॉन मैकक्लिम मैलविले द्वारा सुझाया गया था। उन्हें सौर खगोल, पुरातत्वीय खगोल और भूभौतिकी के क्षेत्रों में किए गए उनके कार्य के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त है।

संगोष्ठी ने प्रतीकात्मक ज्यामिती की खोज की जिसने भूतपूर्व नगरों के समेकित जीवन को संगठित करने में सहायता की। पुरातत्व, खगोल तथा सांस्कृतिक भूगोल के संश्लेषण पर एक बहु-आयामी दृष्टिकोण से तीन संदर्भों में चर्चा की गई: खगोलीय परिमंडलों का सांस्कृतिक लघु जगत, प्राकृतिक भूदृश्य का लघु जगत, और मानव कला कृतियों तथा स्थापत्य, कर्मकाण्ड, ग्रंथों तथा लोक परम्पराओं के लघु जगत।

संगोष्ठी का उद्घाटन केन्द्र की अकादमिक निदेशक/आचार्य डॉ० कपिला वात्स्यायन ने किया। कुल मिलाकर सात तकनीकी शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। जिन प्रतिष्ठित विद्वानों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया उनमें शामिल थे : प्रो० जे.एम. मैलविले, खगोल भौतिकी विषय के प्राध्यापक, कोलोरैडो विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका; श्री आर.एस. बिष्ट, निदेशक, पुरातत्व संस्थान, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली; श्री एम.सी. जोशी, सदस्य सचिव, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली; डॉ० राणा पी.बी. सिंह, रीडर, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी; डॉ० डी.पी. दूबे, वरिष्ठ व्याख्याता, पुरातन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय; और श्रीकृष्ण देव, भूतपूर्व निदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण। मध्याह्नोत्तर सत्र में, डॉ० कपिला वात्स्यायन ने संगोष्ठी में प्रस्तुत किए शोध पत्रों का सारांश और संगोष्ठी के विषय पर अपने विश्लेषणात्मक विचार प्रस्तुत किए।

कार्यशालाएं

1. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने पाण्डुलिपिशास्त्र और पुरालिपिशास्त्र पर श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के सहयोग से नई दिल्ली में 14 से 30 मई, 1994 तक एक कार्यशाला का आयोजन किया।

इस कार्यशला का उद्देश्य युवा संस्कृत अध्येताओं को अनछुई पाण्डुलिपि सामग्री का समालोचनात्मक संस्करण तैयार करने में उपयोग करने की विधि सिखाना था। देश के भिन्न-भिन्न भागों से आए सत्ताईस युवा संस्कृत अध्येताओं/विद्वानों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। सात विशेषज्ञों ने अपने भाषणों में विषय के विभिन्न पक्षों पर चर्चा करते हुए नेवारी, ग्रंथ, टाकरी तथा शारदा लिपियों का ज्ञान कराया।

कार्यशाला में भाग लेने वाले अध्येताओं को पाण्डुलिपि शास्त्र से संबंधित मूल शिला-लेख आदि से परिचित कराने के उद्देश्य से स्थानीय ऐतिहासिक स्मारकों का भ्रमण व अवलोकन कराया गया।

2. प्राचीन पाण्डुलिपियों के अर्थनिर्णय, अध्ययन तथा संपादन के क्षेत्र में युवा अध्येताओं को प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से, पाण्डुलिपिशास्त्र तथा पुरालिपिशास्त्र विषय पर एक अन्य कार्यशाला पूना विश्वविद्यालय के संस्कृत तथा प्राकृत भाषा विभाग के सहयोग से पुणे में 3 से 24 जनवरी, 1995 तक आयोजित की गई। इस कार्यशाला में देश के भिन्न-भिन्न भागों से आए लगभग तीस युवा संस्कृत अध्येताओं ने भाग लिया और विषय के विशेषज्ञों ने पाण्डुलिपिशास्त्र के विभिन्न पक्षों पर भाषण दिए और इस कार्य में आने वाली समस्याओं पर विचार-विमर्श किया। जो लिपियां सिखाई गई उनमें मुख्य थीं : नेवारी, ग्रन्थ तथा शारदा।

3. युवा अध्येताओं को प्राचीन भारतीय लिपियों से अवगत कराने और उन्हें साथ अनुसंधान की दीक्षा देने के उद्देश्य से, "भारतीय पुरालेखशास्त्र तथा पुरालिपिशास्त्र" विषय पर एक अल्पावधिक कार्यशाला 24 से 28 फरवरी, 1995 तक आयोजित की गई। इसमें प्रमुख रूप से ब्राह्मी तथा खरोष्ठी लिपियों का अध्ययन कराया गया।

जनपदसम्पदा

(क्षेत्रीय संस्कृतियों के संबंध में जीवन शैली अध्ययन तथा अनुसंधान करने वाला प्रभाग)

जनपद सम्पदा प्रभाग कलाकोश प्रभाग के कार्यक्रमों के पूरक के रूप में कार्य करता है। इसका ध्यान पाठ और संदर्भ के बजाए मुख्यतः भारत और एशिया के जनजातीय एवं लघुस्तरीय समाजों की समृद्ध और विविध रूप-रंगों में उपलब्ध धरोहर की कलात्मक अभिव्यक्तियों पर केन्द्रित रहता है। विकीर्ण एवं मुख्य सांस्कृतिक आन्दोलनों में प्रत्यक्ष एवं गौणरूप से परिवर्तित होते हुए, निरन्तरता और परिवर्तनशीलता की गत्यात्मकता ने जड़ीभूत एवं सापेक्षिक रूप से अधिक कठोरता से संहिताबद्ध परम्पराओं को—जिन्हें शास्त्रीय कहा जाता है, पुनर्नवीकरण के लिए प्रोत्साहन दिया है। इस प्रकार कलात्मक अभिव्यक्ति जीवन चक्र तथा जीवन संचालन का अभिन्न अंग बन जाता है। यह अभिव्यक्ति किसी न किसी रूप में छोटे या बड़े पैमाने पर अनेक रूपों और प्रकारों के मेलों और उत्सवों के माध्यम से सामूहिक तौर पर बारहों महीने होती रही है। आज भी ये मेले-महोत्सव अपनी सजीवता और चहल-पहल के लिए तो खूब जाने-माने जाते हैं, पर अब तक उनको विश्व के समग्र रूप की सजीव निरन्तरता की अभिव्यक्त करने वाली संपूर्णता की बजाए अलग-अलग टुकड़ों में ही देखा गया है।

जनपद सम्पदा प्रभाग के अनुसंधान कार्यकलापों का उद्देश्य इन कलाओं को उनके आर्थिक-सांस्कृतिक, सामाजिक-आर्थिक संदर्भों में पुनः स्थापित करना और भारतीय समाज तथा संस्कृति के विकास में उनके योगदान को उजागर करना है। जनपद सम्पदा प्रभाग इस तथ्य की सम्पुष्टि करने का प्रयास करता है कि लोक परम्पराएं पाठ्य परम्पराओं की अतिरिक्त या उपधारा मात्र नहीं हैं। साथ ही मौखिक परम्पराओं पर जोर देते हुए वह इस बात की पूरी सावधानी रखेगा कि लिखित परम्पराओं की उपेक्षा न की जाए। एक बार फिर सिद्धान्त पक्ष तथा व्यवहार पक्ष, पाठ्य तथा मौखिक, शाब्दिक, दृश्य तथा गत्यात्मक सभी को एक लाक्षणिक पूर्ण रूप में देखा जा रहा है, न कि समेकित किए जाने वाले अलग-अलग खंडों के रूप में। कार्यक्रम प्रसार करने के मामले में '**जन**', '**लोक**', '**देश**', '**लौकिक**', '**मौखिक**' जैसे शब्दों को महत्त्व दिया जा रहा है।

इस प्रभाग के कार्यक्रमों का विभाजन इस प्रकार है:-

(क) **मानव जाति वर्णनात्मक संग्रह** : इन संग्रहों में मूल, अनुकृतियां तथा रिप्रोग्राफिक प्रतिलिपियां बुनियादी स्रोत सामग्री के रूप में इकट्ठी की जाती हैं।

(ख) **बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां तथा गतिविधियां** : इन कार्यक्रमों के अन्तर्गत दो दीर्घाओं की स्थापना की जा रही है : (1) आदि दृश्य, जिसमें भारत तथा अन्य देशों की प्रागैतिहासिक शैलकला प्रदर्शित की जाएगी और (2) आदि श्रव्य, जिसमें संगीत तथा संगीतेतर ध्वनि की अभिव्यक्ति होगी। दूसरे शब्दों में, दृष्टि तथा ध्वनि की ज्ञानेन्द्रियों (आंख एवं कान) से संबंधित आधारभूत संकल्पनाएं प्रस्तुत की जाएंगी।

(ग) **जीवन शैली अध्ययन** : ये कार्यक्रम आगे (1) लोक परम्परा और (2) क्षेत्र सम्पदा नामक दो भागों में बंटे हैं। लोक परम्परा के अन्तर्गत, भारत के भिन्न-भिन्न आर्थिक क्षेत्रों में मनुष्य की जीवन शैलियों का अध्ययन किया जाता है। क्षेत्र सम्पदा के अन्तर्गत विशेष स्थानों पर मंदिर परिसरों के ऐसे अध्ययन की कल्पना की गई है जिसमें उनके भक्ति विषयक, कलात्मक, भौगोलिक और सामाजिक पक्षों को परस्पर जोड़ने वाली प्रक्रिया को भी ध्यान में रखा जाता है।

(घ) **बाल जगत** : इस अनुभाग के कार्यक्रमों का उद्देश्य बच्चों को जनजातीय तथा लोक संस्कृतियों की समृद्ध परम्परा तथा तत्संबंधी वास्तविकताओं से उनके घरेलू तथा स्कूली वातावरण के माध्यम से परिचित कराना है, जिनसे वे अब तक अछूते रहे हैं।

वर्ष 1994-95 में जनपद सम्पदा विभाग के द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों में की गई प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया गया है:

कार्यक्रम क: मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह

इस कार्यक्रम की स्थूल रूपरेखा को ध्यान में रखते हुए, वर्ष 1994-95 के दौरान ये दो बड़े संग्रह प्राप्त करने का कार्य प्रारम्भ किया गया। (i) श्रीमती मिलादा गांगुली का नागा कला वस्तुओं का संग्रह और (ii) डॉ० एस.आर. सरकार का पश्चिम बंगाल के मुखौटों का संग्रह।

श्रीमती मिलादा गांगुली का नागा कला वस्तुओं और छायांकन सामग्री का संग्रह एक समझौता ज्ञापन के अन्तर्गत दिसम्बर, 1994 के अंतिम सप्ताह में प्राप्त किया गया।

नागा कला

इस संग्रह में विभिन्न नागा समूहों की 131 मानवजाति वर्णनात्मक वस्तुएं हैं। ये वस्तुएं भिन्न-भिन्न श्रेणियों की हैं, जैसे, परम्परागत वस्त्र, आभूषण एवं परिधान, घरेलू सामान, औजार तथा हथियार, लकड़ी पर नक्काशी, मिट्टी के बरतन आदि। ये वस्तुएं सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इन वस्तुओं से, सामन्ती तथा सैन्य परम्परा से शासित नागा लोगों की विशिष्ट जीवन शैली का ही नहीं अपितु उनकी कलाधर्मिता तथा कला-मर्मज्ञता का भी पता चलता है।

मुखौटे

मुखौटों के संग्रह का कार्य इण्डोनेशिया से 28 तोपेंग मुखौटों की प्राप्ति के साथ प्रारंभ हुआ। पश्चिम बंगाल के कुल मिलाकर 70 पूर्णतः प्रलेखित मुखौटे प्राप्त किए गए और उनके साथ मुखौटा नृत्यों के सात वीडियो कैसेट का एक सेट भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता के क्यूरेटर डॉ० एस. के. सरकार द्वारा भेजा गया।

फिल्म (निर्माण)

वर्ष 1994-95 के दौरान, प्रभाग ने श्री थप्पा राय द्वारा "नीलगिरि पहाड़ियों की टोडा जाति" (टोडाज ऑफ नीलगिरी हिल्स) पर बनाई जा रही एक 16 मि.मी. बड़ी फिल्म परियोजना को हाथ में लिया। इसके अतिरिक्त, दो वीडियो फिल्म परियोजनाएं भी हाथ में ली गईं, जिनमें पहली थी श्री सुमित घोस द्वारा कल्पित "बाउल दर्शन" (दि बाउल फिलोसॉफी) फिल्म और दूसरी थी श्री आर. सरत द्वारा कल्पित "केरल के देवालय संगीत वाद्य" (दि टेम्पल म्यूजिकल इन्स्ट्रुमेंट्स ऑफ केरल) नामक फिल्म। इन सभी तीनों फिल्मों के संबंध में क्षेत्र में जाकर शूटिंग करने का पहला कार्यक्रम पूरा हो चुका है। सभी फिल्मों को वर्ष 1995-96 के मध्य तक विमोचित किए जाने की आशा है।

फिल्म (प्राप्ति/अर्जन)

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को फिल्म प्रलेखन परियोजनाओं के अलावा, निजी/गैर-सरकारी निर्माताओं द्वारा प्रस्तुत की गई निम्नलिखित चार वीडियो फिल्में प्राप्त करने के लिए चुनी गई हैं:—

1.	कालकुड भूत कुल	-	निर्माता: श्री हरिदास भट्ट
2.	डेज ऑफ दि मास्क डान्सेज	-	निर्माता: श्री डी.आर. पुरोहित
3.	दि जर्नी	-	निर्माता : श्री शिव कुमार अगरवाल
4.	इन दि शैडोज ऑफ मैंग्रोव फॉरेस्ट	-	निर्माता : श्री जहर कानूनगो

कार्यक्रम ख: बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां और गतिविधियां

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित प्रस्तुतियों तथा गतिविधियों का उद्देश्य हजारों वर्षों के दौरान भारतीय समाज द्वारा प्रस्तुत की गई कला सामग्री से जनता को अवगत कराना है। दो स्थायी प्रदर्शनियां स्थापित की जाएंगी जो विशेष विषयों तथा क्षेत्रों संबंधी अन्य कार्यक्रमों के लिए पृष्ठभूमि का काम करेंगी। इन प्रदर्शनियों के नाम हैं:

1. आदि दृश्य और 2. आदि श्रव्य।

आदि दृश्य दीर्घा में भारत की प्रागैतिहासिक शैलकला (रॉक आर्ट) तथा विश्व के अन्य भागों से प्राप्त प्रतिनिधिक नमूने प्रदर्शित किए जाएंगे। यहां पहली बार बताया जाएगा कि शैल कला को एकमात्र 'कर्मकांड' या 'जादूटोने' का ही सूचक नहीं समझा जाना चाहिए। यहां उन अनुकृतियों को प्रदर्शित किया जाएगा जो सर्वप्रथम, चित्रकारी या रेखाचित्र के मूल संदर्भ को सही करके प्रस्तुत करेंगी। दूसरे, उन अनुकृतियों को बिना सोचे-समझे शिकारी जीवन, प्रारंभिक खेती तथा व्यवस्थित कृषि को विकास अवस्थाओं की ओर पीछे ढकेलते हुए उनका काल सही-सही बतलाने का प्रयत्न किया जएगा। यहां इस कला को स्पत: या सुबोध रूप में बताने की बजाए उसके लाक्षणिक गुप्त संकेतों को जनता के लिए स्पष्ट किया जाएगा। पुरातत्त्वीय तथ्यों तथा कार्यक्रम आदि के संदर्भ में उस कला के असली अर्थ को समझने का प्रयास किया जाएगा। साथ ही प्रागैतिहासिक कला और समकालीन जनजातीय कलाओं के पारंपरिक संबंध को प्रस्तुत किया जाएगा।

इसी प्रकार आदि श्रव्य दीर्घा का कार्य भी भारत में संगीत के कालक्रमिक विकास को दिखाने के लिए प्राचीन वाद्य यंत्रों के संग्रह के प्रदर्शन तक ही सीमित नहीं रहेगा, बल्कि वह एक 'नाद आकाश' (साउंडस्पेस) के माध्यम से मौखिक संगीत और वाद्यों को अधिक महत्त्व देगी और जीवन के संचालन में नाद और संगीत के महत्त्व को दर्शाएगी। इस प्रकार संगीत को दिक् और काल के संदर्भ में सजीव करने का प्रयास किया जाएगा।

इन सामग्रियों को आगे चलकर इन दीर्घाओं में प्रदर्शित करने के उद्देश्य से, इनके संबंध में पर्याप्त मात्रा में शोधकार्य करने की आवश्यकता है। इस प्रकार स्थायी संग्रह भी शनै:-शनै: अपना आकार लेते जा रहे हैं।

आदि दृश्य (आद्य दृष्टि/कल्पना शक्ति की दीर्घा)

अर्जन/प्राप्ति

आस्ट्रेलियाई शैल कला स्थलों की फाइबर ग्लास की प्रतिकृति बनवाने के लिए आस्ट्रेलिया की रुड्रोक आर्ट गैलरी के साथ करार पर हस्ताक्षर किए हैं। यह कार्य विख्यात रिप्रोग्राफिक विशेषज्ञ डॉ० केलथिन सिमिवर्ट को सौंपा गया है।

यी.एच.एस. फॉर्मेट में निर्मित "पहाड़गढ़ शैल चित्र" (पहाड़गढ़ रॉक पेंटिंग्स) नामक एक महत्त्वपूर्ण फिल्म कॉर्पोरेट कम्यूनिकेशन, नई दिल्ली से प्राप्त की गई।

प्रकाशन

डॉ० यशोधर मठपाल द्वारा प्रस्तुत दो प्रबन्ध ग्रंथ—"रॉक आर्ट ऑफ कुमाउं हिमालय" (कुमाऊं हिमालय की शैल कला) और "रॉक आर्ट ऑफ केरल" (केरल की शैल कला)-प्रकाशित करने के लिए कार्यक्रम में शामिल कर लिए गए हैं।

प्रलेखन कार्यक्रम के अन्तर्गत, सभी प्रकार की उपलब्ध रिप्रोग्राफिक सामग्रियों (स्लाइडें, पारदर्शियां, छायाचित्र आदि) पर क्रमांक अंकित किए गए। ये प्राप्ति रजिस्टर में दर्ज की गई और उनके सूचक कार्ड तैयार किए गए। वर्ष 1993-94 में झोरी स्थल की खुदाई से जो भी सामग्री प्राप्त हुई थी वह सब प्राप्ति रजिस्टर में चढ़ा ली गई, उन पर ब्यौरे अंकित कर दिए गए और उनके सूचक कार्ड तैयार कर लिए गए।

आदि श्रव्य (आद्य ध्वनि की दीर्घा)

अर्जन/प्राप्ति

इस वर्ष, निम्नलिखित मणिपुरी वाद्य यंत्र प्राप्त किए गए:—

1. **ताल वाद्य :** मेइतेई पुंग, ढोलक, मेइतेई लैडुंग पुंग, कायरी लैंडुंग पुंग, करताल, मंजीरा;
2. **तन्त्री वाद्य :** पेना तथा सेवुंग;
3. **सुषिर वाद्य :** बांसुरी।

इन वाद्य यन्त्रों के ब्यौरेवार प्रलेखन का कार्य इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के इम्फाल कार्यालय में श्री अरियाम श्याम शर्मा द्वारा प्रारंभ किया गया।

संगोष्ठी

''ध्वनि'' विषय पर 24 तथा 25 अक्तूबर, 1994 को एक दो-दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रो० यशपाल ने इस संगोष्ठी का सपारंभ किया। इसमें 20 विद्वानों ने भाग लिया और 10 प्रेक्षक के रूप में उपस्थित थे। भाग लेने वाले विद्वान् विभिन्न विषयों/शास्त्रों के ज्ञाता थे, जैसे, विज्ञान, संगीत, ध्वनि विज्ञान, मानव विज्ञान, संस्कृत आदि। इनमें जर्मनी के ध्वनि विशेषज्ञ पीटर पैनके, स्विटजरलैंड के आन्द्रे बॉशर्ड और कनाडा, वेस्टरकैम्प के ध्वनि के विशेषज्ञ हाइल्डगार्ड भी शामिल थे। इस अवसर पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परामर्श-दाता (जन सम्पर्क) श्री रघुराम अय्यर द्वारा वीणा वादन प्रस्तुत किया गया।

संगोष्ठी के अन्त में, निम्नलिखित संस्तुतियां (सिफारिशें) की गईं:—

1. ध्वनि संगोष्ठी ने ध्वनि संबंधी भिन्न-भिन्न शास्त्रों/विषयों में परस्पर किया-प्रतिक्रिया की सम्भावना का द्वार खोल दिया। इसे दृष्टिगत रखते हुए, ध्वनि के विभिन्न पक्षों पर सतत अनुसंधान तथा पारस्परिक क्रिया की आवश्यकता है।
2. ध्वनि से संबंधित सभी विषयों/शास्त्रों तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों की शब्दावलियां विकसित करना जरूरी है ताकि विद्वान् तथा विशेषज्ञ एक दूसरे को अन्तर-सांस्कृतिक तथा अन्तर-विषयक दृष्टि से अधिक अच्छी तरह समझ सकें।
3. भविष्य में नगर नियोजन तथा स्थापत्य, ध्वनि विज्ञान, ध्वनि प्रदूषण तथा रोगोपचार में ध्वनि के उपयोग पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।
4. प्रस्तावित आदि श्रव्य दीर्घा (केन्द्र की नाद दीर्घा) केवल संगीत के वाद्य यन्त्रों तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की ध्वनियों का ही संग्रहालय न हो, अपितु एक कार्यस्थल, और एक प्रमुख केन्द्र के रूप में सेवा प्रदान करने की संभावना अभिव्यक्त करे। यह विश्व में स्थापित उन केन्द्रों के साथ भी सम्पर्क बनाए रखे जो ध्वनि-शास्त्रीय कला और ध्वनि संबंधी अनुसंधान कार्य में संलग्न हैं।

प्रकाशन

वर्ष 1995-96 में इस संगोष्ठी के कागज-पत्र प्रकाशित किए जाएंगे।

गतिविधियां/घटनाएं

1. जनपद सम्पदा प्रभाग का वर्षिकोत्सव 10 अगस्त, 1994 को मनाया गया। इस अवसर पर पश्चिम बंगाल के लोक-गीत प्रस्तुत किए गए।
2. दिवंगत श्रीमती इन्दिरा गांधी के जन्मदिन 19 नवम्बर, 1994 को बाल भवन सोसाइटी, नई दिल्ली के सहयोग से ''प्रियदर्शिनी'' शीर्षक से एक प्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें गुजरात की 80 वर्षीया श्रीमती संतोकबा दूधत की एक स्क्रॉल पेंटिंग (फड) प्रदर्शित की गई। 220 मीटर लम्बी इस कुंडलित चित्रावली में श्रीमती इन्दिरा गांधी के जीवन को चित्रित किया गया है। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन एक बच्चे से कराया गया और उद्घाटन समारोह का संचालन भी राष्ट्रीय बाल संग्रहालय, बाल भवन, नई दिल्ली में, बाल भवन सोसाइटी की अध्यक्षा तथा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की आचार्या की उपस्थिति में, पूर्णतः बच्चों ने ही किया।

   बड़ी संख्या में बच्चों तथा प्रौढ़ों ने इस प्रदर्शनी को देखा जो जनता के लिए 19 नवम्बर से 18 दिसम्बर, 1994 तक खुली रही।
3. रावरी काशीदाकारी की एक प्रदर्शनी माटीघर (इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में स्थित) में 1 मार्च से 24 मार्च, 1995 तक लगाई गई। यह प्रदर्शनी शैक्षिक संसाधन केन्द्र (एजूकेशन रिसोर्सेज सेंटर), नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित की गई, और इसका उद्घाटन श्री हाकू शाह ने किया।

कार्यक्रम ग: जीवन शैली अध्ययन

लोक परम्परा

अब तक लोक परम्पराओं और उनसे संबंधित संस्कृतियों पर जो भी अनुसंधान/अध्ययन हुआ है वह सब अधिकतर एक ही दिशा में और एकांगी ही हुआ है, चाहे वह मानवशास्त्रीय दृष्टि से किया गया हो अथवा समाज विज्ञान, अर्थशास्त्र, सामाजिक, राजनीतिक, इतिहास या कला इतिहास की दृष्टि से। इन विषयों ने जीवन अनुभव के कुछ अंगों या कुछ आयामों का ही ध्यान रखा है, जीवन अनुभव की सम्पूर्णता का नहीं। जनपद सम्पदा प्रभाग एक नया दृष्टिकोण, एक नई पद्धति अपनाना चाहता है, और वर्तमान पद्धतियों की जांच करके जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक मॉडल तैयार करने का प्रयास कर रहा है। यह दृष्टिकोण इस धारणा पर आधारित है कि जीवन अलग-अलग आयामों या इकाइयों में बंटा हुआ नहीं है और न ही कोई एक मॉडल किसी समुदाय के सांस्कृतिक जीवन की संपूर्ण झांकी प्रस्तुत कर सकता है। यह दृष्टिकोण संस्कृति को एक सीमांकित स्थान में एक बहु-आयामी प्रणाली मानता है।

इन अध्ययनों का उद्देश्य प्राकृतिक परिवेश, दैनिक जनजीवन, वार्षिक पंचांग तथा जीवन चक्र, विश्व दृष्टिकोण, ब्रह्माण्ड विज्ञान, खेती तथा अन्य आर्थिक कार्य, सामाजिक संरचना, ज्ञान व कौशल, पारंपरिक प्रौद्योगिकी और कला अभिव्यक्तियों के बीच कई प्रकार के संबंध जोड़ना है। ये अध्ययन स्वरूप में बहुविषयक हैं और कलाओं के क्षेत्र में कौशलों और तकनीकों के अन्योन्याश्रय, भिन्न-भिन्न क्षेत्रों पर एक दूसरे के असर और जनजातीय ग्रामीण तथा शहरी परंपराओं, मौखिक या लिखित के पारस्परिक प्रभाव को प्रकट करते हैं।

उपर्युक्त लक्ष्यों को सामने रखकर और बहुविषयक रीति अपनाते हुए कई प्रायोगिक परियोजनाएं प्रारंभ की गई हैं। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विद्वान् देश की विभिन्न संस्थाओं से लिए गए बहुविषयक अध्ययन दलों के साथ सहयोग एवं समन्वय स्थापित कर रहे हैं। उन लोगों के साथ एक सार्थक संवाद स्थापित किया गया है जो जातीय वनस्पति विज्ञान, जातीय इतिहास, हिमालय परिशीलन, मौखिक परम्पराओं के क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं।

उपर्युक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, लोक परम्परा की प्रायोगिक परियोजनाओं के कार्यक्रम ने वर्ष के दौरान प्रगति की है, जिसका ब्यौरा नीचे दिया गया है:—

बाह्य परियोजनाएं

वर्ष 1994-95 की अवधि में, जीवन शैली अध्ययन के कार्यक्रम के अन्तर्गत जनपद सम्पदा विभाग में छह अनुसंधान परियोजनाएं हाथ में ली गई जिनका ब्यौरा नीचे दिया गया है:

1.	धरती और बीज	:	राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी
2.	पाफन	:	निंगोमबाम मणिजाओ
3.	थांगता (मणिपुर की सैन्य कलाएं)	:	सिनाम देवव्रतसिंह
4.	संथाल ध्वनि बोध : बीरभूम जिले के श्री निकेतन खण्ड-बोलपुर में वस्तुस्थिति अध्ययन	:	ओंकार प्रसाद
5.	संथालों द्वारा बांस उत्पादन विज्ञान— संथाल परगना जिले के जातीय वनस्पति विज्ञान का वस्तुस्थिति अध्ययन	:	अरुण कुमार
6.	वीर और उसका संदर्भ— महाराष्ट्र के वीर-प्रस्तरों पर एक रिपोर्ट	:	अजय दाण्डेकर

अब तक निम्नलिखित तीन अंतिम रिपोर्टें प्राप्त हुई हैं :

1. संथाल का ध्वनि बोध : बीरभूम जिले के श्रीनिकेतन खण्ड—बोलपुर में वस्तुस्थिति अध्ययन; लेखक : ओंकार प्रसाद
2. शांगता (मणिपुर की सैन्य कलाएं); लेखक : श्री सिनाम देवबंत सिंह
3. वीर और उसका संदर्भ : महाराष्ट्र के वीर प्रस्तरों पर एक रिपोर्ट; लेखक अजय दाण्डेकर

डॉ० पंतजलि शास्त्री द्वारा हाल में ली गई 'ग्राम देवता' संबंधी परियोजना देरी से प्रारम्भ हुई। इस कार्य की प्रारंभिक रिपोर्ट अप्रैल, 1995 तक प्राप्त होने की आशा है।

इसके अतिरिक्त, इस वर्ष क्रमशः डॉ० मोनिशा अहमद और डॉ० एम.एम. धस्माना से "रूपचू (पूर्वी लद्दाख) के यायावर समुदायों में बुनाई की परम्परा" और "मन्दाकिनी घाटी में कर्मकाण्डीय नृत्य तथा मंदिर संबंधी कार्यक्रम" विषयों पर रिपोर्टें प्राप्त हुई। ये परियोजनाएं समीक्षाधीन अवधि से पहले हाथ में ली गई थीं।

आन्तरिक परियोजनाएं

वर्ष 1994-95 में अनुसंधान अध्येताओं द्वारा तीन आन्तरिक परियोजनाएं प्रारम्भ की गई, इनका ब्यौरा नीचे दिया गया है :

1. "पाण्डव नृत्य शैली, गढ़वाल हिमालय के स्वदेशी लोक मंच के प्रतिपादक के रूप में", अध्येता : ऋचा नेगी।
2. "राजस्थान में बाजरा उगाने वाले एक गांव की लोक परम्परा", अध्येता : रामाकर पन्त।
3. "शरीर, गर्भाशय तथा बीज विषयक संथाल शब्दों का कोश", अध्येता : नीता माथुर।

कु० ऋचा नेगी ने गढ़वाल की पहाड़ियों में अपना क्षेत्रगत कार्य समाप्त करके रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी है। श्री रामाकर पन्त ने राजस्थान के सीकर जिले में अपना प्रारंभिक अध्ययन पूरा कर लिया है और अपनी रिपोर्ट का पहला प्रारूप प्रस्तुत कर दिया है। डॉ० नीता माथुर ने अपनी अनुसंधान परियोजना के संबंध में बोडिंग के शब्द कोश के खंडों में से 1076 शब्दों का कार्य पूरा कर लिया है।

प्रकाशन

लोक परम्परा परियोजना के अन्तर्गत, जनपद सम्पदा प्रभाग ने इस अवधि में निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित कीं :

1. *प्रकृति: ऐन इंटीग्रल विजन*— 5 खण्ड, प्रधान सम्पादक : डॉ० कपिला वात्स्यायन
2. *इंटरकल्चरल डायलॉग एण्ड ह्यूमन इमेज*, लेखक : मॉरिस फ्रीडमैन, सम्पादक : एस.सी. मलिक और पट बोनी
3. *आर्ट एज डायलॉग*, लेखक : गौतम विश्वास।

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशन प्रक्रिया की अंतिम अवस्था में हैं और उनके अप्रैल-मई, 1995 तक प्रकाशित हो जाने की आशा है:

1. *कॉम्प्यूटराइजिंग कल्चर*, सम्पादक : वी.एन. सरस्वती
2. *इण्टरफेस ऑफ कल्चरल आइडेंटिटी एण्ड डवलपमेण्ट*, सम्पादक : वी.एन. सरस्वती
3. *दि रिच्युअल आर्ट ऑफ तेय्यम एण्ड भूताराधना*, लेखक : सीता नम्बियार।

वर्ष 1994-95 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के न्यूजलेटर 'विहङ्गम' के दो अंक प्रकाशित किए गए।

क्षेत्र सम्पदा (प्रादेशिक धरोहर)

कतिपय प्रदेश/क्षेत्र समय के साथ-साथ सांस्कृतिक केन्द्रों के रूप में विकसित होते गए हैं और उनसे आकर्षित होकर संसार के सभी भागों से लोग यहां आते रहे हैं। वे आवागमन के मुख्य केन्द्र रहे हैं। वहां लाने और ले जाने वाली दोनों

तरह की शक्तियां काम करती रही है और उन्होंने केन्द्र स्थान का काम किया है, स्थान की व्यवस्था करने के साथ-साथ उन्होंने गतिशीलता और पारस्परिक क्रिया व प्रभाव को प्रेरित किया है। अक्सर कोई मंदिर या मस्जिद यहां का भौतिक या भावनात्मक आकर्षण रहा है। अब तक ऐसे केन्द्रों का अध्ययन, काल निर्णय, इतिहास, धर्म या अर्थशास्त्र जैसे किसी एक विषय तक ही सीमित या एकांगी रहा है, सर्वसम्पूर्ण नहीं, जिससे सर्जनात्मक कलाओं के क्षेत्र में बहुविध कार्यकलाप संचालित होते हैं। इसलिए क्षेत्र सम्पदा प्रभाग के अन्तर्गत किसी स्थान विशेष या मंदिर और उसकी ''इकाइयों'' के अध्ययन की ही कल्पना नहीं की गई बल्कि एक केन्द्र विशेष के भक्ति विषयक, कलात्मक, भौगोलिक या सामाजिक पक्षों को परस्पर जोड़ने की प्रक्रिया को भी कार्यक्रम में शामिल किया गया है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने दो ऐसे केन्द्रों को अध्ययन के लिए चुना है जिनके नाम हैं : व्रज और बृहदीश्वर।

1. व्रज

यह परियोजना वृंदावन के श्री चैतन्य प्रेम संस्थान के श्री श्रीवत्स गोस्वामी के सहयोग से कार्यान्वित की जा रही है। इसमें सात मॉड्यूल हैं: (1) बहुभाषी ग्रंथसूची, (2) भौगोलिक प्राचल (पैरामीटर) तथा अर्थ, (3) स्थापत्य तथा पुरातत्त्वीय पक्ष ऐतिहासिक विश्लेषण सहित, (4) मंदिर एक जीवन्त अस्तित्व के रूप में, (5) मौखिक परम्पराओं का प्रलेखन, (6) व्रज में मंदिर संरचना का आर्थिक-सामाजिक स्वरूप, और (7) कला, संगीत, नृत्य, तथा पाक प्रणाली।

इन योजनाओं में से निम्नलिखित में हुई प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है:

i. **ग्रंथसूची**
3000 प्रविष्टियों वाली एक सटिप्पणीक बहुभाषी ग्रंथसूची को श्रेणीबद्ध करने तथा वर्णानुक्रम से व्यवस्थित करने का कार्य पूरा हो चुका है।

ii. **भूमिका**
भक्तिरसामृतसिन्धु नामक एक भक्ति विषयक गौडीय वैष्णव ग्रंथ के डॉ० प्रेमलता शर्मा द्वारा किए गए अनुवाद का प्रथम खण्ड प्रकाशनाधीन है। इसका अंग्रेजी अनुवाद नील डेलमोनिको द्वारा पूरा किया जा चुका है।

iii. **रूपवाणि**
रासलीला, मंदिर कर्मकाण्ड, कथा-वाचन तथा समाज संगीत के संग्रह से संबंधित सूची (कैटलॉग) तैयार किया जा रहा है।

iv. **स्थापत्य तथा पुरातत्त्वीय पक्ष**
इस मॉड्यूल के अन्तर्गत, चार मंदिरों, अर्थात् गोविन्ददेव, हरिदेव, जुगलकिशोर तथा मदनमोहन मंदिरों के स्थापत्य-कलात्मक चित्रों/नक्शों का कार्य पूरा हो चुका है।

प्रकाशन

डॉ० मार्गरेट केस द्वारा सम्पादित एक खण्ड *गोविन्ददेव-ए डायलॉग इन स्टोन* मुद्रण की उन्नत अवस्था में है। इस खण्ड में गोविन्ददेव मंदिर पर 1992 में हुई अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए शोधपत्रों/लेखों का संग्रह है।

श्री असीम कृष्णदास की रचना *इंवनिंग ब्लॉसम्स: टेम्पल ट्रैडिशन ऑफ सांझी इन वृन्दावन* का प्रकाशन प्रेस में है।

2. बृहदीश्वर परियोजना

तंजावुर में स्थित ग्यारहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध चोल मंदिर बृहदीश्वर का अध्ययन कार्य 1989 में प्रारंभ किया गया था। इस परियोजना के समन्वयकर्ता डॉ० आर. नागस्वामी हैं और इसमें निम्नलिखित मॉड्यूल शामिल हैं: 1. गौण स्रोतों से बहुभाषी ग्रंथसूची, 2. पुरालेखों तथा शिलालेखों संबंधी सामग्री, 3. पुरातत्त्वीय रेखाचित्रों तथा छायाचित्रों का प्रलेखन, 4. मंदिर की मूर्तियों, प्रस्तर कलाकृतियों, कांस्य प्रतिमाओं, भित्तिचित्रों का अध्ययन, 5. आगमों और कर्मकाण्ड की जीवन्त परम्पराओं के संदर्भ में वास्तु तथा शिल्प पक्षों का अध्ययन, 6. भौतिक एवं मानसिक/अतिभौतिक स्तर से संबंधित अध्ययन, अर्थात्

पूजा तथा पर्वों की विभिन्न अवस्थाओं का प्रलेखन, 7. संगीत तथा नृत्य की परम्परा का सम्पूर्ण सर्वेक्षण, और 8. 18वीं तथा 19वीं शताब्दियों के दौरान तंजवुर तथा बृहदीश्वर मंदिर का सामाजिक, राजनीतिक तथा पारिस्थितिक इतिहास।

वर्ष 1994-95 के दौरान हुई प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है:—

बहु-भाषी ग्रंथसूची

परस्पर संदर्भ निर्देश के लिए 1000 संदर्भों की सटिप्पणीक ग्रंथसूची की जांच की गई, और अब इन संदर्भों को कम्प्यूटर में भरा जा रहा है।

सरस्वती महल पुस्तकालय की 28 सचित्र पाण्डुलिपियों के फोटो-प्रलेखन का कार्य श्री वी.के. राजमणि द्वारा पूरा किया जा चुका है। इस प्रक्रिया में 800 स्लाइडें तैयार की गई और रजिस्टर में दर्ज की गई।

पुरालेखों संबंधी सामग्री

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, मैसूर की पुरालेख शाखा ने पिछले वर्ष से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के लिए 95 नए तमिल और 52 मराठी उत्कीर्ण लेखों की प्रतिलिपियां तैयार कीं।

स्थापत्यकलात्मक रेखाचित्रों तथा छायाचित्रों का प्रलेखन

मंदिर की संरचना के ब्यौरेवार रेखाचित्रों के साथ डॉ० पिएर पिशर द्वारा तैयार किए गए सचित्र आलेख *तंजवुर बृहदीश्वर : एन आर्किटेक्चरल स्टडी* का मुद्रण कार्य प्रगति पर है।

मंदिर : एक जीवन्त अस्तित्व के रूप में

ओडुवारों की भेंटवार्ताओं का अनुवाद कराने और उनके तेवरन गायन की मास्टर टेपें तैयार करने की एक नई परियोजना प्रारम्भ की गई है।

परियोजना के निदेशक, डॉ० आर. नागस्वामी ने दक्षिण के कुछ शैव मंदिरों की पूजा पद्धति के ऑडियो-वीडियो रेकार्ड तैयार करने का काम हाथ में लिया है।

प्रकाशन

बृहदीश्वर मंदिर पर आयोजित एक संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए शोध पत्रों का संकलन—*दि मॉनुमेंट एंड दि लिविंग ट्रैडिशन*—को प्रकाशन के लिए सम्पादित किया जा चुका है।

संगीत और नृत्य की परम्परा का प्रलेखन

बृहदीश्वर मंदिर में कर्मकाण्डीय संगीत के प्रलेखन की एक परियोजना आकाशवाणी, पाण्डीचेरी के भूतपूर्व निदेशक श्री वी.एम. सुन्दरम् द्वारा प्रारंभ की गई है। श्री सुन्दरम् इस परियोजना के निदेशक हैं।

ईसाई सांस्कृतिक धरोहर का प्रलेखन

केन्द्र ने केरल के सीरियाई ईसाइयों की सांस्कृतिक धरोहर यानी उनके महत्त्वपूर्ण अभिलेखों, कला वस्तुओं, पाण्डुलिपियों, उत्कीर्ण लेखों, भजनों, परम्पराओं आदि के प्रलेखन की एक योजना हाथ में ली है। इस कार्य को करने के लिए एक अध्येता का चयन किया गया है।

कार्यक्रम घ: बाल जगत और गतिविधियां

इस कार्यक्रम का उद्देश्य पुतलियों, पहेलियों तथा खेलों जैसे विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से बच्चों को पारम्परागत कलाओं की समृद्ध धरोहर से परिचित कराना है, जो आमतौर पर स्कूल पाठ्यक्रम में शामिल नहीं है।

पुत्तलिका कला

साहित्य की खोज एवं ग्रंथसूची

विभिन्न स्रोतों से संकलित बहुभाषी प्रविष्टियों की जांच तथा अद्यतन बनाने का काम जारी रहा।

पुत्तलिका थिएटर के प्रदर्शन

तमिलनाडु के छाया पुत्तलिकलाकार श्री मुरुगन राव ने "धर्मयुद्धम्" नामक एक छायापुत्तलि प्रदर्शन नई दिल्ली में 2,3,4,7,9 तथा 10 अक्तूबर, 1994 को प्रस्तुत किया। तमिल विश्वविद्यालय, तंजावुर के नाट्य विभाग के एसोसिएट डॉ० एम. रामस्वामी द्वारा तैयार किया गया इसका आलेख (स्क्रिप्ट) मुख्यत: सत्याग्रह पर आधारित था और महात्मा गांधी के जीवन के महत्त्वपूर्ण प्रसंग इसमें शामिल किए गए थे। तमिल भाषा में प्रस्तुत 30 मिनट का *तोलुबोम्मलट्टम्* कार्यक्रम भी दर्शक समाज द्वारा बहुत सराहा गया।

थिएटर संबंधी कार्यशाला

गांधी स्मृति तथा गांधी दर्शन समिति के सहयोग से 15-25 दिसम्बर, 1994 में पुत्तलिकला पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। पास की कंचनपुरी बस्ती के तीस बच्चों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। इन बच्चों ने दस्ताने या डंडे से बनी साधारण किस्म की पुत्तलियां तैयार कीं। उनको इस प्रदर्शन के लिए आलेख तथा संवाद लिखने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया, जिन्हें उन्होंने कार्यशाला में प्रस्तुत किया।

कलादर्शन

(प्रचार-प्रसार एवं प्रस्तुतिकरण प्रभाग)

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संकल्पनात्मक योजना में, कलादर्शन को एक ऐसे प्रभाग के रूप में परिकल्पना की गई है जो जनपद सम्पदा प्रभाग का अनुपूरक हो और जो नानाविध कलाओं, संस्कृतियों, क्षेत्रों, समाज के स्तरों, देशों तथा महाद्वीपों के बीच जीवन्त संवाद के रूप में उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति तथा प्रस्तुतिकरण के लिए स्थान एवं मंच की सुविधाएं उपलब्ध कराए। कलादर्शन प्रभाग के कार्यकलापों में शामिल हैं: (क) सामग्रियों का संग्रह; (ख) अन्तर विषयक कार्यक्रम; और (ग) विषय विशेष संबंधी कार्यक्रम।

अन्तर-विषयक कार्यक्रमों के अन्तर्गत, संगोष्ठियों, प्रदर्शनियों, प्रकाशन, प्रलेखन संबंधी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। अब तक चार बड़े अन्तर-विषयक कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं: "**खम्**" 1986 में, "**आकार**" 1988 में, "**काल**" 1990 में, और "**प्रकृति**" 1992 में।

कार्यक्रम क : संग्रह

विषय विशेष से संबंधित जो अन्तर-विषयक कार्यक्रम आयोजित किए गए उनके फलस्वरूप अत्यन्त बहुमूल्य सामग्रियां इकट्ठी हुई। अब तक *खम्, आकार, काल* तथा *प्रकृति* विषयक प्रदर्शनियों की सामग्रियां ही कलादर्शन प्रभाग के संग्रह का प्रमुख अंश बनी हुई हैं। ये सामग्रियां विभिन्न कार्यक्रमों के लिए स्रोत-सामग्री का काम देती हैं और कभी-कभी अन्य सांस्कृतिक संगठनों द्वारा उधार ले जाई जाती हैं।

कार्यक्रम ख : संगोष्ठियां और प्रदर्शनियां

1. डेविड ए. उलरिच द्वारा दिए गए छायाचित्रों की प्रदर्शनी

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा इंडिया इंटरनेशनल सेंटर के सहयोग से 9 से 13 अगस्त, 1994 तक डेविड ए. उलरिच के छायाचित्रों की "हवाई: रूपान्तरण का परिदृश्य" (हवाई: लैंडस्केप ऑफ ट्रांसफॉर्मेशन) नामक प्रदर्शनी आयोजित की गई। प्रकृति के एक शौकिया छायाकार (फोटोग्राफर) श्री देव मुखर्जी ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। श्री देव मुखर्जी इस समय विदेश मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव हैं और उनके पास कैलास तथा मानसरोवर के स्थिर चित्रों का एक अति उत्तम संग्रह है। दृश्य संचार तथा अभिव्यक्ति के साधन के रूप में, इन छायाचित्रों के छाया-चित्रकार की सौन्दर्यानुभूति की क्षमताओं को अभिव्यक्त करते हुए दर्शकों तथा प्रेस से भूरि-भूरि प्रशंसा प्राप्त की।

2. राजा दीनदयाल की धरोहर

''राजा दीनदयाल की धरोहर'' नामक एक अन्य प्रदर्शनी राष्ट्रीय कला केन्द्र, मुम्बई के सहयोग से, मुम्बई में उनकी कलादीर्घा में 8 से 30 अक्तूबर, 1994 तक सर्वसाधारण के अवलोकनार्थ लगाई गई। यही प्रदर्शनी इससे पहले भारत भवन, भोपाल में 31 मार्च से 15 अप्रैल, 1994 तक आयोजित की गई थी।

3. रावारी कशीदाकारी की प्रदर्शनी

रावारी कशीदाकारी की एक प्रदर्शनी इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के माटीघर में मार्च, 1995 में लगाई गई। यह प्रदर्शनी जनपद सम्पदा विभाग द्वारा संचालित अनुसंधान तथा प्रलेखन कार्य की उपज थी और इसका उद्देश्य दैनिक जनजीवन में महिलाओं की रचनाधर्मिता प्रदर्शित करना था। कच्छ प्रदेश के श्री राजाभाई के नेतृत्व में पांच रावारी स्त्री-पुरुष इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र आए और उन्होंने प्रदर्शनी में दर्पण व गारे से अपने परम्परागत गारे के ढांचे बनाए और प्रदर्शनी को वस्त्रों से सजाने तथा तैयार करने में सहायता की।

श्री हाकू शाह ने 1 मार्च, 1994 को प्रतिष्ठित विद्वानों, लेखकों, शिक्षाविदों, राजनायकों तथा जनसाधारण के समक्ष इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। यह 24 मार्च, 1995 तक जनता के लिए खुली रही। जनता तथा प्रेस दोनों ने ही इस प्रदर्शनी का खूब स्वागत किया।

कार्यक्रम ग: स्मारक व्याख्यान

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारक व्याख्यान

ग्यारहवां आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारक व्याख्यान आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मृति न्यास के सहयोग से 19 अगस्त, 1994 को आयोजित किया गया। भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली के कार्यकारी निदेशक डॉ० पाण्डुरंग राव ने ''भाषा प्रसंग और भारतीयता'' विषय पर भाषण दिया जिसमें उन्होंने विभिन्न भारतीय भाषाओं की आधारभूत एकता को उजागर किया।

इस आयोजन की अध्यक्षता डॉ० केदार नाथ सिंह ने की और ''कादम्बिनी'' के सम्पादक श्री राजेन्द्र अवस्थी मुख्य अतिथि थे।

कार्यक्रम घ: अन्य कार्यक्रम
(वार्ताएं एवं व्याख्यान)

1. फिल्म प्रदर्शन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने कई फिल्में, वीडियो फिल्में आदि बनाई हैं और अन्य कई अपने संग्रहालय के लिए प्राप्त की हैं। केन्द्र अपने संग्रहालय से फिल्में लेकर नियमित रूप से प्रदर्शित करता रहा है। इस वर्ष ऐसी दो फिल्में नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर के प्रेक्षागृह में 9 से 10 अगस्त, 1994 को दिखाई गई। इनमें से एक फिल्म ''लाई हरौबा'' जो अरिबाम श्याम शर्मा द्वारा निर्देशित की गई है, मणिपुर के जन-जीवन से संबद्ध समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराएं प्रस्तुत करती हैं। यह फिल्म प्रश्न उपस्थित करती हैं कि मनुष्य किस प्रकार अपने आपको सत्य से जोड़ता है। इसकी असाधारण सफलता इस तथ्य में निहित है कि इस फिल्म में ब्रह्माण्ड विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान, मानव विज्ञान, सौंदर्य शास्त्र तथा अध्यात्म विज्ञान एवं मानव कलाओं के सोच-विचार को एक साथ प्रस्तुत किया गया है। हैमन्ती बैनर्जी द्वारा निर्देशित फिल्म ''आनन्द तथा स्वातंत्र्य की ओर'' (टुवार्ड्स जॉय एण्ड फ्रीडम) टैगोर की शिक्षा के बारे में बुनियादी संकल्पना पर आधारित है जो शांतिनिकेतन में परिलक्षित होती है, जहां शिक्षा प्रकृति की गोद में बैठाकर प्रदान की जाती है और जहां के पाठ्यक्रम में नृत्य, संगीत, काव्य तथा रंगमंच की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

2. व्याख्यान

सोद्देश्य तथा बौद्धिक आदान-प्रदान के लिए मंच उपलब्ध कराने की दृष्टि से, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र लक्ष्यगत दर्शकों के समक्ष भिन्न-भिन्न विषयों पर वार्ताएं, पुत्तलिका प्रदर्शन, फिल्म प्रदर्शन, वीडियो फिल्में आदि प्रस्तुत करता है। वर्ष 1994-95 के दौरान ऐसे बावन कार्यक्रम आयोजित किए गए।

व्याख्यान देने के लिए भारत तथा विदेशों से विख्यात विशेषज्ञ आमंत्रित किए गए। विश्व बैंक के पर्यावरण की दृष्टि से सतत संचालन योग्य विकास कार्यक्रम के उप-अध्यक्ष डॉ० इस्माइल सेराग्लेडिन ने ''एक विशिष्ट जनसमुदाय—समाज

की आध्यात्मिक, भौतिक, बौद्धिक तथा भावनात्मक विशिष्टताओं के जटिल स्वरूप'' के बारे में भाषण दिया। बर्लिन के भारतीय कला संग्रहालय के निदेशक डॉ० मैतियान यालडिच ने ''कल्याणसुन्दरमूर्ति'' अर्थात् भगवान शिव के पवित्र विवाह को चित्रित करने वाली प्रतिमा के विषय में एक प्रबोधक वार्ता प्रस्तुत की, जिसमें उन्होंने बंगलादेश में मिली दो कांस्य प्रतिमाओं के बीच पाए जाने वाले अन्तर पर प्रकाश डाला। इन प्रतिमाओं में से एक जो मण्डोइल में मिली थी, अब वारेन्द्र अनुसंधान संग्रहालय, राजशाही के संग्रह में सुरक्षित है और दूसरी बर्लिन के भारतीय कला संग्रहालय में रखी हुई है। इन कांस्य प्रतिमाओं पर निकट से दृष्टिपात करने से दो अलग-अलग घटनों का पता चलता है जिनके परिणामस्वरूप भगवान् शिव का विवाह हुआ था, यद्यपि प्रथम झलक में दोनों पूर्णतः एक समान दिखाई देती हैं।

इस वर्ष के कार्यक्रमों की एक विशिष्टता यह थी कि स्वयं कलाकारों ने कला के विभिन्न पक्षों पर अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए निरूपणात्मक भाषण दिए। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत, श्री एस.एल. खाडनेरकर ने एक नई तकनीक विकसित एवं प्रस्तुत की जिसके द्वारा संगीत को एक विचित्र विधि से दृश्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। ''क्विक टाइम वर्च्युअल रीयलिटी'' नामक एक अन्य तकनीक एक 'ऐपल' वैज्ञानिक डॉ० गुरुशरण सिद्धू द्वारा विकसित की गई। इन्दिरा गांधी कला केन्द्र में इस तकनीक के प्रदर्शन के दौरान दर्शकों/श्रोताओं ने ऐसा महसूस किया मानो वे कलाकृतियों के संग्रह या स्थापत्य शिल्प के बीच से होकर गुजर रहे हों। तीसरी प्रस्तुति एक वाद्य कलाकार श्री बाबूलाल वर्मा की थी जिन्होंने ''ब्रह्मवाद्य'' नामक एक जटिल वाद्ययंत्र का आविष्कार किया है। कुमारी कनक सुधाकर ने भारतीय शास्त्रीय नृत्यों के रोगोपचारिक महत्त्व को निरूपित किया। कुमारी सुधाकर एक औषध विशेषज्ञा तथा नृत्याङ्गना हैं और उन्होंने एक पुस्तक प्रकाशित की है जिसमें यह बताया गया है कि नृत्य की सहायता से किस प्रकार सामान्य रोगों को रोका जा सकता है और सुस्वस्थ एवं ओजपूर्ण जीवन जिया जा सकता है। एक अन्य व्याख्यान में भारतीय शास्त्रीय संगीत की मर्मज्ञा डॉ० सुमति मुटाटकर ने यह निरूपित किया कि शास्त्रीय संगीत के सिद्धान्त एवं संकल्पनाएं राग-आलाप के अभ्यास में समाहित हैं।

वर्ष 1994-95 में आयोजित किए गए व्याख्यानों की अनुसूची अनुबंध-10 में दी गई है।

सूत्रधार
(प्रशासन प्रभाग)

सूत्रधार प्रभाग इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के एक प्रशासनिक स्कंध के रूप में अन्य सभी प्रभागों तथा एककों को प्रबन्धकीय और संगठनात्मक सहायता एवं सेवाएं प्रदान करता है। यह इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के समस्त कार्यकलापों के समन्वय, प्रशासन तथा नीति निर्धारण के लिए प्रमुख एजेंसी के रूप में कार्य करता रहा। इस प्रभाग का एक एकक समस्त केन्द्र के लिए आपूर्ति तथा सेवाओं की व्यवस्था करता है और एक-दूसरे एकक का दायित्व केन्द्र का हिसाब-किताब रखना और वित्त प्रबंध करना है।

क. कार्मिक

वर्ष 1994-95 के दौरान, केन्द्र में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य करने के लिए कुछ नए अधिकारी नियुक्त किए गए। केन्द्र के महत्वपूर्ण अधिकारियों की सूची अनुबंध-3 पर दी गई है।

ख. आपूर्ति तथा सेवाएं

आपूर्ति तथा सेवा एकक केन्द्र के सभी अकादमिक प्रभागों को सम्भारतंत्रीय तथा संबंधित सहायता प्रदान करता रहा। इस एकक ने वर्ष के दौरान अनेक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं और प्रदर्शनियों की व्यवस्था में भी सहायता दी। इसने सभी सम्बद्ध मंत्रालयों/विभागों और अन्य संगठनों के साथ समन्वय बनाए रखा ताकि केन्द्र का कार्य सुचारु रूप से कुशलतापूर्वक चलता रहे।

ग. शाखा कार्यालय

वाराणसी

वाराणसी का शाखा कार्यालय, जो 1988 में स्थापित किया गया था, एक अवैतनिक समन्वयकर्ता की देखरेख में काम करता रहा। यह कार्यालय इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कलाकोश प्रभाग के अन्तर्गत कार्य करता है और इस कार्यालय के अधिकांश अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सेवाएं अब नियमित कर दी गई हैं।

इम्फाल

इम्फाल कार्यालय 1991 में स्थापित किया गया था और यह भी एक अवैतनिक समन्वयकर्ता के अधीन कार्य कर रहा है। इस कार्यालय के सभी कर्मचारी तदर्थ आधार पर ही कार्यरत हैं।

घ. वित्त एवं लेखे

31 मार्च, 1994 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष के लेखों को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के न्यास द्वारा अपने घोषणा विलेख के अनुच्छेद 19.1 के अनुसार अनुमोदित और स्वीकृत किया जा चुका है।

भारत सरकार ने केन्द्र को निम्नलिखित लाभ/रियायतें प्रदान करते हुए अधिसूचनाएं जारी की हैं-

(1) न्यास की आय को कर-निर्धारण वर्ष 1997-98 तक आयकर से मुक्त कर दिया गया है। आयकर अधिनियम की धारा 10 (23-ग) (iv) के अन्तर्गत आवश्यक कर-मुक्ति दे दी गई है। देखिए : 10 मई, 1994 की अधिसूचना संख्या 9541 (एफ.सं. 197/183/93-आई.टी.ए.-1)।

(2) न्यास को धारा-35 (i) (iii) के अन्तर्गत, अधिसूचना संख्या-1075 एफ.सं. डी.जी.आई.टी. (ई.) एन.डी.-22/35 (i) (iii) 89 आई.टी. (ई.), दिनांक 29 मार्च, 1994 के द्वारा 1.4.1994 से 31.3.1995 तक की अवधि के लिए एक संस्था घोषित कर दिया गया है, जिससे सामाजिक विज्ञान आदि में अनुसंधान के लिए केन्द्र को दी गई कोई भी राशि आयकर अधिनियम की धारा 35 (i) (iii) के अन्तर्गत दाता की आय में से कटौती की पात्र होगी। आयकर अधिनियम के अन्तर्गत इस छूट की पूर्वपीठिका के रूप में, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने इस संगठन (केन्द्र) को आयकर नियम, 1962 के नियम-6 के अन्तर्गत एक वैज्ञानिक तथा अनुसंधान संस्थान के रूप में अपनी मान्यता प्रदान कर दी है। इस मान्यता के आधार पर केन्द्र को आगात पर सीमा-शुल्क से भी छूट मिल सकती है और आयात प्रक्रिया में भी सुविधा प्राप्त हो सकती है।

(3) केन्द्र को किसी कलाकृति, पांडुलिपि, रेखाचित्र, चित्रकारी, छायाचित्र, मुद्रण आदि की बिक्री से किसी व्यक्ति को होने वाले पूंजीगत लाभ आयकर अधिनियम की धारा-47 (ix) के अन्तर्गत निर्धारण वर्ष 1998-99 तक के लिए आयकर से मुक्त कर दिए गए हैं; देखिए भारत सरकार, वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) की दिनांक 24.11.1993 की अधिसूचना संख्या 207/5/93-आई.टी.ए.-II।

(4) व्यक्तियों द्वारा केन्द्र को किया गया कोई भी दान आयकर अधिनियम की धारा 80 (छ) के अन्तर्गत 50 प्रतिशत तक छूट (रिबेट) का पात्र होगा। केन्द्र को यह छूट 31.3.1999 तक दी गई है : देखिए : आयकर निदेशक (छूट) का दिनांक 18 नवम्बर, 1994 का पत्र संख्या-डी.आई.टी. (छूट)/93-94/379/187/531।

भारत सरकार ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को 15 करोड़ रुपए की अतिरिक्त मूल निधि प्रदान की है जिसे केन्द्र की निवेश समिति के अनुमोदन से सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों के स्थायी खातों में लगा दिया गया है।

ङ आवास

केन्द्र का प्रधान कार्यालय जनपथ स्थित सैंट्रल विस्टा मेस के भवनों और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मार्ग स्थित बंगला संख्या 3 में स्थापित रहा। सैंट्रल विस्टा मेस भवन को चारों दिशाओं में बढ़ाया गया है जिससे अब 10,000 वर्ग फुट जगह केन्द्र को और मिल गई। इसके फलस्वरूप, केन्द्र के विभिन्न प्रभागों तथा एककों को उस बढ़े हुए हिस्से में ही स्थान दे दिया गया है।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मार्ग के बंगला नं. 5 की इमारत अब तोड़ दी गई है और उस स्थल पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के नए भवन का निर्माण कार्य चालू है। निर्माण कार्य जून, 1993 में शुरू हुआ था और यह प्रगति पर है। ब्यौरेवार नक्शे बनाने का काम चल रहा है और विभिन्न सेवाओं जैसे, ताप, वायु संचार, वातानुकूलन तथा बिजली की व्यवस्था और जलपूर्ति तथा आवश्यकता के समय बिजली उत्पादन व्यवस्था संबंधी कार्य प्रगति पर है।

च. शोधवृत्ति योजना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की शोधवृत्ति योजना इस वर्ष भी चलती रही और वर्ष 1994-95 के दौरान शोध अध्येताओं की संख्या इस प्रकार रही :-

मुख्यालय कार्यालय	11
वाराणसी कार्यालय	3
मद्रास माइक्रोफिल्म एकक	3
शिमला	1

छ. राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ संबंध स्थापन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने अपने विभिन्न प्रभागों के माध्यम से अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं जैसे विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संगठनों तथा सांस्कृतिक संस्थाओं के साथ काफी व्यापक रूप से संबंध स्थापित किए।

कलानिधि

केन्द्र का कलानिधि पुस्तकालय भारतीय विशिष्ट पुस्तकालय संस्थान के सदस्य के रूप में अन्तर्पुस्तकालय उधार और कम्प्यूटरबद्ध आदान-प्रदान की अनेक प्रणालियों में भाग लेता रहा। कलानिधि पुस्तकालय का देश के अन्य पुस्तकालयों/संस्थाओं के साथ, नियमित रूप से आदान-प्रदान चलता रहता है। उनमें से कुछ हैं :- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण पुस्तकालय; राष्ट्रीय संग्रहालय पुस्तकालय तथा भारतीय पुस्तकालय संघ, दिल्ली; भारतीय विशिष्ट पुस्तकालय संघ, कलकत्ता ; राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता ; एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता ; राजस्थान विश्वविद्यालय पुस्तकालय, जयपुर ; मणिपुर विश्वविद्यालय पुस्तकालय इत्यादि-इत्यादि। केन्द्र ने अपनी माइक्रोफिल्म बनाने की योजना के कार्यान्वयन के लिए अनेक संस्थाओं के साथ सूचनाओं का आदान-प्रदान करने, अध्येताओं/विद्वानों को सहायता देने और परस्पर शोध कार्य के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए सुव्यवस्थित एवं नियमित कार्यक्रम स्थापित किए हैं। इस संदर्भ में निम्नलिखित संस्थाएं उल्लेखनीय हैं :

भाण्डाकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे ; महाराष्ट्र ; भारत कला भवन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ; उत्तर प्रदेश ; गवर्नमेंट ओरिएंटल मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, मद्रास ; तमिलनाडु ; गवर्नमेंट ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना ; बिहार ; हजरत पीरमोहम्मदशाह दरगाह शरीफ लाइब्रेरी, अहमदाबाद; गुजरात ; खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना ; बिहार ; मौलाना अबुल कलाम आजाद अरबी एवं फारसी अनुसंधान संस्थान, टोंक, राजस्थान ; राष्ट्रीय अभिलेखागार, जनपथ नई दिल्ली ; ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट एण्ड मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, तिरुवनन्तपुरम् ; केरल ; रामपुर रजा लाइब्रेरी ; रामपुर, उत्तर प्रदेश ; रघुनाथ पुस्तकालय, जम्मू ; जम्मू तथा कश्मीर ; सरस्वती भवन लाइब्रेरी, सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश ; श्री रणवीर संस्कृत रिसर्च इंस्टिट्यूट, जम्मू, जम्मू-कश्मीर।

कलाकोश

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपने शोध कार्यक्रमों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं और विशेष रूप से कलातत्वकोश, कलाभूलशास्त्र तथा कलासमालोचन शृंखलाओं के प्रकाशन की योजनाओं के माध्यम से अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं से जुड़ा है और देश के विभिन्न भागों में स्थित कई संस्थाओं तथा विश्वविद्यालयों सहित अनेक विद्वानों तथा शोध संस्थाओं के साथ बराबर संबंध एवं सम्पर्क बनाए हुए है।

आलोच्य वर्ष के दौरान केन्द्र ने जिन सुप्रसिद्ध अकादमिक निकायों के साथ नियमित रूप से सम्पर्क बनाए रखा, उनमें निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं :

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश ; भारतीय अध्ययन का अमरीका संस्थान, वाराणसी, उत्तर प्रदेश ; भारत का मानव वैज्ञानिक सर्वेक्षण, नई दिल्ली ; भारत का पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली ; एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता, पश्चिम बंगाल ; भाण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे, महाराष्ट्र ; भारत कला भवन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश ; भोगीलाल लहरचंद प्राकृत अध्ययन संस्थान, नई दिल्ली ; केन्द्रीय अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा संस्थान, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश ; उच्चतर तिब्बती अध्ययन का केन्द्रीय संस्थान, सारनाथ, वाराणसी, उत्तर प्रदेश ; डेक्कन कालेज, पुणे, महाराष्ट्र ; तुलनात्मक साहित्य विभाग तथा लोक साहित्य विभाग ; संगीत शास्त्र का सम्प्रदाय संस्थान (सम्प्रदाय इंस्टिट्यूट ऑफ म्यूजिकालॉजी), मद्रास, तमिलनाडु ; गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश ; गवर्नमेंट ओरिएंटल मैनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, मद्रास, तमिलनाडु ; भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला, हिमाचल प्रदेश ; भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता, पश्चिमी बंगाल ; जादवपुर विश्वविद्यालय, कलकत्ता, पश्चिम बंगाल ; काशी विद्यापीठ, वाराणसी, उत्तर प्रदेश ; खुदाबख्श लाइब्रेरी, पटना, बिहार ; एल.डी. भारत विद्या संस्थान, अहमदाबाद, गुजरात ; प्राच्य शोध संस्थान, मैसूर, कर्नाटक ; रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कलकत्ता, पश्चिम बंगाल ; सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश ; श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली ; श्रीराम वर्मा गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, तिरुपुनीतुरा, केरल ; कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता, पश्चिम बंगाल ; मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर, कर्नाटक ; पूना विश्वविद्याल, पुणे, महाराष्ट्र।

जनपद सम्पदा

जनपद सम्पदा प्रभाग अपने अकादमिक कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत के भिन्न-भिन्न भागों में क्षेत्र अध्ययनों का संचालन करता है। ये अध्ययन उसके परियोजना निदेशकों के माध्यम से चलते हैं, जो विश्वविद्यालय तंत्र तथा उसके बाहर के विभिन्न अनुसंधान संगठनों से जुड़े हैं। ये परियोजना निदेशक अपने-अपने विश्वविद्यालय या संस्थान के अनुसंधान कार्मिकों की सेवाएं लेते हैं। जनपद सम्पदा प्रभाग का कार्य बहु-विषयक स्वरूप का है। प्रभाग ने मूलभूत विज्ञानों तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों की अग्रणी संस्थाओं के साथ सम्पर्क एवं संवाद स्थापित किया है। इन संस्थाओं में शामिल हैं :-

खगोल-भौतिकी केन्द्र, पुणे ; विज्ञान संस्थान, बंगलौर ; राष्ट्रीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विकास संस्थान ; और भारतीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली। केन्द्र के अनुसंधान कार्यक्रमों में अनेक विश्वविद्यालयों के मानव विज्ञान विभाग भाग ले रहे हैं। इनमें से कुछ जो इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं वे हैं : मानव विज्ञान विभाग, एच.एन. बहुगुणा विश्वविद्यालय, श्रीनगर, उत्तर प्रदेश ; मानव विज्ञान विभाग, नार्थ ईस्टर्न हिल विश्वविद्यालय, मेघालय, और मानव विज्ञान विभाग, मणिपुर। इनके अलावा, मानव संग्रहालय, भोपाल ; मानव जाति अध्ययन संस्थान, उड़ीसा ; मानव विज्ञान विभाग, कलकत्ता के सहयोग से भी कई कार्यक्रम चल रहे हैं। जनजातीय अध्ययन संस्थानों जैसे, आदिम जाति सेवा संघ, अरुणाचल प्रदेश, बिहार, राजस्थान तथा मध्य प्रदेश के जनजातीय संस्थानों के साथ भी परस्पर आदान-प्रदान तथा सम्पर्क-संबंध चल रहे हैं।

अपने *क्षेत्र सम्पदा* कार्यक्रम में, जनपद सम्पदा प्रभाग ने केन्द्रीय तथा राज्यों के पुरातत्व तथा पुरालेख विभागों के साथ, और श्री चैतन्य प्रेम संस्थान, वृंदावन, उत्तर प्रदेश ; भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, और भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद जैसी राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ भी नियमित रूप से सम्पर्क-संबंध बनाए रखा है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत, जनपद सम्पदा प्रभाग बृहदीश्वर परियोजना पर पांडीचेरी के फ्रेंच संस्थान से सहयोग ले रहा है। कलाओं के क्षेत्र में अपने बाल-जगत के कार्यक्रमों, विशेष रूप से पुत्तलिकला तथा संगीत में जनपद सम्पदा प्रभाग राष्ट्रीय स्तर की अनेक संस्थाओं के साथ सम्पर्क एवं सहयोग बनाए रखता है– जैसे, संगीत नाटक अकादमी, क्षेत्रीय संसाधन केन्द्र और प्रदर्शनीय कला संस्थान, उडिपी, कर्नाटक और गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति, नई दिल्ली (गांधी जी पर पुत्तलि कार्यक्रमों के लिए)।

कलादर्शन

इसी प्रकार कलादर्शन प्रभाग ने भी अपनी प्रदर्शनियां तथा अन्य कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए गवर्नमेंट म्यूजियम, मद्रास, तथा भारत भवन, भोपाल, मध्य प्रदेश, जैसी राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं के साथ परस्पर संबंध बना लिए हैं; विशेषकर अब तो राष्ट्रीय प्रदर्शनी कला केन्द्र, मुम्बई तथा राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान, अहमदाबाद, गुजरात के साथ एक नियमित आदान-प्रदान कार्यक्रम बनाया हुआ है।

ज. अन्तर्राष्ट्रीय संवाद

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र भिन्न-भिन्न राष्ट्रों तथा संस्कृतियों में उपलब्ध कलाओं के बीच सक्रिय संवाद के पोषण एवं प्रोत्साहन में संलग्न है। इसके लिए वह सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों सहित अनेक अंतर-सांस्कृतिक कार्यकलाप एवं कार्यक्रम चलाता है जो भारत सरकार द्वारा अनुमोदित हैं। साथ ही, वह भारत आने वाले विशेषज्ञों के अतिरिक्त विदेशी सांस्कृतिक तथा अकादमिक/शैक्षिक निकायों के साथ सम्पर्क बनाए रखता है, और केन्द्र के अपने सदस्यों को अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, अधिवेशनों, संगोष्ठियों आदि में भाग लेने के लिए भेजता है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपने सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के माध्यम से माइक्रोफिल्म, माइक्रोफिश, प्रकाशन, ग्रंथसूचियां, फोटोग्राफ और स्लाइडें प्राप्त करने और समान हित के कार्यक्रम बनाने के अपने उद्देश्यों को पूरा करने का प्रयास करता है।

वर्ष 1994-95 के दौरान, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम 20 देशों के साथ चलता रहा। ये देश हैं : फ्रांस, बंगलादेश, बेल्जियम, मिस्र, फिनलैंड, जर्मनी (जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य), गुयाना, ईरान, इटली, जोर्डन, कजाखस्तान, किरगिजस्तान, मालदीव, रूस, स्पेन, श्रीलंका, तुर्की, तुर्कमेनिस्तान, वेनेजुएला, और वियतनाम। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों में शामिल की गई मदों के कार्यान्वयन के बारे में संगत ब्यौरे अनुबंध में दिए गए हैं।

निम्नलिखित सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों में कुछ नई मदें शामिल करने का प्रस्ताव है :-

(i) भारत-स्वेडन समझौता ज्ञापन
(ii) भारत-जोर्डन सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम 1995-97
(ii) भारत-श्रीलंका सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम 1995-97
(iv) भारत-हंगरी सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम 1994-96
(v) भारत-अर्जेंटाइना सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1994-96
(vi) भारत-इंडोनेशिया सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1994-96
(vii) भारत-सूरिनाम सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1995-97
(viii) भारत-ईरान सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1995-97

आस्ट्रेलिया, संयुक्त राज्य अमरीका और जापान का भारत के साथ सीधे कोई सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम नहीं है। वे अपने सांस्कृतिक आदान-प्रदान का कार्यक्रमशः भारत-आस्ट्रेलिया परिषद, भारत-संयुक्त राज्य अमरीका उप-आयोग और भारत-जापान मिश्रित आयोग जैसे अन्य स्थायी मंचों के माध्यम से चलाते हैं। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र इन सब में भाग लेता है।

वर्ष 1994 में, प्रो. जोहन मैकिम मेलविले, प्रो. जे. डेनियल ब्लाइट तथा प्रो. जोआन लैंडो अर्डमैन, और सुश्री पूर्णिमा कांति लाल शाह नामक चार विद्वानों का भारतीय अध्ययन के अमरीकी संस्थान के माध्यम से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के साथ संबंधन (एफीलिएशन) स्वीकार किया गया। एक रुमानियाई विद्वान श्री मारियन मारिन बलासा का भी भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के माध्यम से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के साथ संबंधन मंजूर किया गया।

बहु-माध्यमिक प्रयोगशाला

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने संयुक्त राज्य अमरीका की कम्पनी जीरोक्स कारपोरेशन के सहयोग से एक बहु-माध्यमिक प्रयोगशाला स्थापित की है जिसमें एक मुख्य ''सर्विसस्टेशन'' एक ''कैप्चर स्टेशन'' और चार ''वर्क स्टेशन'' हैं। इसके अन्तर्गत ''गीतगोविन्द'' पर एक परियोजना प्रारम्भ की जाएगी ; ''गीतगोविन्द'' 12वीं शताब्दी में जयदेव द्वारा संस्कृत में रचित एक संगीत कृति है। इस परियोजना का उद्देश्य कम्प्यूटर अनुकूल सी.डी. तैयार करना है जिसकी सहायता से श्रोताओं को भारतीय संगीत, नृत्य, कलाओं तथा भक्ति की आधारभूत संकल्पनाओं और उनके पारस्परिक संबंधों से परिचित कराया जाएगा। इस परियोजना की अवधि जून, 1994 से दिसम्बर, 1996 तक ढाई वर्ष की है। ''गीतगोविन्द'' विषयक संग्रहालय प्रदेशों के माध्यम से, बहु-माध्यमिक प्रौद्योगिकियों में नवीनतम शोध विधियां विकसित की जाएंगी। इस परियोजना के लिए सोफ्टवेयर डिजाइनर, कलाकार, वीडियो लेखक और अन्य कर्मचारी नियुक्त किए जा चुके हैं और इसका काम शुरु हो गया है। जीरोक्स कार्पोरेशन ने श्री रंजीत मजुमदार को परियोजना लीडर के रूप में नामित किया है। श्री मजुमदार परियोजना पर काम कर रहे हैं।

एक जीरोक्स तकनीकविद् श्री टोनी लोरो ''गीतगोविन्द'' परियोजना के लिए हार्डवेयर/अन्य उपकरणों की स्थापना के संबंध में मई, 1994 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आए थे। टोकियो की फ्यूजी जीरोक्स कम्पनी के एक अन्य विद्वान् श्री ताकेशी शिमिजू ''गीतगोविन्द'' संबंधी उपकरणों के लिए डिजाइन संबंधी परामर्श देने के लिए अगस्त, 1994, अक्तूबर, 1994 और फरवरी, 1995 में कुल मिलाकर तीन बार केन्द्र में पधारे थे। एक एम.आई.टी. के छात्र श्री वा हुन रोह भी ''गीतगोविन्द'' परियोजना के लिए बहु-माध्यमिक डेटा उपलब्धि की रिद्म बाउजिंग तकनीकों पर विशेषज्ञता प्रदान करने के लिए जनवरी-फरवरी, 1995 के दौरान केन्द्र में आए थे।

विदेशों से अनुदान

फोर्ड फाउंडेशन अनुदान : फोर्ड फाउण्डेशन ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की तकनीकी तथा अनुसंधान सुविधाओं के विकास के लिए पहले 250,000 अमरीकी डालर का अनुदान मंजूर किया था। इसमें से फाउण्डेशन ने 24 सितम्बर, 1993 को 125,000 अमरीकी डालर की राशि दे दी थी। फाउण्डेशन द्वारा इस अनुदान की शेष राशि 13 जुलाई, 1994 को दे दी गई। इस अनुदान में से, एक वीडियो सम्पादन एकक स्थापित करने के लिए इस वर्ष उपस्कर प्राप्त कर लिए गए हैं। इस अनुदान में से कुछ राशि का उपयोग तकनीकी कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए भी किया गया। अनुदान की शेष राशि का उपयोग अन्तर्राष्ट्रीय भंडारों से स्रोत सामग्री, प्रलेख, संग्रह प्राप्त करने, परामर्शदाताओं की सेवाएं लेने, कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने आदि के कामों के लिए किया जाएगा।

जापान फाउण्डेशन अनुदान : जापान फाउण्डेशन के पुस्तकालय सहायता कार्यक्रम से वर्ष 1994-95 में कुल मिलाकर 3,05,548 येन मूल्य की 29 पुस्तकें प्राप्त हुई हैं। वर्ष 1995-96 के लिए, 5,31,382 येन मूल्य की 63 पुस्तकों के लिए आवेदन-पत्र प्रस्तुत किया गया है।

इतालवी सहायता : इतालवी तकनीकी सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत केन्द्र में एक संरक्षण प्रयोगशाला की स्थापना के लिए एक संशोधित प्रस्ताव तैयार करके संस्कृति विभाग के पास भेजा गया था। अब इस प्रस्ताव पर अनुवर्ती कार्रवाई की जा रही है।

यू.एन.डी.पी. परियोजना : संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू.एन.डी.पी.) और भारत सरकार के बीच फरवरी, 1994 में हस्ताक्षरित एक करार के माध्यम से, यू.एन.डी.पी. सांस्कृतिक संसाधनों के परस्पर सक्रिय बहु-माध्यमिक प्रलेखन की सुविधा को सुदृढ़ बनाने के लिए, 5 वर्ष की अवधि में, कुल मिलाकर, 22.73 लाख अमरीकी डालर (लगभग 8 करोड़ रुपए) की सहायता देने के लिए सहमत हुआ था। भारतीय पक्ष की ओर से परियोजना की अवधि में 75.5 लाख रुपए तक की राशि की व्यवस्था की जानी है।

अकादमी निदेशक/आचार्या डॉ. कपिला वात्स्यायन राष्ट्रीय परियोजना निदेशक हैं और श्रीमती नीना रंजन राष्ट्रीय परियोजना समन्वयकर्ता। अब परियोजना प्रबंध प्रकोष्ठ स्थापित हो चुका है, और परियोजना के अन्तर्गत अपेक्षित तकनीकी कर्मचारी नियुक्त करने के प्रयत्न किए जा रहे हैं।

प्रारम्भ में एक उपयोगकर्ता समिति बनाई गई थी जिसका उद्देश्य इस परियोजना के निर्माण काल में विद्वानों/उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं का निर्धारण करने के लिए उनके साथ सम्पर्क बनाए रखना था। समिति ने अपनी पहली बैठक 9 जून, 1994 को की थी। उसके बाद राष्ट्रीय परियोजना निदेशक की अध्यक्षता में एक परियोजना सलाहकार समिति गठित की गई है जिसमें संस्कृति विभाग, शिक्षा विभाग, सी.आई.ई.टी./एन.सी.ई.आर.टी., योजना आयोग, एन.आई.सी., वन तथा पर्यावरण मंत्रालय के प्रतिनिधि तथा अन्य विशेषज्ञ हैं। इस समिति का काम मार्गदर्शन व परामर्श देना और विभिन्न नीति विषयक मामलों में सरकार तथा अन्य संस्थाओं के साथ समन्वय सुनिश्चित करना है। परियोजना सलाहकार समिति की पहली बैठक 18.8.1994 को हुई।

एक दो-सदस्यीय अध्ययन दल, जिसमें केन्द्र के राष्ट्रीय परियोजना समन्वयकर्ता तथा तकनीकी विशेषज्ञ सदस्य थे, कला तथा संस्कृति के क्षेत्र में बहु-माध्यमिक प्रयोगों के बारे में विश्व स्तर पर हुए विकास कार्यों का अध्ययन करने, उपयुक्त उपस्कर तथा प्रौद्योगिकी के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने और सम्भावित उपयुक्त अन्तर्राष्ट्रीय परामर्शदाताओं का पता लगाने के लिए 14 अक्तूबर से 3 नवम्बर, 1994 तक के लिए संयुक्त राज्य अमरीका भेजा गया था। इस अध्ययन दल ने हार्वर्ड विश्वविद्यालय और मैसाचूसेट प्रौद्योगिकी संस्थान, कैम्ब्रिज; साइमन्स कालेज, टफ्ट्स विश्वविद्यालय, बोस्टन और कार्नेजी मिलन विश्वविद्यालय, पिट्सबर्ग का दौरा किया और इन संस्थाओं द्वारा संचालित कतिपय परस्पर सक्रिय बहु-माध्यमिक अग्रणी परियोजनाओं का अध्ययन किया।

यूनेस्को

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने यूनेस्को से सहायता प्राप्त करने के लिए 14 प्रस्ताव तैयार किए थे, जिनमें से 10 सहभागिता कार्यक्रम के अन्तर्गत और 4 प्रस्ताव सांस्कृतिक विकास के लिए विश्व दशक के कार्यक्रम के अन्तर्गत विचारार्थ थे। इनमें से 3 प्रस्तावों को यूनेस्को के भारतीय राष्ट्रीय आयोग द्वारा आगे यूनेस्को के पास भेजा गया था। इन 3 आवेदनों में से 2 आवेदन, जो (1) अन्तर्जात सांस्कृतिक आयाम के एकीकरण के लिए सूचना मॉडल और (2) शैल कलाओं के संरक्षण, परिरक्षण तथा प्रबंध के विशेषज्ञों की बैठक से संबंधित थे, यूनेस्को द्वारा क्रमशः 15,000 अमरीकी डालर तथा 10,000 अमरीकी डालर की सहायता के लिए स्वीकार कर लिए गए हैं।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को यूनेस्को द्वारा दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के लिए कला, सांस्कृतिक धरोहर तथा जीवन शैलियों पर क्षेत्रीय डेटा बेस का विकास करने के लिए एक प्रमुख एजेंसी के रूप में मान्यता दी है। इस कार्य के लिए केन्द्र डेटा के मानकीकरण, आदान-प्रदान तथा वितरण के लिए आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करेगा।

सांस्कृतिक धरोहर के विषय में विशिष्ट सूचना प्रणाली स्थापित करने के लिए दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्र के सदस्य देशों की द्वितीय परामर्श बैठक जो पहले 1993 में हुई थी, आलोच्य वर्ष में उसकी रिपोर्ट प्रकाशित कर दी गई।

यूनेस्को चेयर

यूनेस्को के साथ हुए एक संविदा के अन्तर्गत, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने केन्द्र में एक चेयर (पीठ) स्थापित की है। इस चेयर की मुख्य गतिविधियां इस प्रकार हैं :

1. क्षेत्रगत संस्थाओं से संबंध, सम्पर्क तथा क्षेत्र आधारित शोध कार्यों के माध्यम से युवा अनुसंधान अध्येताओं के प्रशिक्षण पर सम्यक ध्यान देते हुए सांस्कृतिक विकास के उन्नत अध्ययन को हाथ में लेना।

2. सांस्कृतिक विकास विषय पर दो कार्यशालाएं और एक क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित करना, जिसमें दक्षिण एशियाई तथा दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के कुछ विद्वान् भाग लेते हैं।

3. दो अध्ययन रिपोर्टें, प्रत्येक की 100 प्रतियों के साथ, यूनेस्को को प्रस्तुत की जाएंगी। इनमें प्राथमिक तथा उच्चतर अध्ययन के लिए मॉडल निर्धारित किए होंगे जिनका संबंध "शिक्षा तथा संस्कृति" और "जीवमंडलीय पर्यावरण" क्षेत्रों से होगा। तीसरी रिपोर्ट इस पीठ की वर्ष भर की गतिविधियों के बारे में सामान्य रिपोर्ट होगी।

प्रोफेसर यी.एन. सरस्वती एक विख्यात मानव वैज्ञानिक तथा विद्वान को यूनेस्को प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया गया है।

भवन परियोजना

नई दिल्ली बसाने के लिए सर एडविन लुटियन ने जो मास्टर प्लान बनाई थी उसमें यह परिकल्पना की गई थी कि क्वीन्सवे और किंग्सवे (जनपथ तथा राजपथ) के चौराहे पर पूर्वोत्तर चौक में राष्ट्रीय अभिलेखागार के सामने, इसी चौराहे के दक्षिण-पूर्व चौक में स्थित राष्ट्रीय संग्रहालय के बजन पर, एक सांस्कृतिक भवन संकुल होगा जिसमें एक राष्ट्रीय रंगशाला होगी। इस योजना के अनुसार, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के लिए इसी स्थल पर स्थान की व्यवस्था की गई है और नई दिल्ली के सैंट्रल विस्टा क्षेत्र में इस केन्द्र को 24.706 एकड़ का एक भू-खंड दिया गया है। यह भू-खंड चारों ओर से जनपथ, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मार्ग, मानसिंह मार्ग और राजपथ की हरित पट्टी से घिरा हुआ है।

अन्तर्राष्ट्रीय डिजाइन प्रतियोगिता के विजेता वास्तुविद् प्रो. राल्फ लर्नर जो संयुक्त राज्य अमरीका के प्रिन्सटन विश्वविद्यालय में प्राध्यापक हैं, के साथ जनवरी, 1988 में स्थापत्य सेवा करार पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद, निर्माण-पूर्व की बहुत सी गतिविधियां सम्पन्न की गईं और 1992 के प्रारम्भ में परियोजना के लिए स्थानीय प्राधिकारियों का अनुमोदन प्राप्त कर लिया गया। तत्पश्चात् जब ब्यौरेवार डिजाइन तथा नक्शे तैयार करने का समय आया तो यह देखा गया कि परियोजना की प्रगति की रफ्तार तेज हो सकती है यदि वास्तुविद् तेज गति से चलें।

स्थापत्य सेवाओं की व्यवस्था में जुलाई, 1992 में परिवर्तन किए गए। संशोधित व्यवस्था के अनुसार, प्रिंस्टन, संयुक्त राज्य अमरीका के वास्तुविद् राल्फ लर्नर की फर्म (क) परिशुद्ध संकल्पना के नक्शे तैयार करने तथा (ख) कुछ विशिष्ट बिन्दुओं पर स्थापत्य परामर्श देने के लिए उत्तरदायी होगी ; और अन्य कार्य जैसे डिजाइन तथा नक्शे तैयार करना, स्थानीय प्राधिकारियों को योजनाएं प्रस्तुत करना तथा कार्य निष्पादन के स्थापत्य पर्यवेक्षण का काम नई दिल्ली के मैसर्स साहनी कन्सल्टैंट्स प्रा. लि. को सौंपा गया, जिन्हें भवन परियोजना समिति के अनुमोदन से, पहले ही राल्फ लर्नर वास्तुविद् की फर्म के साथ सह-वास्तुविद् नियुक्त किया जा चुका था।

संशोधित व्यवस्थाओं के फलस्वरूप कार्य की गति में पर्याप्त तेजी आई और स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा भवन योजनाओं/नक्शों का अनुमोदन, ठेकेदारों के प्रारम्भिक चयन, टेंडर आमंत्रण सहित सभी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद, 10 जून, 1993 को संदर्भ पुस्तकालय भवन का कार्य भौतिक रूप से प्रारम्भ हो गया। इस कार्य के लिए सर्वप्रथम जमीन के स्तर से 30 फुट नीचे एक दो-स्तरीय तहखाना बनाना था, जिसके लिए चौबीसों घंटे पम्प से पानी बाहर निकाल कर निर्माण कार्य के स्थान को सूखा रखना पड़ा। अब, तहखाने और भूमि-तल का कार्य पूरा हो चुका है और ऊपर के तलों का कार्य प्रगति पर है। अधिकांश इमारत में बाहरी जलरोधी (वाटर-प्रूफिंग) कार्य सम्पन्न हो चुका है और पीछे की भराई का काम भी काफी कुछ हो चुका है।

समय की दृष्टि से विभिन्न सेवाओं में सामंजस्य स्थापित करने के लिए, ब्यौरेवार डिजाइन तैयार करने, नक्शे बनाने और टेंडर दस्तावेज तैयार करने का काम हाथ में लिया गया और तापन, वातायन तथा वातानुकूलन की व्यवस्था, बिजली व जलपूर्ति की व्यवस्था और शौचादि की व्यवस्था के निर्माण कार्य, बिजली उपकेन्द्र, आग लगने पर उसका पता लगाना और उस पर काबू पाना और बिजली उत्पाद की वैकल्पिक व्यवस्था के संबंध में ये कार्य पूरे किए गए। किसी भी भवन में इन सहायक सेवाओं के अति महत्व को ध्यान में रखते हुए और सक्षम ठेकेदारों को ही इन निर्माण कार्यों पर ठेका

देने के उद्देश्य से, भवन परियोजना समिति द्वारा यह निर्णय किया गया कि टेंडर दस्तावेज कुछ चुने हुए ठेकेदारों को ही भेजे जाएं। इस उद्देश्य से प्रत्याशित ठेकेदारों की छोटी सूची बनाने के लिए देश के विभिन्न दैनिक समाचारपत्रों के 42 संस्करणों में विज्ञापन देकर आवेदन-पत्र आमंत्रित किए गए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि व्यापक प्रचार के बाद ही ठेकेदारों का चयन किया गया है। तापन, वातायन तथा वातानुकूलन कार्य के लिए बनाई गई छोटी सूची का भवन निर्माण समिति द्वारा अनुमोदन कर दिया गया है और अन्य कार्यों के लिए बड़ी संख्या में प्राप्त आवेदन-पत्रों पर आगे की कार्रवाई की जा रही है। यह योजना बनाई गई है कि भवन की सहायक सेवाओं का निर्माण कार्य आंतरिक परिष्करण कार्य के साथ-साथ ही प्रगति करता रहे। आशा है कि यह भवन जून, 1997 तक बन कर तैयार हो जाएगा।

जहां तक अन्य भवनों का संबंध है, परामर्शदाता वास्तुविद्, श्री राल्फ लर्नर (संयुक्त राज्य अमरीका) से परिशुद्ध संकल्पना के नक्शे प्राप्त होने के बाद, आगे का काम वास्तुविद श्री जसबीर साहनी द्वारा हाथ में लिया गया। स्थानीय निकायों से अनुमोदन प्राप्त करने के लिए प्रस्तुत किए जाने वाले कागज-पत्रों पर भवन परियोजना समिति ने अपनी 27 दिसम्बर, 1993 को हुई बैठक में विचार किया। भवन परियोजना समिति के अनुमोदन के बाद, कुछ अन्य भवनों, अर्थात्, सूत्रधार, भूमिगत गाड़ी स्थान "ख", जनपद सम्पदा, प्रदर्शनी दीर्घाएं तथा आवासीय खंड के निर्माण कार्य को हाथ में लेने के लिए सांविधिक अनुमति प्राप्त करने के उद्देश्य से उक्त दस्तावेज नई दिल्ली नगरपालिका को प्रस्तुत किए गए। नई दिल्ली नगरपालिका ने इन दस्तावेजों की प्रारम्भिक जांच करने और उन्हें हर तरह से पूर्ण पाने के बाद, उन्हें दिल्ली नगर कला आयोग और सैंट्रल विस्टा समिति के पास उनके विचार तथा अनुमोदन के लिए भेज दिया। सैंट्रल विस्टा समिति और दिल्ली नगर कला आयोग ने क्रमशः 10 और 11 मई, 1994 को हुई अपनी बैठकों में इन प्रस्तावों पर विचार किया। दोनों ही उच्च शक्ति प्राप्त निकायों ने प्रस्तावों का अनुमोदन करके नई दिल्ली नगरपालिका के पास अपनी सिफारिशें भेज दी हैं। प्रधान अग्निशमन अधिकारी के कार्यालय में इन प्रस्तावों की गहराई से जांच की गई और प्रधान अग्निशमन अधिकारी ने भी इन योजनाओं को अनुमोदित कर दिया। अब, सांविधिक प्राधिकारी यानी नई दिल्ली नगरपालिका द्वारा अनुमोदन की औपचारिकता शीघ्र ही पूरी किए जाने की आशा है।

अनुबंध

अनुबन्ध-1 पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्यों की सूची; अनुबन्ध-2 पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की सूची; अनुबन्ध-3 केन्द्र के अधिकारियों की सूची; अनुबन्ध-4 पर केन्द्र के परामर्शदाताओं की सूची; अनुबन्ध-5 पर अनुसंधान अध्येताओं की सूची; अनुबन्ध-6 पर वर्ष 1994-95 के दौरान हुई संगोष्ठियों/कार्यशालाओं की सूची; अनुबन्ध-7 पर वर्ष 1994-95 के दौरान हुई प्रदर्शनियों की सूची ; अनुबन्ध-8 पर 31 मार्च, 1995 तक केन्द्र के प्रकाशनों की सूची; अनुबन्ध-9 पर केन्द्र में हुए फिल्म तथा वीडियो प्रलेखनों की सूची; और अनुबन्ध-10 पर अप्रैल, 1994 से 31 मार्च, 1995 तक हुई घटनाओं की तालिका संलग्न है।

अनुबंध-1

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य

1. श्रीमती सोनिया गांधी — न्यास अध्यक्ष
   10, जनपथ,
   नई दिल्ली-110 011
2. श्री आर. वेंकटरामन
   'पोतिगै'
   ग्रीनवेज रोड,
   मद्रास-600 028
3. श्री पी.वी. नरसिंहराव
   7, रेसकोर्स रोड,
   नई दिल्ली-110 011
4. माननीय वित्त मंत्री,
   नॉर्थ ब्लाक, नई दिल्ली
   (पदेन)
5. माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री,
   शास्त्री भवन, नई दिल्ली
   (पदेन)
6. माननीय शहरी विकास मंत्री,
   निर्माण भवन, नई दिल्ली
   (पदेन)
7. अध्यक्ष,
   विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
   बहादुरशाह जफर मार्ग,
   नई दिल्ली-110 002
   (पदेन)
8. उप-कुलपति,
   जामिया मिलिया इस्लामिया,
   जामिया नगर, नई दिल्ली
   (पदेन)
9. श्री पी. एन. हक्सर
   4/9 शांतिनिकेतन,
   नई दिल्ली-110 021
10. श्री आबिद हुसैन,
    मकान नं. 237, सैक्टर 15-ए.,
    नोएडा, उत्तर प्रदेश

11. श्रीमती पुपुल जयकर,
हिम्मत निवास, भूमि ताल,
31, डूंगरी रोड, मालाबार हिल्स,
मुम्बई-400 006

12. श्री रामनिवास मिर्धा,
अध्यक्ष, ललित कला अकादमी,
रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली-110 001

13. प्रो. यशपाल,
11-बी., सुपर डीलक्स फ्लैट,
सेक्टर 15-ए.,
नोएडा, उत्तर प्रदेश

14. श्री सत्यम् जी. पित्रोदा,
44, लोदी एस्टेट,
नई दिल्ली-110 003

15. श्री एच.वाई. शारदा प्रसाद,
19, मैत्री अपार्टमेंट्स,
ए.-3, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली-110 063

16. श्री के. नटवर सिंह,
डी-1/37, वसंत विहार,
नई दिल्ली-110 057

17. श्रीमती एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी,
'शिवम्-शुभम्'
11, पहली मेन रोड,
कोट्टुरपुरम,
मद्रास-600 085

18. श्री अशोक वाजपेयी
सी II/43,
शाहजहां रोड,
नई दिल्ली-110 011

19. डॉ. कपिला वात्स्यायन,
डी.-1/23 सत्यमार्ग,
नई दिल्ली-110 021

20. श्री एम.सी. जोशी, सदस्य सचिव
सी.-II /64, शाहजहां रोड,
नई दिल्ली-110 002

अनुबंध-2

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्य

1.	श्री पी.वी. नरसिम्हा राव 7, रेसकोर्स रोड, नई दिल्ली-110 011 (न्यास सदस्य)	अध्यक्ष
2.	डॉ. मनमोहन सिंह वित्त मंत्री, भारत सरकार नॉर्थ ब्लाक, नई दिल्ली (न्यास सदस्य)	सदस्य (पदेन)
3.	डॉ. पी.सी. एलेक्जेंडर राज्यपाल, महाराष्ट्र राजभवन, मालाबार हिल्स, मुम्बई-400 035	सदस्य
4.	श्री आबिद हुसैन मकान नं. 237, सेक्टर-15-ए., नोएडा (न्यास सदस्य)	सदस्य
5.	श्री एच.वाई. शारदा प्रसाद 19, मैत्री अपार्टमेंट्स, ए.-3, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110 063 (न्यास सदस्य)	सदस्य
6.	श्री प्रकाश नारायण 11, तालकटोरा रोड, नई दिल्ली-110 001	सदस्य
7.	डॉ. कपिला वात्स्यायन डी-I/23 सत्यमार्ग, नई दिल्ली-110 021 (न्यास सदस्य)	शैक्षिक निदेशक (आचार्या)
8.	श्री एम.सी. जोशी सी.-II/64, शाहजहां रोड, नई दिल्ली-110 011 (न्यास सदस्य)	सदस्य सचिव

अनुबंध-3

अधिकारियों की सूची

डॉ. कपिला वात्स्यायन, अकादमिक निदेशक/आचार्या
डॉ. एम.सी. जोशी, सदस्य सचिव

कलानिधि प्रभाग

(क)

1.	डॉ. टी.ए.वी. मूर्ति	पुस्तकालयाध्यक्ष
2.	डॉ. सम्पत् नारायण	विषय स्कॉलर
3.	श्री ऋषि पाल गुप्ता	प्रशासन अधिकारी
4.	श्री आत्म प्रकाश गक्खड़	उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
5.	डॉ. अरूप बनर्जी	असोशिएट प्रोफेसर
6.	श्री गोपाल सक्सेना	नियंत्रक, वीडियो प्रलेखन
7.	श्री जे.पी. सैनी	प्रशासन अधिकारी
8.	श्री ए. एन. खन्ना	वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
9.	श्री बेअंत कृष्ण रामपाल	वरिष्ठ अनुलिपिक अधिकारी
10.	श्री वी. कोटनाला	अनुलिपिक अधिकारी
11.	श्री दिलीप कुमार	प्रलेखन अधिकारी

कलाकोश प्रभाग

पुष्पालय

1.	पं. सातकड़ि मुखोपाध्याय	समन्वयकर्ता
2.	श्री टी. राजगोपालन	प्रशासन अधिकारी
3.	डॉ. नारायण दत्त शर्मा	अनुसंधान अधिकारी
4.	श्री शुभदत्त डोगरा	सहायक सम्पादक
5.	डॉ. अद्वैतवादिनी कौल	सहायक सम्पादक

वाराणसी कार्यालय

6.	डॉ. बेट्टिना बॉमर	अवैतनिक समन्वयकर्ता
7.	श्री हेमेन्द्रनाथ चक्रवर्ती	प्रधान पंडित
8.	डॉ. उर्मिला शर्मा	अनुसंधान अधिकारी
9.	डॉ. सुकुमार चट्टोपाध्याय	अनुसंधान अधिकारी
10.	डॉ. नरसिंह चरण पांडा	अनुसंधान अधिकारी

जनपद सम्पदा प्रभाग

1.	प्रो. वैद्यनाथ सरस्वती	यूनेस्को प्रोफेसर एवं परियोजना निदेशक
2.	डॉ. ए.के. दास	समन्वयकर्ता
3.	श्री वाई.पी. गुप्ता	प्रशासन अधिकारी
4.	डॉ. मौलि कौशल	अनुसंधान अधिकारी
5.	डॉ. बंसीलाल मल्ला	अनुसंधान अधिकारी

6.	डॉ. गौतम चटर्जी	सहायक सम्पादक
7.	डॉ. पी.टी. देशपांडे	आलेखक

इम्फाल कार्यालय

8.	श्री अरिबाम श्याम शर्मा	अवैतनिक समन्वयकर्ता

कलादर्शन प्रभाग

1.	श्री वसंत कुमार	संयुक्त सचिव (पी.एण्ड.ई.)
2.	डॉ. मधु खन्ना	एसोसिएट प्रोफेसर
3.	श्री श्यामल कृष्ण सरकार	कार्यक्रम निदेशक
4.	श्री एस.एस. सैनी	प्रशासन अधिकारी
5.	कु. सबोहा ए. जैदी	कार्यक्रम अधिकारी

सूत्रधार प्रभाग

1.	श्रीमती नीना रंजन	संयुक्त सचिव (आई.डी.)
2.	श्री एस.एल. टक्कर	निदेशक (ए.एण्ड.एफ.)
3.	श्री एस.पी. अग्रवाल	मुख्य लेखा अधिकारी
4.	श्री आर.सी. सहोत्रा	निजी सचिव
5.	श्री पी.पी. माधवन्	निजी सचिव
6.	श्री एन.के. वर्मा	अवर सचिव (एस.डी.)
7.	श्री भरत प्रसाद	अवर सचिव (एस.एण्ड.एस.)
8.	श्री सर्वजीत सिंह	अवर सचिव (आई.डी.)
9.	श्रीमती सविता प्रभाकर	अवर सचिव (आई.डी.पी.)
10.	श्री पी.एस. ब्रह्मचारी	आंतरिक लेखा परीक्षा अधिकारी
11.	श्री एस.सी. जैन	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
12.	श्री एस.पी. शर्मा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
13.	श्री आर.के. गुप्ता	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
14.	श्री ओ.डी. डोगरा	निजी सचिव
15.	श्री एस.एल. दीवान	निजी सचिव

अनुबंध–4

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में परामर्शदाताओं की सूची

1. डॉ. ललित मोहन गुजराल
   परामर्शदाता,
   कलाकोश प्रभाग

2. प्रो. माधवन के. पालत
   अवैतनिक परामर्शदाता,
   स्लाविक एवं मध्य एशियाई अध्ययन
   कलानिधि प्रभाग

3. प्रो. तान चुंग
   परामर्शदाता,
   चीनी–भारतीय अध्ययन,
   कलानिधि प्रभाग

4. श्री वी. रघुराम अय्यर
   जन–सम्पर्क परामर्शदाता,
   सूत्रधार प्रभाग

5. सुश्री कृष्णा दत्त
   परामर्शदाता,
   जनपद सम्पदा प्रभाग

6. डॉ. आर.के. परती
   परामर्शदाता (संग्रहालय)
   कलानिधि प्रभाग

7. सुश्री कृष्णा लाल
   अवैतनिक सलाहकार,
   कलानिधि प्रभाग

अनुबंध-5

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में वरिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं/ कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं की सूची

कलानिधि प्रभाग

संदर्भ पुस्तकालय

1.	डॉ. जयश्री	वरिष्ठ अध्येता (मद्रास)
2.	श्री जे. मोहन	कनिष्ठ अध्येता (मद्रास)
3.	श्री पी.पी. श्रीधर उपाध्याय	कनिष्ठ अध्येता (मद्रास)
4.	कु. निशि ओहरी	कनिष्ठ अध्येता (शिमला)

सांस्कृतिक संग्रहालय

5.	श्रीमती नवीना जाफा	कनिष्ठ अध्येता

चीनी-भारतीय अध्ययन कक्ष

6.	श्रीमती भाग्यलक्ष्मी	कनिष्ठ अध्येता
7.	कु. राधा बनर्जी	कनिष्ठ अध्येता

स्लाविक एवं मध्य एशियाई अध्ययन कक्ष

8.	श्री थॉमस जे. मैथ्यूस	कनिष्ठ अध्येता

कलाकोश प्रभाग

1.	श्रीमती अंजु उपाध्याय	वरिष्ठ अध्येता
2.	डॉ. विजय शंकर शुक्ल	वरिष्ठ अध्येता
3.	डॉ. निहारिका लाल	कनिष्ठ अध्येता (वाराणसी)
4.	श्री सदानंद दास	कनिष्ठ अध्येता (वाराणसी)
5.	कु. प्रणति घोषाल	कनिष्ठ अध्येता (वाराणसी)

जनपद सम्पदा प्रभाग

1.	डॉ. नीता माथुर	वरिष्ठ अध्येता
2.	कु. ऋचा नेगी	कनिष्ठ अध्येता
3.	कु. रत्ना भट्टाचार्य	कनिष्ठ अध्येता
4.	श्री रमाकर पंत	कनिष्ठ अध्येता
5.	श्री राकेश खंडूरी	कनिष्ठ अध्येता

अनुबंध-6

वर्ष 1994-95 के दौरान हुई प्रदर्शनियां

क्र. सं.	प्रदर्शनी का शीर्षक	अवधि	प्रभाग का नाम
1.	''राजा दीन दयाल की धरोहर'' (भारत भवन भोपाल, मध्य प्रदेश में हुई)	31 मार्च से 15 अप्रैल, 1994	कलानिधि
2.	''हवाई रूपांतरण का भू-दृश्य'' डेविड उलरिच छायाचित्र संग्रह (इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में हुई)	9-13 अगस्त, 1994	कलानिधि
3.	''राजा दीन दयाल की धरोहर'' (राष्ट्रीय प्रदर्शनीय कला केन्द्र, मुम्बई में हुई)	8-30 अक्तूबर, 1994	कलादर्शन
4.	''प्रियदर्शिनी'' श्रीमती इन्दिरा गांधी के जीवन विषयक चित्रकारियों की प्रदर्शनी (नई दिल्ली में हुई)	19 नवम्बर, 1994	जनपद सम्पदा
5.	''रावारी कशीदाकारी'' विषयक प्रदर्शनी (माटी घर, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, (नई दिल्ली में हुई)	1-30 मार्च, 1994	जनपद सम्पदा

अनुबंध-7

वर्ष 1994-95 के दौरान हुई संगोष्ठियां/कार्यशालाएं

क्र. सं.	शीर्षक	अवधि	प्रभाग का नाम
1.	"नगर एवं नक्षत्र : भारत की ब्रह्माण्डीय नगर ज्यामिति" विषय पर संगोष्ठी (सम्मेलन कक्ष, नं. 3 राजेन्द्र प्रसाद रोड, नई दिल्ली में हुई)	14 अप्रैल, 1994	कलाकोश
2.	"सूक्ष्मलेखनीय तकनीकें" विषय पर कार्यालय -एवं-प्रशिक्षण (सम्मेलन कक्ष, नं. 3, राजेन्द्र प्रसाद रोड, नई दिल्ली में हुई)	25 से 27 अप्रैल, 1994	कलानिधि
3.	"पांडुलिपि विज्ञान" विषयक कार्यशाला (लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय विद्यापीठ के सहयोग से) (नई दिल्ली मे हुई)	14 से 30 मई, 1994	कलाकोश
4.	"ध्वनि" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में हुई)	24 से 25 अक्तूबर, 1994	जनपद सम्पदा
5.	"पांडुलिपि विज्ञान तथा पुरालिपि शास्त्र" विषय पर कार्यशाला (पुणे विश्वविद्यालय के सहयोग से) (पुणे में हुई)	3 से 24 जनवरी, 1995	कलाकोश
6.	"भारत एवं चीन : परस्पर दृष्टि" विषय पर संगोष्ठी (नई दिल्ली में हुई)	16 फरवरी, 1995	कलानिधि
7.	"पुरालेख शास्त्र" विषयक कार्यशाला (इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली में हुई)	24 फरवरी, 1995	कलाकोश

अनुबंध-8

मार्च, 1995 तक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशनों की सूची

क. कलातत्वकोश ग्रंथमाला

1. कलातत्वकोश : भारतीय कलाओं की आधारभूत संकल्पनाओं का कोष, खण्ड-1

यह एक आदर्श (मॉडल) खण्ड है जिसमें भारतीय कलाओं की आठ आधारभूत संकल्पनाओं, अर्थात् ब्रह्मन्, पुरुष, आत्मन्, शरीर, प्रमाण, बीज, लक्षण और शिल्प का विवेचन किया गया है। ये पारिभाषिक शब्द बहुत व्यापक अर्थ लिए हुए हैं। इन शब्दों ने कलाओं के सिद्धांत तथा व्यवहार दोनों पक्षों को प्रभावित किया है। सुयोग्य विद्वानों तथा विशेषज्ञों द्वारा समालोचनात्मक पद्धति पर किए इन संकल्पनाओं के विवेचन में उनके प्रयोग तथा उद्धरणों के माध्यम से उनके बहुस्तरीय अर्थों को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बेट्टिना बॉमर
सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड,
जवाहरनगर, दिल्ली-110007
1988, पृष्ठ : xxxviii+189, मूल्य : 200 रु.

2. कलातत्वकोश : भारतीय कलाओं की आधारभूत संकल्पनाओं का कोश, खण्ड-2

इस खण्ड में ''दिक्'' और ''काल'' विषयक बीजभूत पारिभाषिक शब्दों का विवेचन शामिल है। इन पारिभाषिक शब्दों का तत्वमीमांसा से लेकर विज्ञान तथा कलाओं तक के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित प्राथमिक ग्रंथों की व्यापक छानबीन के द्वारा विवेचन किया गया है। इन शब्दों पर लिखे गए निबंधों को पढ़कर पाठक विभिन्न संदर्भों में इन संकल्पनाओं के बहु-स्तरीय अर्थ समझ सकता है। इस खण्ड में सम्मिलित किए गए शब्द हैं : *बिन्दु, नाभि, चक्र, क्षेत्र, लोक, देश, काल, क्षण, क्रम, संधि, सूत्र, ताल, मान, लय, शून्य, पूर्ण।*

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बेट्टिना बॉमर
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
1992, पृष्ठ : xxxii+478, मूल्य : 450 रुपए

ख. कलामूत्रशास्त्र ग्रंथमाला

3. मात्रालक्षणम् (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं.-1)

यह खण्ड इस कृति की पूर्ण रूप से उपलब्ध दो पांडुलिपियों पर आधारित है और साथ में इसका अंग्रेजी अनुवाद तथा विस्तृत टिप्पणियां भी दी गई हैं। यह खण्ड अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि सम्भवः ऐसा प्रथम ग्रंथ है जिसमें समय की मात्रा की संकल्पना पर विचार किया गया है, यानी छंदों के लिखित रूप पर स्वराघात तथा बलाघात दर्शाने वाले उच्चारण चिह्न लगाने तथा उनका सस्वर पाठ करने की शैली को लिखित रूप में प्रस्तुत करने का यह प्रथम प्रयास है।

यह ग्रंथ संगीतज्ञों, संगीतशास्त्रियों, सामवेद के गायकों, यहां तक कि उन शोधकर्ताओं के लिए भी अनिवार्य रूप से पठनीय है जो वैदिक संगीत के स्वरों तथा उनका भारत के शास्त्रीय और लोक संगीत पर प्रभाव, विषय पर शोधकार्य में रुचि रखते हैं।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : थेन हॉवर्ड
सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41, यू.ए. बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
1988, पृष्ठ : xvi+98, मूल्य : 150 रुपए

4. दत्तिलम् (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 2)

यह "गंधर्व" का सार-संग्रह है जो वैदिक संगीत का प्रतिरूप या प्रतिपक्ष और अवैदिक संगीत का मूलाधार है। यह अपनी ही कोटि का एक अनुपम ग्रंथ है और इसलिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भरत के नाट्यशास्त्र में किए गए इस विषय के प्रतिपादन का निचोड़ प्रस्तुत करता है और साथ ही एक तरह से उसका अनुपूरक भी है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : मुकुंद लाठ
सह प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41, यू.ए. बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
1988, पृष्ठ : xvii+236, मूल्य : 300 रुपए

5. श्रीहस्तमुक्तावली (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 3)

भारत के विभिन्न भागों में 17वीं शताब्दी तक संगीत, नृत्य और नाट्य विषयों पर अनेक पुस्तकें लिखी जाती रहीं। 12वीं से 16वीं सदी के बीच क्षेत्रीय शैलियां उभर आईं। सभी भागों में मध्यकालीन ग्रंथ खोजे गए हैं। उनमें से एक है *श्रीहस्तमुक्तावली* जो पूर्वी परम्परा से सम्बद्ध है। यद्यपि इसके उद्भव के विषय में अस्पष्टता है, इसका पाठ मैथिली तथा असमिया प्रतिलिपियों में पाया गया है। लेखक ने अपने प्रयास को 'हस्त' (हस्त संकेतों) के विस्तृत विवेचन तक ही सीमित रखा है। डॉ. महेश्वर नियोग ने बड़ी सावधानी से इसके पाठ का सम्पादन तथा अनुवाद किया है और साथ ही *नाट्यशास्त्र* तथा *संगीतरत्नाकर* की परम्परा से उसकी समानताओं तथा भिन्नताओं को दर्शाया है। यह ग्रंथ उन हस्तसंकेतों की भाषा पर पर्याप्त प्रकाश डालता है जो सम्भवतः पूर्वी प्रदेशों में अपनाए जाते रहे होंगे।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : महेश्वर नियोग
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
1992, पृष्ठ : xii+205, मूल्य : 300 रुपए

6. कविकर्णेरपाला, 4 खंडों में (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 4, 5, 6, 7.)

17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बंगला भाषा में रचित कविकर्ण के "सोलोपाला" यानी सत्यनारायण के गुणानुवाद के 16 पदों का गायन समकालीन उड़ीसा में व्यापक रूप से प्रचलित है। सत्यनारायण की पूजा और व्रतकथा का वाचन तथा उसके पश्चात् 'शिरनी'-खास किस्म के मुस्लिम प्रसाद का वितरण जो 'सत्यपीर' (जैसा कि पाला/पदों में सत्यनारायण को कहा गया है) को चढ़ाया जाता है। भारत में सर्वत्र हिन्दुओं द्वारा इसी समेकित प्रक्रिया को अपनाया जाता है। इन पालाओं सहित, सभी भारतीय भाषाओं में उपलब्ध व्रत कथाओं का उद्गम स्कंद पुराण के रेवा खण्ड में पाया जाता है। परन्तु 'सत्यपीर' शब्द किसी भी व्रत कथा में नहीं मिलता, केवल कविकर्ण के पालाओं में ही प्रयुक्त हुआ है। एक मुस्लिम फकीर का अपने सभी पालाओं में उल्लेख करके और 'शिरनी' को 'प्रसाद' के तौर पर बंटवा कर कविकर्ण ने धार्मिक तथा कर्मकांडीय धरातलों पर सांस्कृतिक समन्वय स्थापित करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है जो राष्ट्रीय एकता की दिशा में एक बहुमूल्य योगदान है। कविकर्ण ने अपने 16 पालाओं को जिस क्रम से रखना चाहा था उसी क्रम को इस पुस्तक में अपनाया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : विष्णुपद पाण्डा
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
1992, पृष्ठ : ci+1182, मूल्य : 1200 रुपए (4 खण्ड)

7. बृहद्देशी खण्ड-1 (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 8)

संगीत के क्षेत्र में बृहद्देशी पहला उपलब्ध ग्रंथ है जिसमें *राग* का वर्णन किया गया है, *सारिगम* के विषय में बताया गया है, *श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्च्छना* आदि के बारे में नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है और देशी तथा उसके प्रतिरूप मार्ग की संकल्पना को प्रतिष्ठापित किया गया है।

यद्यपि पांडुलिपि की खोज के अभाव में, यह ग्रंथ अभी तक अपूर्ण है, तथापि यह संकस्करण, जहां तक इसका व्याप्ति क्षेत्र है जो कि पर्याप्त रूप से व्यापक है, अध्ययन एवं शोध के प्रयोजन से काफी उपयोगी होगा। सम्पूर्ण कृति तीन खण्डों में प्रकाशित की जाएगी।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : प्रेमलता शर्मा
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
1992, पृष्ठ : xviii+194, मूल्य : 275 रुपए

8. कालिकापुराणे मूर्तिविनिर्देश : (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 9)

कालिकापुराणे मूर्तिविनिर्देश : कालिकापुराण में से लिए गए लगभग 550 श्लोकों का संग्रह है, जिसमें अनेक देवी-देवताओं तथा अंशावतारों का शारीरिक वर्णन किया गया है। उनमें कुछ तो केवल संकल्पनात्मक हैं, किन्तु कुछ अन्य पत्थर तथा धातु प्रतिमाओं के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।

कालिकापुराण ईसा की नौवीं शताब्दी के अंतिम दशकों या दसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल का एक महत्वपूर्ण उप-पुराण है। इसकी रचना प्राचीन असम (कामरूप) में मातृदेवी कामाख्या के गुणानुवाद और उसकी आराधना की कर्मकाण्डीय विधि बताने के लिए की गई थी। *कालिकापुराण* के विभिन्न अध्यायों में विभिन्न देवी-देवताओं के विषय में बिखरे हुए श्लोकों को प्रत्येक देवता का सम्पूर्ण चित्रण प्रस्तुत करने के लिए देवतानुसार संकलित किया गया है। संस्कृत मूलपाठ के साथ-साथ प्रत्येक श्लोक का अंग्रेजी में यथार्थ अनुवाद भी दिया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : विश्वनारायण शास्त्री
सह-प्रकाशक : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
1994, पृष्ठ : xxxiv+159, मूल्य : 250 रुपए

9. बृहद्देशी खण्ड-2 (क.मु.शा. ग्रंथमाला सं. 10)

इस खण्ड में *बृहद्देशी* के प्रबन्धाध्याय तक का सम्पूर्ण उपलब्ध पाठ प्रस्तुत किया गया है। यह *जाति* के विवेचन से प्रारम्भ होकर ग्रामराग तथा याष्टिक एवं शार्दूल के अनुसार उनकी परिभाषाएं देते हुए *देशी रागों* का आंशिक वर्णन करके प्रबंधाध्याय के साथ समाप्त हो जाता है। इस खण्ड के मूलपाठ का कलेवर प्रथम खण्ड में प्रस्तुत पाठ से लगभग दोगुना है। मूल पाठ में दिए गए इन विषयों के विवेचन की प्रमुख विशेषताएं 'विमर्श' में यत्र-तत्र इंगित की गई हैं। किन्तु ये केवल बिन्दुओं के अनुसार ही स्पष्टीकरण हैं। तृतीय खण्ड में जो समालोचना दी जाएगी वही सम्पूर्ण मूल ग्रंथ की विषयवस्तु की समीक्षा प्रस्तुत करेगी। उसमें पूर्ववर्ती तथा परवर्ती ग्रंथों के माध्यम से दृष्टिपात किया जाएगा।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : प्रेमलता शर्मा
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
1994, पृष्ठ : xviii+320, मूल्य : 300 रुपए

10. काण्वशतपथ ब्राह्मणम् खण्ड-1 (क.मु.शा. ग्रंथमाला सं. 12)

यह पहला अवसर है जबकि शुक्ल यजुर्वेद की काण्व शाखा के शतपथ ब्राह्मण का एक सम्पूर्ण आलोचनात्मक संस्करण अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशित हुआ है। इस संस्करण में, तेलुगु लिपि में प्रकाशित पाठों के अलावा, कुछ अन्य पांडुलिपियों में उपलब्ध पाठान्तरों को भी ध्यान में रखा गया है, जो प्रो. कैलेंड को उपलब्ध नहीं थे जिन्होंने इसके प्रथम सात कांडों का समालोचनात्मक संस्करण निकाला था। यह सम्पूर्ण अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत करने का भी प्रथम प्रयास है। निस्संदेह माध्यन्दिन तथा काण्व शाखा के शतपथ ब्राह्मण के पाठों में उसके आठम से षोडश तक के कांडों में कोई विशेष अंतर नहीं है और पूर्वोक्त का प्रो. ईगलिंग का अनुवाद उपलब्ध है, फिर भी श्रौत यज्ञों के कर्मकांडों में सक्रिय रूप से संलग्न परम्परागत विद्वानों के साथ विशद विचार-विमर्श के फलस्वरूप परवर्ती भाग का नए सिरे से अनुवाद करना आवश्यक समझा गया।

पाठान्तर-विशेष को अपनाने का आधार बताने के लिए मूलपाठ संबंधी टिप्पणियां; मूलपाठ के अध्ययन के फलस्वरूप उत्पन्न हुए कुछ चुने हुए प्रश्नों पर चर्चास्वरूप 'विमर्श' शीर्षक खण्ड; ब्राह्मण ग्रंथों के अनुसार विषयवस्तु की विस्तृत सूची और पारिभाषिक शब्दों की सूची इस प्रयास की कुछ अतिरिक्त विशिष्टताएं हैं। श्रौत यागों के विशेषज्ञ परम्परागत विद्वानों से प्राप्त सुझाव और मार्गदर्शन इस संस्करण की श्रेष्ठता के प्रतीक हैं।

इस खण्ड में पहले कांड का पाठ अनुवाद के साथ पाठविमर्श सहित प्रस्तुत किया गया है। शेष भाग को कलामूलशास्त्र ग्रंथमाला के अन्य खंडों में प्रकाशित किया जाएगा।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : सी.आर. स्वामिनाथन्
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
1994, पृष्ठ : xxiii+168, मूल्य : 300 रुपए

11. स्वायम्भुवसूत्रसंग्रह : (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 13)

स्वायम्भुवसूत्रसंग्रह : शैवसिद्धांत 28 आगमों की परम्परागत सूची में तेरहवां आगम है। शैव सम्प्रदाय के प्राचीनतम आचार्यों में से एक आचार्य सद्योज्योति ने इसके विद्यापाद खण्ड पर एक टीका लिखी थी। इसमें जिन विषयों का विवेचन किया गया है वे हैं : पशु अर्थात् बंधनयुक्त जीवात्मा; पाश यानी बंधन; अनुग्रह अर्थात् प्रभुकृपा और अध्वन् यानी मुक्ति प्राप्ति के मार्ग। सद्योज्योति ने इन संकल्पनाओं द्वारा उठाई गई दार्शनिक समस्याओं पर सुनिश्चित एवं आत्यन्तिक दृष्टिकोण अपनाया है। उसने उनके कर्मकांडीय आधार पर बल दिया है, जो कि तांत्रिक साहित्य की मूल प्रवृत्ति और शैव धर्म का मर्म है। इस पुस्तक में सद्योज्योति की टीका के मूलपाठ का समालोचनात्मक सम्पादन करके उसे अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : पिएरे सिलवैन फिलियोजा
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
1994, पृष्ठ : xxxviii+144, मूल्य : 200 रुपए

12. मयमतम् खण्ड 1 व 2 (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 14 और 15)

मयमतम् एक वास्तुशास्त्रीय अर्थात् वास (घर) विषयक ग्रंथ है और इस प्रकार यह देवी-देवताओं तथा मनुष्यों के वासगृहों के संबंध में उनके निर्माणस्थल से लेकर मंदिर की दीवारों के प्रतिमा विज्ञान तक सभी पक्षों का विवेचन करता है। इसमें ग्रामों एवं नगरों तथा देवालयों, घरों, भवनों एवं प्रासादों के यथार्थ विवरण प्रचुर मात्रा में दिए गए हैं। यह ग्रंथ मकान के लिए उचित स्थान एवं दिशा, सही आयाम और उपयुक्त सामग्री के चयन के बारे में निर्देश देता है। यह एक ओर वास्तुविद् के लिए विशेषपुस्तक है तो दूसरी ओर जनसाधारण के लिए मार्गदर्शक पुस्तक। दक्षिण भारत के पारम्परिक स्थपतियों के चिंतन की उपज यह पुस्तक इस समय पर्याप्त रुचि का विषय है जब सभी क्षेत्रों में उपलब्ध तकनीकी परम्पराओं को इस उद्देश्य से जांचा-परखा जा रहा है कि क्या आज उनका उपयोग हो सकता है।

डॉ. ब्रूनो दाजां द्वारा तैयार किए गए इस द्विभाषी संस्करण में समालोचनात्मक रूप से सम्पादित संस्कृत मूलपाठ दिया गया है जो कि इसी सम्पादक द्वारा पहले सम्पादित उस संस्करण का संशोधित एवं परिष्कृत रूप है जो पांडिचेरी के फ्रैंच इंडोलॉजी संस्थान के प्रकाशनों में प्रकाशन संख्या-40 के रूप में प्रकाशित हुआ है। पूर्व-प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद भी अब प्रचुर टिप्पणियों के साथ संशोधित कर दिया गया है। इस संस्करण की उपयोगिता इसमें विश्लेषणात्मक विषयवस्तु की तालिका तथा विस्तृत शब्दावली जोड़ देने से और भी बढ़ गई है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : ब्रूनो दाजां
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
1994, पृष्ठ : ci+978, मूल्य : 1000 रुपए

13. शिल्परत्नकोश (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 16)

शिल्परत्नकोश 17वीं शताब्दी में उड़ीसा के स्थापक निरञ्जन महापात्र द्वारा रचित ग्रंथ है जिसमें मंदिर के सभी भागों और उड़ीसा के मुख्य-मुख्य मंदिर रूपों, जैसे 'मंजुश्री' तथा 'खाकार' का वर्णन किया गया है। इसमें एक खण्ड मूर्तिकला (प्रासादमूर्ति) पर भी है और मूर्ति निर्माण (प्रतिमालक्षण) पर एक परिशिष्ट जोड़ा गया है। यह ग्रंथ यद्यपि इसमें वर्णित मंदिरों के निर्माण काल से बहुत बाद की रचना है, अपने समय की जीवंत परम्परा का चित्रण करता है और उड़ीसा के मंदिर स्थापत्य संबंधी शब्दावली को स्पष्ट करने में बहुत सहायक है। तथापि इस ग्रंथ का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह है कि इसने श्रीचक्र के साथ मंजुश्री मंदिर के तादात्म्य का निरूपण किया है जिसके फलस्वरूप लेखकों को भुवनेश्वर के राजरानी मंदिर के बारे में यह जानने में सहायता मिली है कि यह मंदिर श्रीचक्र के रूप में राजराजेश्वरी को समर्पित है।

इस प्रकाशन का मूल पाठ तीन तालपत्रीय पांडुलिपियों के आधार पर सम्पादित तथा अनूदित किया गया है और साथ में बहुत से चित्र (रेखाचित्र एवं तस्वीरें) दिए गए हैं। साथ में दी गई शब्दावली पुस्तक की उपयोगिता को बढ़ाती है। यह ग्रंथ अब तक प्रकाशित शिल्प/वास्तु साहित्य की श्रीवृद्धि करने वाला एक महत्वपूर्ण प्रकाशन है और यह उड़ीसा के मंदिर स्थापत्य में रुचि रखने वाले जिज्ञासुओं के लिए बहुत उपयोगी होगा।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बेट्टिना बॉमर तथा राजेन्द्र प्रसाद दास
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
1994, पृष्ठ : xii + 229 + प्लेटें, मूल्य : 400 रुपए

14. नर्तननिर्णय खण्ड-1 (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 17)

यह भारतीय संगीत एवं नृत्य पर, संगीत रत्नाकर के बाद रचे जाने वाले ग्रंथों में से एक है। यह अपने काल (ईसा की 16वीं शताब्दी) की इन कलाओं के सिद्धांत और व्यवहार दोनों पक्षों की जानकारी के लिए एक प्रमाणिक स्रोत है। यद्यपि यह एक सीधी-सादी और सुस्पष्ट साहित्यक शैली में लिखा गया है तथापि यह अपने चित्रोपम वर्णनों के माध्यम से विशद कल्पनाशीलता प्रस्तुत करता है।

एक अद्वितीय क्रमबद्ध योजना के अन्तर्गत, *नर्तननिर्णय* में उसके प्रथम तीन अध्यायों में नृत्य के प्रति क्रमशः करताल वादक, मृदंग वादक और गायक के योगदान का वर्णन करने के बाद अंतिम तथा सबसे लम्बे चतुर्थ अध्याय में नर्तक की कला का विवेचन किया गया है। इस अध्याय में कला से संबंधित वर्णमाला, शब्दावली, व्याकरण तथा मुहावरे के विषय में ही नहीं, अपितु उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत की कुछ नृत्य शैलियों समेत (कुछ को तो वस्तुतः निरूपित किया गया है), प्रस्तुति संबंधी परम्पराओं तथा रंगपटल में भी नई विशेषताओं का समावेश किया गया है। इसमें बंध नृत्य तथा अनिबंध नृत्य का जो विशद विवेचन प्रस्तुत किया गया है वह परम्परावादी तथा नवाचारवादी दोनों प्रकार के नर्तकों के लिए गम्भीरतापूर्वक ध्यातव्य है।

इस ग्रंथ का सम्पूर्ण मूल पाठ एक विस्तृत एवं विद्वत्तापूर्ण टीका के साथ 3 खण्डों में प्रकाशित किया जाएगा।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : आर. सत्यनारायण
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
1994, पृष्ठ : xiii+357, मूल्य : 450 रुपए

ग. कलासमालोचन ग्रंथमाला

15. राम लेजेण्ड एण्ड राम रिलीफ्स इन इंडोनेशिया

विलियम स्टटरहाइम द्वारा 1925 में लिखित *राम लेजेण्ड एण्ड राम रिलीफ्स* पुस्तक अपनी पुरातत्वीय सटीकता के कारण तथा एशियाई कला के अध्ययन के लिए भाषायी विश्लेषण के सिद्धांतों को लागू करने की नई विधि का सूत्रपात करने के कारण भी एक उच्च कोटि की कृति मानी गई है। इसमें इंडोनेशिया के प्रम्बनन मंदिर का विवेचन किया गया है।

लेखक : विलियम स्टटरहाइम
आमुख : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली-110016
1989, पृष्ठ : xxx+287+230 प्लेटें, मूल्य : 600 रुपए

16. द थाउजेंड आर्म्ड अवलोकितेश्वर

कला मर्मज्ञों एवं इतिहासज्ञों ने अवलोकितेश्वर की संकल्पना की नानाविध व्याख्या की है। यद्यपि अवलोकितेश्वर का मूल संस्कृत पाठ लुप्त हो गया फिर भी इसकी संकल्पना तथा छवि तिब्बत, चीन तथा जापान तक पहुंच गई। पुस्तक का मूल पाठ लिखित तथा मौखिक अनेक रूपों में उपलब्ध है।

प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
मूलपाठ : लोकेश चन्द्र
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली-110016
1988, पृष्ठ : viii+303 प्लेटें, मूल्य : 500 रुपए

17. सिलेक्टेड लेटर्स आफ आनंद के. कुमारस्वामी

डॉ. आनंद के. कुमारस्वामी की ग्रंथमाला के संग्रह ग्रंथ लेखक के संशोधनों तथा परिवर्तनों के साथ, विषयानुसार सुव्यवस्थित रूप में प्रकाशित किए जाएंगे। इस ग्रंथमाला में उनके द्वारा श्रीलंका, भारत, एशिया तथा यूरोप के शिल्प, कलाओं, खनिजों तथा भू-विज्ञान पर लिखी गई समग्र सामग्री सम्मिलित की गई है। *सिलेक्टेड लेटर्स आफ आनंद कुमारस्वामी* इस ग्रंथमाला का पहला पुष्प है। इस खण्ड में सम्मिलित किए गए पत्र जो पहली बार प्रकाशित हो रहे हैं, उनसे इस विलक्षण मनीषी के अनमनीय व्यक्तित्व का पता चलता है जो किसी प्रकार के सिद्धांतों, विचारधाराओं अथवा राजनीतिक या दार्शनिक मतों या वादों में विश्वास नहीं करता था। एक भू-वैज्ञानिक के रूप में अपने प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त वैज्ञानिक सूक्ष्मता के साथ अपनी संवेदनशीलता का समन्वय करते हुए डॉ. आनंद के. कुमारस्वामी ने इतिहास, दर्शन, धर्म, कला एवं शिल्प की विभिन्न विधाओं का अवगाहन किया है।

सम्पादक : एलविन मूर जूनियर और राम पी. कुमारस्वामी
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड, यूनिवर्सिटी प्रेस,
वाई.एम.सी.ए. लाइब्रेरी बिल्डिंग,
जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110001
1988, पृष्ठ : xxxiii+479, मूल्य : 250 रुपए

18. सिलेक्टेड लेटर्स आफ रोमांरोलां

ये पत्र रोमांरोलां की गम्भीर कला मर्मज्ञता और अत्यन्त हृदयस्पर्शी अन्तर्वैयक्तिक संवेदनशीलता की सुकोमलता के द्योतक हैं। ये उनकी इस प्रतिबद्धता को प्रमाणित करते हैं कि समग्र विश्व आध्यात्मिक दृष्टि से एक है, मानवता देश व काल की सीमाओं में नहीं बंधी है।

सम्पादक : फ्रॉसिस डोर एवं मैरी लॉरे प्रेयोस्ट
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड, यूनिवर्सिटी प्रेस,
वाई.एम.सी.ए. लाइब्रेरी बिल्डिंग,
जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110001
1990, पृष्ठ : xvii+139, मूल्य : 125 रुपए

19. वॉट इज सिविलाइजेशन

इस खण्ड में प्रकाशित बीस निबंधों में ऐसे आधारभूत प्रश्न पूछे गए हैं जो कुमारस्वामी की अद्वितीय शैली में मर्मवेधी होने के साथ-साथ तीक्ष्ण भी हैं। प्रथम निबंध में 'सभ्यता' शब्द के मूल, उसके अर्थ तथा संदर्भ की यूनानी तथा संस्कृत भाषाओं में गहराई तक खोज की गई है और एक साथ समग्र पाश्चात्य तथा प्राच्य सभ्यताओं का आद्योपांत विवेचन किया गया है।

सम्पादक : आनंद के. कुमारस्वामी
प्राक्कथन : सैयद हुसैन नस्र
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड, यूनिवर्सिटी प्रेस,
वाई.एम.सी.ए. लाइब्रेरी बिल्डिंग,
जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110001
1988, पृष्ठ : xi+193, मूल्य : 250 रुपए

20. इस्लामिक आर्ट एण्ड स्पिरिच्युअलिटी

यह अंग्रेजी भाषा में ऐसी पहली पुस्तक है जिसमें इस्लामिक कला, जिसमें रूपंकर कलाएं ही नहीं, साहित्य एवं संगीत भी शामिल हैं, के आध्यात्मिक महत्व का विवेचन किया गया है। इसमें इस्लाम की विभिन्न कलाओं के इतिहास का विवेचन करने या उनका विवरण देने के बजाय, विद्वान् लेखक ने इन कलाओं के रूप, विषयवस्तु, प्रतीकात्मक भाषा, अर्थ तथा उनकी उपस्थिति का इस्लामिक उद्भावना के मूल स्रोतों के साथ संबंध जोड़ा है।

लेखक : सैयद हुसैन नस्र
सह-प्रकाशक : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड, यूनिवर्सिटी प्रेस,
वाई.एम.सी.ए. लाइब्रेरी बिल्डिंग,
जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110001
1990, पृष्ठ : x+213, मूल्य : 300 रुपए

21. टाइम एण्ड ईटर्निटी

ऐस्कोना, स्विट्जरलैंड में 1947 में मुद्रित इसका प्रथम संस्करण कुमारस्वामी का अंतिम ग्रंथ था जो उनके जीवनकाल में प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक में वे यह प्रतिपादन करते हैं कि यद्यपि हम काल की सीमाओं में रहते हैं पर हमारी मुक्ति अनंतता में ही निहित है। सभी धर्म यह अंतर स्पष्ट करते हैं अर्थात् यह बताते हैं कि केवल शाश्वत या चिरस्थायी क्या है और अनादि अनन्त क्या है।

लेखक : आनंद के. कुमारस्वामी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
सिलेक्ट बुक्स, 35/3 ब्रिगेड रोड क्रॉस, बंगलौर-560001
1990, पृष्ठ : viii+107, मूल्य : 110 रुपए

22. टाइम एण्ड ईटर्नल चेंज

मिथक और पुरातत्वीय खगोल विज्ञान के अध्येता तथा खगोल-भौतिकी में पारंगत होने के नाते, जॉन मैककिम मेलविले काल एवं परिवर्तन के संबंध में अनेक रूपकों के माध्यम से पाठक का मार्गदर्शन करते हुए बताते हैं कि काल के स्वरूप के विषय में प्राचीन ऋषियों को जो अन्तर्बोध हुए थे उनमें से कितनों को आधुनिक भौतिकी तथा खगोल विज्ञान ने अपनाया है।

लेखक : जॉन मैककिम मेलविले
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा. लि., एल-10,
ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110016
1990, पृष्ठ : x+112, मूल्य : 150 रुपए

23. प्रिंसिपल्स ऑफ कॉम्पोजिशन इन हिन्दू स्कल्पचर

इस पुस्तक में हिन्दू मूर्तिकला के अब तक अछूते रहे एक पक्ष को प्रस्तुत किया गया है। इसमें पूर्व मध्यकालीन मूर्तिकला का विवेचन है और इस कला के ऐतिहासिक, सैद्धांतिक और सौंदर्यशास्त्रीय पक्षों को न छूते हुए, इससे अनन्य रूप से संरचना के प्रश्न पर ही ध्यान केन्द्रित किया गया है।

लेखक : एलिस बोनर
प्राक्कथन :कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
1990, पृष्ठ : xvii+274+ चित्र, मूल्य : 450 रुपए

24. इन सर्च ऑफ ऐस्थेटिक्स फॉर द पपेट थिएटर

पुतलि रंगमंच के एक सर्वाधिक सृजनशील समकालीन कलामर्मज्ञ द्वारा रचित यह पुस्तक पुतलिकला जगत के सौंदर्यशास्त्र से संबंधित है। लेखक ने यह दर्शाया है कि पुतलिकला में *दिक्* और *काल* का विवेचन एक ही मंच पर कैसे किया जा सकता है जैसा कि ब्रह्माण्ड आकाश और विभिन्न कालक्रमों का विवेचन किया जाता है।

लेखक : माइकेल मेरके, मार्गरेटा सोनसन के सहयोग से
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा. लि., एल.-10,
ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110016
1992, पृष्ठ : 176, मूल्य : 300 रुपए

25. एलोरा : कॉन्सेप्ट एण्ड स्टाइल

यह ग्रंथ एलोरा की विश्वविख्यात शैलकृत गुफाओं के समन्वयात्मक विवेचन का विधयात्मक प्रयास है। इसका उद्देश्य भारतीय कला के अध्ययन के लिए एक रीतिनीति निर्धारित करने और कला के सामान्य इतिहास के प्रति इसके महान् योगदान की ओर ध्यान आकर्षित करना है।

लेखक : कारमेल बर्कसन
प्राक्कथन : मुल्कराज आनंद
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई-37, हौजखास,
नई दिल्ली-110016
1992, पृष्ठ : 392 + 270 चित्र, मूल्य : 750 रुपए

26. अंडरस्टैंडिंग कुचिपुड़ी

इस शताब्दी में पुनरुज्जीवित की गई भारतीय नृत्य की विभिन्न शैलियों/विधाओं में से कुचिपुड़ी नृत्य शैली का इतिहास सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक दोनों स्तरों पर बहुत ही रोचक है। इसके अतिरिक्त, इस शैली के विकास का इतिहास अभी बन रहा है और इसका समकालीन पुनरुत्थान एवं इसकी लोकप्रियता मंचनीय कलाओं के गतिविज्ञान पर पर्याप्त प्रकाश डालती है। कुचिपुड़ी का इतिहास न केवल मंदिर तथा प्रांगण के अन्योन्याश्रय संबंध को दर्शाता है अपितु नगरीय एवं ग्रामीण, नारी एवं पुरुष तथा तमिलनाडु एवं आंध्र प्रदेश के पारस्परिक संवाद को भी प्रकट करता है।

लेखक : गुरु सी.आर. आचार्य तथा मल्लिका साराभाई
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
दर्पण एकेडमी ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स, अहमदाबाद,
1992, पृष्ठ : 212, मूल्य : 200 रुपए

27. ऐसेज इन अर्ली इंडियन आर्किटेक्चर

भारत में स्थापत्य कला के इतिहास के प्रति कुमारस्वामी का योगदान सीमित होते हुए भी गुरु गम्भीर था। विशेष रूप से आदि भारत के असाधारण काष्ठ स्थापत्य के पुनर्निर्माण के उद्देश्य से उनके द्वारा किया गया ग्रंथों एवं स्थापत्य कृतियों का विश्लेषणात्मक विवेचन अत्यंत विद्वत्तापूर्ण था और एक ऐसा भूताधार था जिसके ऊपर भारत की उत्कृष्ट स्थापत्य परम्परा के सभी परवर्ती इतिहासों का निर्माण किया गया है।

प्रधान सम्पादक : आनंद के. कुमारस्वामी
सम्पादक : मिकाइल डब्लू. माइस्तर
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए., लाइब्रेरी बिल्डिंग,
जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110001
1992, पृष्ठ : xxviii+151, मूल्य : 400 रुपए

28. रिलीजन एण्ड द एनवाइरनमेंटल क्राइसिस (एक प्रबन्ध ग्रंथ)

कुछ वर्ष पहले दिए गए एक स्मरणीय व्याख्यान में, सैयद हुसैन नस्र ने पर्यावरण के उग्र संकट के कारण का गम्भीर विवेचन किया था जिसने आज विकसित तथा विकासशील दोनों वर्गों के विश्व को अपने चंगुल में फंसा लिया है।

लेखक : सैयद हुसैन नस्र
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली-110016
1993, पृष्ठ : 32 मूल्य : शून्य

29. स्पिरिच्युअल अथॉरिटी एण्ड टेम्पोरल पावर इन दि इंडियन थ्योरी ऑफ गवर्नमेंट

कुमारस्वामी के मूलपाठ्य स्रोतों के आधार पर भारतीय शासन सिद्धांत की व्याख्या की है। समुदाय का कल्याण, आज्ञापालन तथा निष्ठा की लम्बी शृंखला पर निर्भर करता है, जैसे प्रजा की राजा तथा पुरोहित, दोनों के प्रति भक्ति एवं निष्ठा, राजा की पुरोहित के प्रति निष्ठा और राजराजेश्वर के रूप में धर्मशास्त्र के सिद्धांतों के प्रति सभी की निष्ठा।

लेखक : आनन्द के. कुमारस्वामी
सम्पादकगण : केशवराम एन. अय्यंगर तथा राम पी. कुमारस्वामी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए. लाइब्रेरी बिल्डिंग,
जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110001
1993, पृष्ठ : x +127, मूल्य : 200 रुपए

30. यक्षज : एसेज इन दि वाटर कॉस्मालजी

कुमारस्वामी ने वैदिक, ब्राह्मण तथा उपनिषद् साहित्य के संदर्भ में यक्षों की उत्पत्ति की जांच की और आर्येत्तर तथा आर्य-पूर्व संस्कृति के अधिक महत्वपूर्ण काल में यक्षों तथा यक्षिणियों की संकल्पना के विषय में स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करने के लिए सामग्री एकत्र की। कलात्मक मूल भाव को स्पष्ट करते हुए, उन्होंने जलीय ब्रह्मांड विज्ञान के अनछुए क्षेत्रों का गहराई से अवगाहन किया।

लेखक : आनन्द के. कुमारस्वामी
सम्पादक : पॉल ओडर
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए., लाइब्रेरी बिल्डिंग,
जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110001
1993, पृष्ठ : xvii+339, मूल्य : 500 रुपए

31. हजारी प्रसाद द्विवेदी के पत्र खण्ड-1

पुस्तक में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी को लिखे गए पत्रों का संग्रह है। पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के गुरु, मार्गदर्शक तथा उससे भी अधिक उनके मित्र थे। आचार्य द्विवेदी अपने सुख-दुःख की बात चतुर्वेदी जी से कहा करते थे। इस पृष्ठभूमि के साथ, ये पत्र द्विवेदी जी के व्यक्तिगत जीवन की कई घटनाओं का चित्रण करते हैं। इसके अतिरिक्त ये पत्र उनकी अभिरुचियों/अरुचियों पर प्रकाश डालते हैं और विभिन्न साहित्यिक समस्याओं के विषय में उनके विचारों से अवगत होने का अवसर देते हैं, जो सम्भवतः औपचारिक रचनाओं में नहीं मिल सकता।

ये पत्र ऐसे जीवंत प्रलेख हैं जो एक साहित्य पंडित तथा शोधकर्ता दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी हैं। ये पत्र आचार्य द्विवेदी के जीवन पर शोध कार्य करने के लिए प्रचुर सामग्री उपलब्ध कराते हैं।

सम्पादक : मुकुन्द द्विवेदी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी,
नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002
1994, पृष्ठ 205, मूल्य : 125 रुपए

32. एक्सप्लोरिंग इंडियाज सैक्रिड आर्ट

यह खण्ड स्टेला क्रैमरिश की चुनी हुई रचनाओं का संग्रह है। स्टेला भारतीय कला तथा उनके धार्मिक संदर्भ की अग्रणी व्याख्याकार थी। यह ग्रंथ स्टेला के समग्र व्यक्तित्व व कृतित्व का नहीं, बल्कि उनके भावबोध तथा सूक्ष्मदृष्टि का रस लेने का एक साधन है।

इस खण्ड में संगृहीत शोधपत्र क्रैमरिश द्वारा लगभग पचास वर्षों में लिखे गए थे जो भारतीय कला के सांस्कृतिक तथा प्रतीकात्मक मूल्यों पर बल देते हैं। प्रथम भाग में कलाओं के सामाजिक तथा धार्मिक संदर्भों की चर्चा की गई है। उसके बाद के लेख मंदिर स्थापत्य, मूर्तिकला तथा चित्रकला के औपचारिक तथा तकनीकी पक्षों का उनके प्रतीकात्मक अर्थ के संदर्भ में विवेचन करते हैं। ग्रंथ 150 से भी अधिक चित्रों से सुसज्जित है जो स्टेला की रचनाओं को महत्वपूर्ण दृश्य आयाम प्रदान करते हैं। इसमें बारबरा स्टोलर मिलर द्वारा लिखा गया एक जीवनी लेख भी है।

लेखक : स्टेला क्रैमरिश
सम्पादक : बारबरा स्टोलर मिलर
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41, यू०ए० बंगलो रोड, जवाहर नगर, नई दिल्ली-110007
1994, पृष्ठ : xii +356, मूल्य : 600 रुपए

33. विद्यापति पदावली

मैथिली भाषा के अत्यंत विख्यात कवि विद्यापति ठाकुर ने पदों की एक माला की रचना की, विषय था राधा एवं कृष्ण के नाम से परमात्मा तथा जीवात्मा की प्रणय लीला। उन्होंने ग्रामीण भारत की रोजमर्रा की साधारण गतिविधियों को आध्यात्मिक महत्व प्रदान किया। उनकी राधा एक गांव की गोरी है जो अपने परमप्रभु के प्यार को दीवानी है और उसी से प्रेमक्रीडाएं करती है। इसी प्रकार कृष्ण भी कोई ऐतिहासिक व्यक्तित्व नहीं, बल्कि परब्रह्म परमात्मा के अवतार हैं। इस प्रकार एकात्मता तथा समग्रता के सिद्धांत को बोधगम्य विधि से प्रतिपादित किया गया है।

कुमारस्वामी ने राधा कृष्ण की प्रेम लीलाओं को अत्यंत साधारण रीति से व्यक्त करने वाले इन पदों के बहु-स्तरीय प्रतीकवाद को अंग्रेजी भाषा में व्यक्त करने की आवश्यकता महसूस की और उसके फलस्वरूप इस पुस्तक का निर्माण हुआ।

अपने वर्तमान रूप में इस पुस्तक में पदावली का बंगला तथा देवनागरी लिपियों में मूलपाठ दिया गया है और साथ ही उनका अंग्रेजी अनुवाद भी प्रस्तुत किया गया है।

लेखक : विद्यापति ठाकुर
अनुवादक : आनंद के. कुमारस्वामी तथा अरुण सेन
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
क्वैरियन बुक्स, 18-19, जी.टी. रोड,
दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095
1994, पृष्ठ : 360, मूल्य : 550 रुपए

34. थर्टी सांग्स फ्रॉम पंजाब एण्ड काश्मीर

श्रीमती एलिस कुमारस्वामी ने अपने लेखिका के रूप में भारतीय नाम रतन देवी का प्रयोग करते हुए, ये गीत रिकार्ड किए थे जो आनंद कुमारस्वामी की प्रस्तावना तथा अनुवाद के साथ इस पुस्तक में छपे हैं। एलिस ने कपूरथला के उस्ताद अब्दुल रहीम से भारतीय शास्त्रीय संगीत सीखा था, और आगे चलकर उन्होंने अपने सीखे हुए गीतों में से कुछ को संगीत तथा शब्दों में लिपिबद्ध किया। उनके द्वारा स्वरबद्ध किए गए तीस गीत ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, दादरा आदि शैलियों तथा राग-रागिनियों में रचे गए हैं।

प्रस्तुत खण्ड में उपर्युक्त संकलन को भाग-एक के रूप में शामिल किया गया है और भाग-दो में इन गीतों को *सारिगम* स्वरांकन के साथ देवनागरी लिपि में, हिन्दी अनुवाद के साथ प्रस्तुत किया गया है और साथ ही राग, ताल तथा मूलपाठ पर हिन्दी तथा अंग्रेजी में टिप्पणियां दी गई हैं। कुशल संगीतज्ञा प्रो. प्रेमलता शर्मा ने बड़ी मेहनत करके भाग-दो का पाठ तैयार किया है।

सम्पादक : प्रेमलता शर्मा
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा. लि., एल-10,
ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110016
1994, पृष्ठ : xv+177, मूल्य : 500 रुपए

35. इंडियन आर्ट एण्ड कॉनिसाशिप

यह प्रकाशन ऐसे 25 निबंधों का संग्रह है जो ब्रिटिश म्यूजियम के भारतीय कला विभाग के भूतपूर्व कीपर डगलस बैरेट के भारतीय कला अध्ययन के प्रति योगदान को मान्यता प्रदान करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानों द्वारा लिखे गए हैं। ये निबंध 5 भागों में विभाजित हैं : भाग (1) प्राचीन भारत; (2) उत्तर भारतीय मूर्तिकला; भाग (3) दक्षिण भारतीय मूर्तिकला; भाग (4) भारतीय चित्रकला; भाग (5) इस्लामिक कला। सभी निबंध चित्रों से सुसज्जित किए गए हैं, जिनमें से कुछ रंगीन चित्र भी हैं। इसमें भारतीय कला विषय पर डगलस बैरेट के लेखों की सम्पूर्ण सूची भी शामिल की गई है।

योगदान करने वाले लेखक हैं : टी.के. विश्वास, विद्या देहेजिया, साइमन डिग्बी, क्लौस फिशर, बैसिल ग्रे, जॉनी गाइ, जे.सी. हार्ले, हरबर्ट हर्टल, जॉन हर्बिन, कार्ल खंडाला बाला, जे.पी. लॉस्टी, टी.एस. मैक्सवेल, आर. नागस्वामी, प्रतापादित्य पाल, आर. पिंडर विल्सन, एच.के. स्वाली, रॉबर्ट, स्केल्टन, एम. टैडी, एण्ड्रु टॉम्सफील्ड, एस.सी. वेल्च, जोअन्ना विलियम्स आदि।

सम्पादक : जॉन गाइ
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मेपिन पब्लिशिंग प्रा. लि., चिदम्बरम्,
अहमदाबाद-380013;
1995 : 22 रंगीन तथा 211 श्वेतश्याम चित्रों के साथ;
पृष्ठ : 360, मूल्य : 1200 रुपए

36. इंडियन टेम्पल आर्किटेक्चर फॉर्म एण्ड ट्रांसफॉर्मेशन

भारतीय मंदिरों के रूपों में परिवर्तन एक दोहरी प्रक्रिया के माध्यम से होता रहा है। समय और स्थान के माध्यम से होने वाले रूपान्तरण की ये दो पद्धतियां एक दूसरी में बहुत कुछ प्रतिबिम्बित होती हैं। दोनों में ही आविर्भाव, विकास तथा विस्तार की प्रक्रियाएं अन्तर्निहित हैं, जिनमें एक साथ पृथक होने तथा एक होने अर्थात् एकत्व से बहुत्व और उसी में लय होने की क्रियाएं चलती रही हैं।

भारत में मंदिर निर्माण की सबसे समृद्ध परम्पराओं में से एक वह थी जो ईसा की 7वीं शताब्दी में अस्तित्व में आई थी और उस प्रदेश में केन्द्रित रही थी जो आजकल कर्नाटक राज्य कहलाता है। यह परम्परा 13वीं शताब्दी तक विद्यमान रही थी। यह द्रविड़ यानी दक्षिण मंदिर स्थापत्य कला की दो मुख्य शाखाओं में से एक थी। इसी के अन्तर्गत विरूपाक्ष, पट्टडकल, कैलास, एलोरा और होयसलेश्वर, हलेबिड जैसे विख्यात मंदिरों का निर्माण हुआ था। इस विशाल अध्ययन ग्रंथ में इन प्रसिद्ध मंदिरों के साथ-साथ 250 से भी अधिक अन्य भवनों के स्थापत्य का विश्लेषण किया गया है और इसमें पहली बार द्रविड़ कर्नाट परम्परा को एक सतत तथा सुसंबद्ध विकास के रूप में स्पष्ट किया गया है।

इस पुस्तक का इसमें अनेक विश्लेषणात्मक रेखाचित्रों के कारण विद्वत्समाज में स्वागत होगा क्योंकि इनसे यह पता चलता है कि इन विशाल एवं महत्वपूर्ण भवनों पर किस तरह दृष्टिपात किया जाए। वास्तव में इनसे इनका जटिल स्थापत्य बोधगम्य हो गया है। इससे यह स्पष्ट पता चलता है कि एक मंदिर की रूपात्मक संरचना अव्यक्त को किस प्रकार एक ठोस रूप में अभिव्यक्त करती है और शाश्वत तथा अनंत सत्ता का पहले बहुविध रूपों में अंतरण होता है और फिर वही नाना रूपात्मक वस्तुजगत उस असीम में विलीन हो जाता है, जिससे वह अलग सत्ता में आया था।

लेखक : ऐडम हार्डी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई. 37 हौजखास, नई दिल्ली;
1995, पृष्ठ : xix+810,
ग्रंथ सूची, सूचक, हाफटॉन चित्र 158,
रेखाचित्र 217, नक्शे व चार्ट 3;
मूल्य : 2000 रुपए

37. डिक्शनरी ऑफ इंडो-पर्शियन लिटरेचर

इस साहित्य कोश में भारतीय उप-महाद्वीप के फारसी लेखकों का संक्षेप में परिचय दिया गया है। ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों पर उनका आधिपत्य था। यह तथ्य उनके द्वारा रचित ग्रंथों के विस्तार तथा विविधता से प्रमाणित होता है। उनकी कृतियां विविध प्रकार की हैं और विभिन्न विषयों से संबंध रखती हैं, जैसे सूफीवाद, कवियों तथा संतों की चुनी हुई रचनाओं के संग्रह, पैगम्बर की परम्पराओं के भाषान्तरण और न्यायशास्त्र विषयक मूल सार-संग्रह, इतिहास, डायरियां, संस्मरण, विज्ञान, चिकित्साशास्त्र, सरकारी विज्ञप्तियां आदि। भारतीय दर्शन और विज्ञान विषयक संस्कृत ग्रंथों के फारसी अनुवादों ने भी इस भारतीय इस्लामिक/फारसी साहित्य में एक नया आयाम जोड़ा। मानव जातीय दृष्टि से एक-दूसरे से भिन्न होते हुए भी इन लेखकों ने बुद्धिबल और जिज्ञासा के प्रयोग में उल्लेखनीय समानता प्रकट की। अलबेरूनी से इकबाल तक की नौ शताब्दियों में साहित्य की श्रीवृद्धि करने वाले उत्कृष्ट लेखकों की लम्बी परम्परा रही है, जिन्होंने फारसी की प्रतिष्ठा में चार चांद लगाए और अपनी सामूहिक प्रतिभा के द्वारा भारत के वैचारिक भंडार को समृद्ध किया। अनेक कारणों से गुणवत्ता बराबर बनी रही, जिनमें मुख्य थे शासक वर्ग का संरक्षण तथा खुले हाथ से आर्थिक सहायता, विद्वत्ता को मिलने वाला मान-सम्मान और उस अवधि में फारसी का दरबारी भाषा होना।

कोशकार : नबी हादी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई. 37 हौजखास,
नई दिल्ली-110016;
1995, पृष्ठ : xiv +757, मूल्य : 750 रुपए

38. दि टेम्पल ऑफ मुक्तेश्वर ऐट चौदण्डपुर

कर्नाटक का उत्तरी भाग भारत के उन समृद्ध क्षेत्रों में से एक है जहां कला की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्मारक बहुतायत से पाए जाते हैं। यहां ईसा की 10वीं, 11वीं, 12वीं तथा 13वीं शताब्दियों में अनेक राजवंशों अर्थात् कल्याण के चालुक्य, कालचूरी तथा सेउण वंश का शासन रहा है। यह काल सांस्कृतिक सुरुचि एवं उत्कर्ष का काल था। इसी अवधि में कालामुख-लाकुल शैव आंदोलनों का अधिकतम विस्तार हुआ और वीरशैव मत को चरमोत्कर्ष मिला। चौदण्डपुर (धारवाड़ जिला) में मुक्तेश्वर का मंदिर उस समय की उत्कृष्ट शैली तथा उच्च संस्कृति का सुन्दर नमूना है। यहां बड़े-बड़े सात शिला पट्टों पर मध्ययुगीन साहित्यिक कन्नड़ भाषा में सुन्दरता से उत्कीर्ण किए गए सात लम्बे शिलालेख हैं जिनसे इस मंदिर के इतिहास का पता चलता है। इनसे स्थानीय शासकों-गुट्टल नरेशों के विषय में बहुत-कुछ जानकारी मिलती है, जो स्वयं को गुप्त वंशीय बतलाते थे। इसके अलावा, मंदिर परिसर में निर्मित कुछ भवनों, देवताओं को भेंट किए गए दान तथा कुछ प्रमुख धर्मगुरुओं/महात्माओं के बारे में भी इन शिलालेखों से बड़ी रोचक जानकारी मिलती है। इसमें एक लाकुलशैव संत मुक्तजीयार और एक वीरशैव संत शिवदेव के जीवन पर भी प्रकाश डाला गया है। ये संत 19 अगस्त, 1225 को इन स्थान पर आए थे और फिर उन्होंने यहीं पर त्याग-तपस्या तथा आध्यात्मिक उत्कर्ष का लम्बा जीवन बिताया। घोर शैवमत के युग की यह धरोहर स्थापत्य तथा मूर्तिकला का उत्कृष्ट नमूना है। यह एक ही प्रस्तर खण्ड से निर्मित मंदिर है। इस निर्माण शैली को जकणाचारी शैली या कभी-कभी कल्याण-चालुक्य शैली भी कहते हैं। इसे कल्याण-चालुक्य शैली के नाम से अभिहित करना

इसलिए भी उपयुक्त नहीं है क्योंकि इसी शैली के और बहुत से मंदिर कालचूरी, सेउण वंशों के संरक्षण में भी बने हैं। प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक परिचय, सम्पूर्ण पाठ, अनुवाद तथा शिलालेखों का अर्थ, विशद सर्वेक्षण के साथ एक स्थापत्य कलात्मक विवरण तथा एक प्रतिभा वैज्ञानिक विश्लेषण भी दिया गया है।

लेखक : वसुन्धरा फिलियोजा
स्थापत्य : पिएर सिलवैन फिलियोजा
प्राक्कथन : मुनीश चन्द्र जोशी
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई-37, हौजखास,
नई दिल्ली-110016;
1995, पृष्ठ : xv +212,
परिशिष्ट, ग्रंथसूची, हाफटोन चित्र 12,
रंगीन चित्र 16, चार्ट 5;
मूल्य : 700 रुपए

39. दि ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ नेचर इन आर्ट

यह प्रकाशन इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशन कार्यक्रम के अन्तर्गत ए.के. कुमारस्वामी के संग्रह ग्रंथों की पुस्तकमाला का चौथा पुष्प है। डॉ. कपिला वात्स्यायन द्वारा सम्पादित यह संस्करण स्वयं लेखक के प्रमाणिक संशोधनों पर आधारित है।

इस खण्ड में, कुमारस्वामी ने मध्ययुगीन यूरोप तथा एशिया की कला, विशेषतः भारत की कला के पीछे जो सिद्धांत है उसकी व्याख्या करने का प्रयास किया है। कुमारस्वामी इसमें भारतीय सिद्धांत के साथ-साथ चीनी सिद्धांत को भी प्रस्तुत करते हैं। उनके मतानुसार पहला सिद्धांत यह है कि कला का अस्तित्व स्वयं अपने लिए नहीं है; यह किसी धार्मिक स्थिति अथवा अनुभूति के माध्यम के रूप में व्यक्त होती है। इस प्रसंग में मध्ययुगीन यूरोप की कला से जो तुलना की गई है वह बहुत ही ज्ञानवर्द्धक है। वे आगे यह दर्शाते हैं कि ये दोनों पुनर्जागरणोत्तर यूरोपीय कला से बिल्कुल भिन्न हैं।

यह पुस्तक कला का इतिहास जानने के इच्छुक पाठकों के लिए ही नहीं अपितु कलाकारों के लिए भी उपयोगी है।

प्राक्कथन, प्रस्तावना, सम्पादन: कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक: इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा.लि., एल. 10,
ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110016
1995, पृष्ठ : xxv+189, मूल्य : 350 रुपए

घ. कला एवं सौन्दर्यशास्त्र ग्रंथमाला

40. आर्ट एज डायलॉग

यह पुस्तक सौन्दर्यानुभूति की संकल्पना को समझने के लिए एक पूर्णतः नई विधि पर ध्यान केन्द्रित करती है। इसके विषय क्षेत्र में मनुष्य तथा कला के पारस्परिक संबंधों को पूर्व-भाषाई, भाषाई तथा परा-भाषाई अवस्थाओं पर प्रकाश डाला गया है।

लेखक : गौतम विश्वास
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक: इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एफ-52,
बालि नगर, नई दिल्ली-110015
1995, पृष्ठ : +155, मूल्य : 200 रुपए

41. इंटरकल्चरल डायलॉग एण्ड दि ह्यूमन इमेज

इस पुस्तक में प्रो. मौरिस फ्रीडमैन के भाषणों, चर्चाओं तथा विचार-विनिमयों का संग्रह है जो कई स्तरों पर हुए उन अन्तर-सांस्कृतिक संवादों के दौरान प्रस्तुत किए गए थे जो मानव कल्पना की परिधि में आते हैं। यह सब इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में, दार्शनिक मानव विज्ञान, कला-दर्शन, सामाजिक विज्ञान दर्शन, धर्म दर्शन और नैतिक दर्शन आदि विषयों पर चल रहे कार्य की सम्पूर्ण दृष्टि से मेल खाता है।

लेखक : मौरिस फ्रीडमन
प्राक्कथन: कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक: इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एच-12,
बालि नगर, नई दिल्ली-110015
1995, पृष्ठ : +299, मूल्य : 600 रुपए।

42. प्रकृति : दि इंटिग्रल विजन

इस पुस्तक में एक के बाद एक हुई परस्पर संबद्ध उन पांच संगोष्ठियों की शृंखला के निष्कर्षों पर प्रकाश डाला गया है, जिनसे अन्तर-सांस्कृतिक तथा बहु-विषयक समझबूझ को प्रोत्साहन मिला था। यह पांच खण्डों का सैट अपनी किस्म का पहला ग्रंथ है जिसमें महाभूतों (आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी आदि) की इस संकल्पना पर विचार किया गया है कि वे सभ्यता तथा संस्कृति के विकास के लिए उत्तरदायी हैं।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : वैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एफ-12,
बालि नगर, नई दिल्ली-110015
1995, पृष्ठ : xviii+190, मूल्य : 600 रुपए

43. प्राइमल एलिमेंट्स : दि ऑरल ट्रडिशन

प्रथम खण्ड उन सामंजस्यपूर्ण समुदायों के उच्चारण के संबंध में है जिनका तत्वों/महाभूतों के साथ अबाध गति से सतत संवाद चलता है। प्रकृति समुदायों के लिए बुद्धिविदग्धता का विषय नहीं है, अपितु यह यहां और इसी समय के जीवन का प्रश्न है, जो उनके आद्य मिथकों और कर्मकाण्डों में प्रकट होता है। इनके द्वारा प्रकृति की उपासना की जाती है ताकि मनुष्य विश्व के अभिन्न अंग के रूप में रह सके।

प्रधान सम्पादक: कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : सम्पत नारायण
सह-प्रकाशक: इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एफ-12,
बालि नगर, नई दिल्ली-110015
1995, पृष्ठ : xiv+153, मूल्य : 600 रुपए

44. वैदिक, बुद्धिस्ट एण्ड जैन ट्रडिशन्स

दूसरे खण्ड में वैदिक कर्मकाण्ड, उपनिषदिक दर्शन, ज्योतिष शास्त्र और बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म में महाभूतों की संकल्पना के अभूतपूर्व विवेचन पर विचार किया गया है। इसमें भारत की भिन्न-भिन्न विचार धाराओं के बीच दृष्टिकोणों की अनेक समानताओं तथा भिन्नताओं को भी उजागर किया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : वैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशक: इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एफ-12,
बालि नगर, नई दिल्ली-110015
1995, पृष्ठ : xviii+190, मूल्य : 600 रुपए

45. दि आगमिक ट्रडिशन एण्ड दि आर्ट्स

इस तीसरे खण्ड में सुव्यवस्थित रूप से यह बताया गया है कि भारतीय कलाओं तथा उनकी आगमिक पृष्ठभूमि में महाभूतों की अभिव्यक्ति किस प्रकार हुई है। यहां संरचनात्मक कलाओं को वास्तुविद, मूर्तिकार, चित्रकार, संगीतज्ञ तथा नर्तक की अलग-अलग अनुकूल स्थिति से, उनके आद्य स्तर पर समझने का फिर से प्रयास किया गया है।

प्रधान सम्पादक कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : वेदिटना बॉमर
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एच-12,
बालि नगर, नई दिल्ली-110015
1995, पृष्ठ : xiv+193, मूल्य : 600 रुपए

46. दि नेचर ऑफ मैटर

चौथे खण्ड में मात्रा सिद्धान्त और प्रारम्भिक कणों, सजीव पदार्थ का विकास, पदार्थ का स्वरूप तथा कार्य, वैज्ञानिक दर्शन तथा बौद्ध चिन्तन, पदार्थ के विषय में सांख्य सिद्धान्त, प्राचीन तथा मध्ययुगीन जीवविज्ञान, रहस्यवाद तथा आधुनिक विज्ञान, परम्परागत ब्रह्माण्ड विज्ञान, पदार्थ तथा औषधि, पदार्थ तथा चेतनता आदि पर महत्वपूर्ण चर्चा की गई है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : जयंत वी. नारलीकर
सह-प्रकाशक: इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एच-12,
बालि नगर, नई दिल्ली-110015
1995, पृष्ठ : xiv+228, मूल्य : 600 रुपए

47. मैन इन नेचर

पांचवें तथा अंतिम खण्ड में कुछ विशेष समाजों के मिथक तथा ब्रह्माण्ड विज्ञान और वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, मानव विज्ञानियों, परिस्थिति-विज्ञानियों तथा कलाकारों के अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की संस्कृति पर विचार किया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : वैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशक: इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एच-12,
बालि नगर, नई दिल्ली-110015
1995, पृष्ठ : xii+270, मूल्य : 600 रुपए

ङ. कलादर्शन

48. कॉन्सेप्ट्स एण्ड रेस्पान्सिज : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के लिए अंतर्राष्ट्रीय वास्तुशिल्पीय डिजाइन प्रतियोगिता

यह अद्वितीय स्थापत्य दायित्व अर्थात एक विशाल सांस्कृतिक संकुल जो नई दिल्ली में 10 हेक्टेयर क्षेत्र में बनाया जाएगा, इसका डिजाइन तैयार करने के आह्वान के उत्तर में देश-विदेश से प्राप्त हुए अनेकों प्रारूपों एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रारूप प्रतियोगिता में 37 देशों से 194 प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। इस पुस्तक में कोई 50 प्रस्तावों को चुनकर प्रस्तुत किया गया है, जिनमें पुरस्कार जीतने वाली वे पांच प्रविष्टियां भी हैं जो विख्यात वास्तुविद् अच्युत पी. कनविंदे द्वारा प्रस्तुत की गई थीं। यह पुस्तक सभी तरह के छात्रों एवं वास्तुविदों के लिए उपयोगी सूचना का बहुमूल्य स्रोत है।

प्रस्तावना : कपिला वात्स्यायन्
सह-प्रकाशक: इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मैपिन पब्लिकेशन प्रा. लि. चिदम्बरम,
अहमदाबाद-380013
1992, पृष्ठ : 184; मूल्य : 1200 रुपए

च. छायांकन माध्यम ग्रंथमाला

49. राबारी-ए-पेस्टॉरल कॉम्युनिटी आफ कच्छ

फ्लावोनी की यह कृति *राबारी-ए-पेस्टॉरल कॉम्युनिटी ऑफ कच्छ* मानव जाति वर्णन की सामग्री के अनावश्यक बोझ से नहीं दबी है। यह जनसामान्य में प्रचलित परम्पराओं के विषय में, जिन्हें, हम इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की भाषा में 'लोक परम्परा' कहते हैं, एक बहुमूल्य परिचायक पुस्तक का काम देती है। एक चित्रात्मक पुस्तक के रूप में यह एक उच्चकोटि की कला-कृति है और एक वर्णनात्मक सामग्री के रूप में जीवन शैली की एक अभिनव अभिव्यक्ति है जिसमें लेखक ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि के बल पर विषय की पूरी जानकारी दी है; इसे पढ़ने में आनंद आता है।

मूलपाठ एवं छायाचित्र : फ्रांसिस्को डि ओराजी फ्लावोनी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
राजवासी प्रिंटर्स प्रा. लि. ई./46/11,
ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेज-II, नई दिल्ली-110020
1990, पृष्ठ : 31+100 प्लेटें+ग्रंथ सूची, मूल्य : 575 रुपये

छ. आकाश/अंतरिक्ष की संकल्पना

50. कॉन्सेप्ट्स ऑफ स्पेस : एनशंट एण्ड मॉडर्न

इस ग्रंथ में अन्तर्विषयक अध्ययन के क्षेत्र में नई जानकारियां दी गई हैं जिससे यह उन लोगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है जो चिन्तनमनन का आंतरिक जीवन और गतिशीलता तथा सक्रियता का बाह्य जीवन जीते हैं। इस द्विविध जीवन का अन्योन्य संबंध और सम्पूर्णता का मूल विषय ही इस खण्ड में सम्मिलित किए गए बहु-विषयोन्मुख निबंधों की मूलभूत एकता का आधार है।

सम्पादक : कपिला वात्स्यायन्
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स,
ई-37, हौजखास, नई दिल्ली।
1991, पृष्ठ : xxiv + 665, प्लेटें, मूल्य : 1200 रुपए

ज. शैलकला ग्रंथमाला

51. रॉक आर्ट इन द ओल्ड वर्ल्ड

इस पुस्तक में कुछ ऐसे चुने हुए शोध पत्र प्रकाशित किए गए हैं जो 1988 में डारविन (आस्ट्रेलिया) में आयोजित विश्व-शैलकला महासम्मेलन (कांग्रेस) में प्रस्तुत किए गए थे। पहली बार, अफ्रीका, एशिया तथा यूरोप के महाद्वीपों के इतने व्यापक भौगोलिक क्षेत्रों की शैल-कला का एक ही पुस्तक में विवेचन करने का सफल प्रयास किया गया है। इस प्रकाशन में समाहित शोध पत्र इस बात के विश्वसनीय प्रमाण हैं कि शैलकला का अध्ययन केवल पुरातत्व की दृष्टि से ही नहीं अपितु मानव जाति, विज्ञान तथा जीवन शैली अध्ययन के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसका व्यापक परिदृश्य यह दर्शाता है कि वैसे तो शैलकला अनुसंधान का भी एक इतिहास है पर एक नई ज्ञान विधा के रूप में यह विकास की विभिन्न सरणियों की खोज में संलग्न है। बहुत से शोध पत्रों से भारत में हुए व्यापक शोध कार्यों का पता चलता है।

यह अद्वितीय खण्ड इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की शैल-कला अध्ययन संबंधी श्रृंखला की पहली कड़ी है। यह मानव इतिहास तथा कला में रुचि रखने वाले छात्रों तथा विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों के लिए भी उपयोगी है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : माइकेल लोरब्लांशे
वितरक : यू.बी.एस. पब्लिशर्स डिस्ट्रिब्यूटर्स, लि., नई दिल्ली
1992, पृष्ठ : xxxii + 540, मूल्य : 750 रुपये, 50 डालर (विदेश में)

52. डीअर इन रॉक आर्ट ऑफ इण्डिया एण्ड यूरोप

इस पुस्तक में भारत तथा यूरोप की शैलकला में मृग के स्थान का उल्लेख करते हुए आगे चलकर ऐतिहासिक काल में उसके चित्रण से अवगत कराया गया है।

पुस्तक के भारत संबंधी भाग में अनेक स्थलों से प्राप्त बहुमूल्य साक्ष्य को भी प्रस्तुत किया गया है। मनुष्य के जीवन में तथा उन्मुक्त प्रकृति में मृग के गम्भीर एवं संवेदनशील पक्ष का जो मार्मिक चित्रण भारतीय साहित्य परम्परा में उपलब्ध है उसकी एक झलक दिखाई गई है। यूरोप संबंधी भाग में मृग के विषय में गढ़ी गई जन्तु कथाओं, मिथकों तथा दन्तकथाओं के साथ-साथ यह भी बताया गया है कि यूरोप के किन-किन भागों में मृगों की कौन-कौन सी प्रजातियां पाई जाती हैं।

सम्पादकगण : गियाकामो कैमुरी, ऐंजलो फोसाती तथा यशोधर मठपाल
(ग्रैब्रियला गट्टी तथा गियानेट्टा मुसितेली के योगदान के साथ)
प्राक्कथन: कपिला वात्स्यायन
वितरक : स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा.लि., एल-10,
ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110016
1993, पृष्ठ : xvi+170, प्लेटें, मूल्य : 450 रुपए

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सचित्र पोस्ट कार्डों की सूची (1995 तक)

1. इंडियन पिजन्स एण्ड डव्ज, 1988, मूल्य : 10 रुपए प्रति सैट
2. हिमालय पर्वत मालाओं की दृश्यावली, 1988, मूल्य : 10 रुपए प्रति सैट
3. भीमबेटका के शैल चित्र, 1988, मूल्य : 10 रुपए प्रति सैट
4. बूनर की चित्रकारियां, 1988, मूल्य : 10 रुपए प्रति सैट
5. दि इंडियन पिजन्स एण्ड डव्ज, 1990, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
6. दि बर्ड्स ऑफ पैराडाइज, 1990, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
7. दि कैलिको पेंटिंग एण्ड प्रिंटिंग, 1990, मूल्य 25 रुपए प्रति सैट
8. भारत में प्राचीन स्थापत्य कला, 1990, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
9. दि आर्ट ऑफ दुनहुआंग ग्रोटोज, 1992, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
10. राजा लाला दीनदयाल के छाया चित्र, 1993, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
11. भीमबेटका की शैल-कला, 1993, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
12. चीन के मार्ग से भारत की सुरम्य यात्रा, 1993, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट

कैटलॉग

1. खम् : स्पेस एण्ड दि एक्ट आफ स्पेस, 1986
2. काल : ए मल्टीमीडिया प्रेजेंटेशन आन टाइम, 1990-91
3. मोगाओ ग्रोट्टोज दुनहुआंग : बुद्धिस्ट केव पेंटिंग्स फ्रॉम चाइना, 1991
4. प्रकृति : मैन इन हारमनी विद एलीमेंट्स, 1993

अनुबन्ध-9

फिल्म/वीडियो प्रलेखनों की सूची

नृत्य/अभिनय

1. भरतनाट्यम् — नृत्यनाटिका, डॉ. प्रेमलता शर्मा द्वारा निरूपित, डा. रंजना श्रीवास्तव की नृत्य प्रस्तुति के साथ; वीडियो संस्करण गोपाल सक्सेना द्वारा निर्देशित।

2. थाङ्ग-ता — मणिपुर की युगों पुरानी शौर्य नृत्य शैली पर शोध आधारित प्रलेखन; भारत के एक सुप्रसिद्ध फिल्म निर्माता अविनाश श्याम द्वारा निर्देशित।

गुरु-शिष्य परम्परा

1. त्यागेसर कुरुवानजी — तिरुवरूर के भगवान त्यागराज को समर्पित इस परम्परागत कला रूप पर प्रलेखन, साथ में पी.आर. तिलगम, जो विख्यात नृत्यांगना श्रीमती कमलम्बाल की पौत्री हैं, द्वारा संगीतात्मक प्रस्तुति।

महान् गुरुजन

1. संतोकबा — महान् लोक चित्रकार के जीवन तथा चित्रकारियों पर वीडियो वृत्त चित्र, गोपाल सक्सेना द्वारा निर्देशित।

2. मुंशी प्रेमचंद कुछ संस्मरण — उनके पुत्र अमृतराय के साथ डॉ. कपिला वात्स्यायन की भेंटवार्ता पर आधारित।

जीवन शैली/कर्मकाण्ड प्रस्तुति

1. बौद्ध महाभिषेकोत्सव — कर्मकाण्डों पर (परमपावन दलाई लामा के अनन्य वक्तव्य के साथ) प्रलेखन, आंतरिक रूप से केन्द्र में सम्पन्न।

2. डूंगरी भीलों के गीत एवं नृत्य — जाने-माने लोक साहित्यविद् भगवानदास पटेल द्वारा शोधित, निरूपित एवं निर्देशित।

अन्य

1. रीडिफाइनिंग दि आर्ट्स — इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संकल्पना, उद्देश्य, कार्यकलाप एवं भावी योजनाओं पर वृत्तचित्र, भारत के एक अग्रणी फिल्म निर्माता अरुण कौल द्वारा निर्देशित।

2.	वॉयस ऑफ टैगोर (आडियो)	गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कुछ चुनी हुई कविताओं के पाठ की रेकार्डिंग, केन्द्र में डिजिटल फार्मेट में संशोधित एवं रूपांतरित।
3.	गीतगोविन्द : एक गंभीर अध्ययन	सुप्रसिद्ध विद्वान् एवं साहित्यकार प्रो. विद्या निवास मिश्र के साथ डॉ. कपिला वात्स्यायन की भेंटवार्ता।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीयकला केन्द्र द्वारा प्राप्त फिल्में/वीडियो कार्यक्रम

1. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने जोसेफ कैम्पबेल की विश्वविख्यात फिल्म शृंखला *'पावर ऑफ मिथ'* प्राप्त की। इसमें निम्नलिखित फिल्में हैं, जिनमें प्रत्येक की अवधि 58 मिनट है :—
   - i. **दि हीरोज एडवेंचर**
   - ii. **दि मैसेज आफ दि मिथ**
   - iii. **दि फर्स्ट स्टोरी-टेलर्स**
   - iv. **मास्क्स ऑफ ईटर्निटी**
   - v. **सैक्रिफाइस एण्ड ब्लिस**
   - vi. **लव एण्ड दि गोडेस**
2. **कलरिप्पयत :** अडूर अशोक कुमार द्वारा निर्देशित।
3. **कत्तर आफ एब्सेंस :** अरुण खोपकर द्वारा निर्देशित।
4. **अर्ध ऐज विटनेस :**

   ए डायलॉग विद बुद्धिज्म : तिब्बत हाऊस, दिल्ली द्वारा निर्मित।

अनुबन्ध-10

अप्रैल, 1994 से 31 मार्च, 1995 तक हुई घटनाओं की तालिका

क्र.स.	विषय	वक्ता का नाम	दिनांक
1.	"बदलती परिस्थितियों में जनजातीय कला"	प्रो. शंखो चौधरी	1.4.1994
2.	"भारत के खगोलीय एवं समयमापी यंत्र : एक निर्माणाधीन सूची"	डॉ. एस.आर. शर्मा	8.4.1994
3.	"हड़प्पा में हाल में हुई खुदाई"	प्रो. रिचर्ड एच. मीडो	21.4.1994
4.	"सम्पूर्ण स्वास्थ्य : आंतरिक से बाह्य तक यात्रा"	डॉ. विनोद वर्मा	25.4.1994
5.	"नयनार भक्ति काव्य तथा चोल मंदिर : पाठ एवं संदर्भ"	डॉ. आर. चम्पकलक्ष्मी	28.4.1994
6.	"कला की शक्ति : शक्ति की कला : पूजा पद्धति में नागा काष्ठ प्रतिमाएं"	डॉ. ए.के. दास	5.5.1994
7.	"झांसी शैल शरण स्थल पर खुदाई"	डॉ. ए.के. शर्मा	13.5.1994
8.	"कला एवं वैयक्तिकता : एक ईरानी दृष्टिकोण"	डॉ. अमीर एच. जेक्रगू	20.5.1994
9.	"संस्कृति एवं विकास"	श्री इस्माइल सेरागेल्डिन	23.5.1994
10.	"इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का पुस्तकालय और उसमें उपलब्ध सुविधाएँ : एक व्यावसायिक दृष्टिकोण"	कु. कांता भाटिया	26.4.1994
11.	"रूसी साम्राज्य में मेले"	डॉ. अरूप बैनर्जी	3.6.1994
12.	"कश्मीर व हड़प्पा : ध्वनि साम्य"	श्री जी.आर. संतोष	13 व 14.6.1994
13.	"मुगल चित्रकारियों पर यूरोपीय प्रभाव"	प्रो. सुप्रिया कारथा	29.6.1994
14.	"जयपुर युग-युगांतर से"	डॉ. वाई सहाय	5.7.1994
15.	'एक हजार शब्दों का एक सपना"	कु. अंजलि हजारिका	11.7.1994
16.	'ऋत्विजों का अर्थ, योग्यता एवं कार्य"	डॉ. एन.डी. शर्मा	14.7.1994
17.	"उपकरण, काल, भाषा तथा विकास"	डा. डी.पी. अग्रवाल	27.7.1994
18	फिल्म शो : (i) "लाई हरौबा" (ii) "टु वाईस जॉय एण्ड फ्रीडम"	(i) अरिबाम श्याम शर्मा द्वारा निर्देशित (ii) हैमंती बैनर्जी द्वारा निर्मित	9 एवं 10.8.1994
19.	"तैल चित्रों का संरक्षण"	श्री के.के. गुप्त	12.8.1994
20.	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारक भाषण	डॉ. शिव प्रसाद सिंह	19.8.1994

21	''हिमालय की एक झलक : कैलास मानस''	श्री देव मुखर्जी	23.8.1994
22.	''भारतीयों का जीवन एवं संस्कृति''	प्रो. त्रिनस्की समरू	6.9.1994
23.	''जर्मन लोक गीतों में प्रेम की राजनीति''	डॉ. साधना नैथानी	12.9.1994
24.	''मिनिकोय, लक्षद्वीप की संस्कृति''	अली मानिकफैन	14.9.1994
25.	''दृश्य रूप में संगीत प्रस्तुतीकरण के पक्ष।''	श्री एस.वी. वाडनेरकर	16.9.1994
26.	''ताज और उसकी पारिस्थितिकी: ऐतिहासिक संदर्भ में''	प्रो. जावेद अशरफ	20.9.1994
27.	''कागज का अनुरक्षण''	सुश्री रितु जैन	28..9.1994
28.	''वैदिक परम्परा की पृष्ठभूमि में बौद्धधर्म'' एक वार्ता	पंडित सातकड़ि मुखोपाध्याय	19.10.1994
29.	''लद्दाख : युगों की चट्टान''	श्री शरत कुमार	21.10.1994
30.	''वियतनाम के छम मंदिर''	श्री जे.सी. शर्मा	27.10.1994
31.	''ध्वनि : भारतीय दर्शन के भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के मतानुसार''	डॉ. सम्पत नारायण	8.11.1994
32.	'टुन हुआंग : एक चर्चा''	प्रो. तान चुंग और डा. एम. एन. देशपांडे	15.11.1994
33.	''एशिया की नूतन भूतत्व युगीन कला''	डा. रोबर्ट बेदनारिक	17.11.1994
34.	''भारतीय साहित्य की विचारधारा''	प्रो. इन्द्रनाथ	21.11.1994
35.	'ध्वनि : वैदिक मंत्रोच्चारण''	पंडित सातकड़ि मुखोपाध्याय	23.11.1994
36.	'अद्भुत वृक्ष नीम : वैज्ञानिक अध्ययन तथा चिकित्सकीय प्रयोग''	डॉ. जी.पी. तलवार	25.11.1994
37.	''देवी धारण : राजस्थान की एक भाट जाति में धार्मिक अनुभूति तथा आर्थिक व्यवहार''	डॉ. जेफ स्लोडग्रास	2.12.1994
38.	''बदलता हुआ आकाशीय बोध तथा दर्शन की परम्पराएं'' धनबाद का प्रकरण	प्रो. आर. नंदकुमार	6.12.1994
39.	''कल्याणसुन्दरमूर्ति : भगवान शिव का पवित्र विवाह''	प्रो. मरियानी यालडिज	12.12.1994
40.	''हमारी संस्कृति में चौथे''	प्रो. एच.वाई. मनोहरन्	14.12.1994

41.	''ध्वनि : चिंतन एवं विश्वास में, कश्मीर के विशेष संदर्भ में''	डॉ. अद्वैतवादिनी कौल	22.12.1994
42.	'गरुड़ थाई कला में''	डॉ. नीरू मिश्र	13.1.1995
43.	''स्थापत्य मानव विज्ञान''	डॉ. नॉहद एजेंटर	20.1.1995
44.	फिल्म प्रदर्शन ''पेंटिड पैलडस आफ इंडिया''	देवेन भट्टाचार्य द्वारा निर्मित	24.1.1995
45.	''गतिशील समय एक प्रत्यक्ष वास्तविकता— एक प्रमाणन (एँपल) कम्प्यूटर पर''	डॉ. गुरुशरण सिद्धू	25.1.1995
46.	''श्री अरविन्द तथा वेद''	डॉ. किरीत जोशी	30.1.1995
47.	फिल्म प्रदर्शन : 'सेराइकेला छाऊ''	श्री अरविन्द सिन्हा द्वारा निर्देशित	13.2.1995
48.	''भारत और चीन-परस्पर दृष्टि''	प्रो. तान चुंग	15.2.1995
49.	''नारी निर्देशन में''	कु. कीर्ति जैन	21.2.1995
50.	''भारतीय उपमहाद्वीप में सूफी काव्य''	प्रो. अन्नमेरी शीमेल	23.2.1995
51.	''लवन आंदोलन : एक विश्लेषण और भरतनाट्यम् में इसका अनुप्रयोग''	डा. पारुल शाह	24.2.1995
52.	'ब्रह्मवाद्य : रागों तथा तालों के संबंध में''	श्री बाबूलाल वर्मा	10.3.1995
53.	''सर्जनशीलता और मेरा धर्म'	श्री रघु राय	14.3.1995
54.	''तीर्थ यात्रा-एक परिचर्चा''	प्रो. वी.एन. सरस्वती एवं डॉ. रमाकर पंत	22.3.1995
55.	''भारतीय शास्त्रीय नृत्य के रोगोपचारिक मूल्य''	श्रीमती कनक सुधाकर	24.3.1995
56.	''संगीत में शास्त्र एवं प्रयोग, कैरीबियन क्षेत्र में''	डा. सुमति मुटाटकर	30.3.1995